

कैनेडी के ओजस्वी विचार

अमरीका के अमर राष्ट्रपति
जॉन फिट्जरेल्ड कैनेडी के व्यक्तित्व और
विचार-दर्शन का प्रेरणात्मक संकलन

इंडियन बुक कंपनी, कश्मीरी गेट, दिल्ली

क्रम

ग्रामुख 5 डीन रस्क

परराष्ट्र सचिव

एक श्रद्धांजलि 108 लिण्डन ब्री० जॉनसन

राष्ट्रपति,

संयुक्त राज्य अमरीका

अनुवादक : दीवान

© 1965 इंडियन बुक कंपनी

मुद्रक : मेहता आफसेट वर्क्स, दिल्ली

मूल्य 2.50 रुपये

तीसरा संस्करण 1967

राष्ट्रपति होने से पहले	6	‘बिगुल बज उठा....’
1. राष्ट्रपति का संदेश	14	‘खतरे और अवसर’
2. शांति : तात्कालिक आवश्यकता	22	‘हमारी समस्याएं मानवकृत हैं’
3. निरस्त्रीकरण	30	‘जीवन-मरण का एक व्यावहारिक प्रश्न’
4. शांतिपूर्ण क्रांति	40	‘हम पीठ नहीं फेर सकते’
शांतिसेनाएं	44	‘औरों के प्रयासों में सहायता’
प्रगति के लिए मैत्री	48	‘बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति’
5. पारस्परिक निर्भरता	52	‘अपने आसपास के विश्व के स्वरूप में परिवर्तन’
6. संकट का समय	60	‘स्वाधीनता अविभाज्य है’ कांगो-बर्लिन-लाओस-क्यूबा
7. मानव-अधिकार	70	‘कार्रवाई करने का समय आ गया है’
8. अंतरिक्ष	76	‘आओ, ग्रहों की खोज करें’
9. दबाव बनाम स्वतंत्र निर्णय	82	‘एक अनवरत संघर्ष सामने है’ नव उपनिवेशवाद शांति के लिए खतरा साम्यवादी जगत् में आन्तरिक विग्रह स्टालिनवादी चीन का खतरा अमरीकी महाद्वीपों को खतरा साम्यवाद की विफलताएं सतर्कता : एक सतत आवश्यकता
10. राष्ट्रपति एक मानव के रूप में	90	‘स्वतंत्रता के दायित्वों का भार उठाने के लिए तैयार हैं’
उपसंहार	102	बिगुल बज रहा है



डीन रस्क

परराष्ट्र सचिव

जॉ

न फिट्जरेल्ड कैनेडी कल के आस-विश्वासों की ओर उत्सुकतापूर्वक निहारा करते थे। उन्हें ऐसे कल की प्रतीक्षा थी जिसमें एक स्थायी शांति, अंतरिक्ष की अनन्तता पर मानव की विजय और एक ऐसा महान आयोजन संभव होगा, जिसके अधीन विश्व के अधिक समृद्ध देश, नवोदित एवं विकास-पथ पर अग्रसर राष्ट्रों के सहायतार्थ मिलकर काम करेंगे तथा सर्वत्र सभी मनुष्यों को समान अधिकार प्राप्त होंगे। फिर भी, कल की बीती घटनाओं में उनके समान शायद ही कोई विभोर होता हो। उन्हें अतीत के पृष्ठ टटोलने में प्रसन्नता होती थी। इस प्रकार उनके भाषणों तथा लेखों में उनका इतिहास का तत्त्वदर्शी ज्ञान तथा भविष्य के प्रति उनकी दूर-दृष्टि और साथ ही वर्तमान के प्रति उनकी चिन्ता की झांकी प्रति-बिम्बित होती थी।

‘कैनेडी के ओजस्वी विचार’, एक सामान्य नागरिक, सेनेटर तथा राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने जो कुछ लिखा-बोला है, उसका महत्त्वपूर्ण संकलन है। आवश्यक संदर्भ-सामग्री के साथ प्रस्तुत यह पुस्तक उनको अपित एक श्रद्धांजलि है, क्योंकि जॉन फिट्जरेल्ड कैनेडी विचार-प्रकाशन में अपने युग के सर्वाधिक निपुण नेताओं में से थे। इससे संयुक्त राज्य अमरीका के पैंतीसवें राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित मूलभूत अमरीकी नीतियों को समझने में ही पाठकों को

सहायता नहीं मिलेगी, वरन् संकट की घड़ियों में उनके महान साहस, मानव के अधिकारों के प्रति उनकी अटूट आस्था, उनकी सुदृढ़ नीतिमत्ता, उनके विचारों की श्रेष्ठता तथा उनकी प्रत्युत्पन्नमति की एक झांकी भी मिलेगी।

इससे प्रकट होगा कि वे सामान्य बातों की अपेक्षा निश्चित बातों को, शानशौकत के स्थान पर सादगी को तथा बड़-चढ़कर बातें बनाने के स्थान पर कम बोलना पसन्द करते थे। उनके सहज, बिना तैयारी के व्यक्त विचारों में भी असाधारण रूप से मृदुता, हास्य तथा स्पष्टता की जगमगाहट रहती थी। इतिहास तथा कलाओं का उनका गहन ज्ञान तथा श्रोताओं के प्रति उनकी असामान्य सहानुभूति प्रस्तुत पुस्तक के अनेक पृष्ठों को सुशोभित करती है।

राष्ट्रपति-सम्बन्धी कागज़-पत्रों के 1961 के संस्करण की भूमिका में जैसाकि जान कैनेडी ने कहा : “मुझे आशा है कि... इस पुस्तक से उन समस्याओं की व्यापक विशालता विदित होगी जो बीसवीं सदी के सातवें दशक के आरम्भिक वर्ष (वर्षों) में अमरीकी सरकार तथा अमरीकी जनता के सामने उपस्थित है।... और मुझे विश्वास है कि इससे उस तरीके के प्रति संकेत मिलेगा जिससे हमारी जनता... हमारे समान खतरों तथा अवसरों की एक नई तथा सहज अनुभूति प्राप्त करने लगी है।”

‘बिगुल बज उठा....’

वे मंच पर खड़े थे मुस्कराते हुए, ग्रीष्मकालीन सन्ध्या की गरमी की परवाह न करके, तालियों की गड़गड़ाहट शांत होने पर बोलने की प्रतीक्षा करते हुए। उनके नीचे अमरीकी राजचिह्न गृद्धराज के फैले पंख चमचमा रहे थे और धुआंधार चुनाव-आंदोलन के दिन आनेवाले थे। लेकिन गतवर्ष उन्होंने जबरदस्त संघर्ष करके लॉस एंजेलस कौलीजियम के खुले मैदान में एकत्र डेमोक्रेटिक पार्टी के डेलीगेटों ने अपने पहले मतदान में उनको राष्ट्रपति के चुनाव में पार्टी का ध्वजवाहक चुन लिया था और उन्हें इस बात का पहले की अपेक्षा और अधिक विश्वास हो गया कि वे राष्ट्र का बहुमत भी अपने पक्ष में प्राप्त कर सकेंगे। 15 जुलाई, 1960 का दिन था और जॉन फिट्ज-रेल्ड कैनेडी ठीक तेतालीस वर्ष के हुए थे। आखिरकार तालियों की गड़गड़ाहट कम हुई और उन्होंने राष्ट्रपति पद के लिए नामजदगी स्वीकार करते हुए अपना भाषण आरम्भ किया।

क

र्तव्य के प्रति गहरी भावना तथा उच्च संकल्प के साथ मैं आपके द्वारा किए गए अपने मनोनयन को स्वीकार करता हूँ। मैं इसे सम्पूर्ण तथा कृतज्ञताभरे हृदय से, बिना किसी हिचक के तथा एकमात्र इस कर्तव्य से अभिभूत होकर स्वीकार करता हूँ कि मैं तन, मन तथा आत्मा का प्रत्येक प्रयास अपनी पार्टी को पुनः विजयी बनाने तथा अपने राष्ट्र को पुनः महानता के शिखर पर आरुढ़ करने के लिए समर्पित कर दूंगा।

मैं आपका इस बात के लिए भी कृतज्ञ हूँ कि आपने मुझे हमारे दल का इतना प्राणवान नीति-वक्तव्य (चुनाव-घोषणापत्र) प्रदान किया है। उसमें इतनी स्पष्टता से जो प्रतिज्ञाएं की गई हैं, वे पूर्ण किए जाने के लिए हैं। ‘मानव के अधिकार’ सभी मनुष्यों के मान-

वीय सम्मान के लिए आवश्यक नागरिक एवं आर्थिक अधिकार प्रदान करना वास्तव में हमारे लक्ष्य एवं हमारे अग्रगण्य सिद्धान्त हैं। यह ऐसा चुनाव-घोषणापत्र है जिसके आधार पर मैं उत्साह तथा विश्वास के साथ चुनाव लड़ सकूंगा।

और अन्त में, मैं इस बात के लिए भी कृतज्ञ हूँ कि मुझे ऐसे साथी मिले हैं जिनपर मैं आगामी महीनों में निर्भर रह सकता हूँ : उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार लिंडन जॉनसन जैसे विख्यात व्यक्ति जो हमारे टिकट को एकता तथा हमारे घोषणापत्र को शक्ति प्रदान करते हैं, विचार-प्रकाशन में हमारे युग के सर्वाधिक निपुण राजनीतिज्ञों में से एक एडलाई स्टीवेन्सन, राष्ट्र तथा जाति के रूप में हमारी आवश्यकताओं के एक महान प्रवक्ता स्टुअर्ट सिमिंगटन और वह संघर्षशील आंदोलनकर्ता राष्ट्रपति हैरी एस० ट्रूमैन, जिनके समर्थन का मैं स्वागत करता हूँ।

...आज स्थिति बड़ी नाजुक है, चुनौती बहुत ही गम्भीर है तथा दांव इतना बड़ा है कि पहले की तरह राजनीतिक बहसों के द्वारा भावनाओं में नहीं बहा जा सकता। हम यहां अंधकार की भत्सना करने नहीं, वरन् ऐसी ज्योति जगाने के लिए आए हैं जो हमें अंधकार के बीच में सुरक्षित तथा सुखद भविष्य की ओर ले जा सके। जैसाकि अब से लगभग बीस वर्ष पहले पद-ग्रहण करते समय विस्टर चर्चिल ने कहा था : “अगर हम वर्तमान तथा अतीत के बीच झगड़ा करें तो हमारे लिए भविष्य को नष्ट कर देने का खतरा उपस्थित हो जाएगा।”

आज हमें उसी भविष्य की चिन्ता करनी चाहिए, क्योंकि विश्व में परिवर्तन हो रहे हैं, पुराना युग समाप्त हो रहा है और आज पुराने तरीकों से काम चलनेवाला नहीं है।

विदेशों में शक्ति-संतुलन बदल रहा है। आज नये-नये तथा अधिक भयंकर शास्त्रास्त्र बन गए हैं, नये-नये तथा अनिश्चित नीति वाले राष्ट्रों का उदय हो रहा है, जनसंख्या तथा अभावों के नये दबाव पड़ रहे हैं। कहा जा सकता है कि एक-तिहाई विश्व स्वतंत्र है, लेकिन अन्य एक-तिहाई विश्व में क्रूर दमन का तांडव हो रहा है तथा शेष एक-तिहाई विश्व निर्धनता, भूख और ईर्ष्या का शिकार

राष्ट्रपति होने से पहले

है। इन नये राष्ट्रों में चेतना आने से परमाणु के विखंडन से भी कहीं अधिक शक्ति उत्पन्न होती है।

विश्व पहले भी युद्ध के कगार पर खड़ा हो चुका है, लेकिन अपने अस्तित्व के लिए उपस्थित पहले के समस्त खतरों का सामना करके बच रहनेवाले मानव ने अपने नश्वर हाथों में इतनी शक्ति एकत्रित कर ली है कि वह समस्त प्राणीजगत् को करीब सात बार नष्ट करने में सक्षम है।

स्वयं हमारे देश में भविष्य का परिवर्तनपरक स्वरूप भी उतना ही क्रांतिकारी है। 'न्यू डील' (रूजवेल्ट कार्यक्रम), तथा 'फेयर डील' (ट्रूमैन कार्यक्रम) उनकी अपनी पीढ़ी के लिए साहसपूर्ण कदम थे, लेकिन आज की पीढ़ी नई पीढ़ी है।

अब समय आ गया है कि... नेतृत्व की एक नई पीढ़ी सामने आए, नये आदमी नई समस्याओं को सुलझाने तथा नये अवसरों का उपयोग करने के लिए आगे बढ़ें।

समग्र विश्व में खासकर नवोदित राष्ट्रों में युवा व्यक्तियों के हाथों में सत्ता आ रही है। ये व्यक्ति ऐसे हैं जो अतीत की परंपराओं से बंधे नहीं हैं, पुरानी आशंकाओं, घृणाओं तथा प्रतिद्वंद्विता से अंधे नहीं हैं। ये युवक नेता पुराने नारों, भ्रांतियों एवं शंकाओं का जुआ उतार फेंक सकते हैं... आज मैं पश्चिम की ओर मुंह किए जिस जगह खड़ा होकर आपके सामने बोल रहा हूँ, वह कभी अंतिम सीमा थी। मेरी पीठ के पीछे की ओर 3000 मील¹ दूर फैली भूमि में रहनेवाले पुराने समय के नेताओं ने अपनी सुरक्षा एवं अपना सुख त्यागकर और कभी-कभी अपने प्राणों की बाजी लगाकर यहां पश्चिम में एक नई दुनिया का निर्माण किया था। वे लोग अपने संदेहों के दास और अपनी मान्यताओं और रुढ़ियों के बन्दी नहीं थे। उनका आदर्श 'प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए' का नहीं, वरन् 'समान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सभी के प्रयत्न करने' का था। वे नये विश्व को शक्तिशाली व स्वतंत्र बनाने, बाधाओं एवं कठिनाइयों को पार करने तथा भीतरी एवं बाहरी खतरा उपस्थित करनेवाले शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए कृतसंकल्प थे।

कुछ लोग यह कहते हैं कि आज के सब संघर्ष समाप्त हो चुके हैं, सभी क्षितिजों की खोज हो चुकी है, सभी संघर्ष जीते जा चुके हैं और अब अमरीकी सीमा जैसी चीज नहीं रह गई है।

लेकिन मेरा विश्वास है कि इस विशाल जनसभा में कोई भी उन विचारों से सहमत न होगा, क्योंकि सभी समस्याएं हल नहीं हुईं और सभी मोर्चे जीते नहीं जा सके हैं, और हम आज एक नई सीमा—बीसवीं सदी के सातवें दशक की सीमा—के किनारे पर खड़े हैं। यह सीमान्त है अज्ञात अवसरों तथा खतरों, अपूर्ण आशाओं तथा धमकियों से परिपूर्ण क्षेत्र।

वुडरो विल्सन की 'नव स्वतंत्रता' ने हमारे राष्ट्र को एक राज-

नीतिक एवं आर्थिक तंत्र प्रदान करने की आशा बंधाई थी। फ्रैंकलिन रूजवेल्ट के 'न्यू डील' ने सुरक्षा तथा जरूरतमंदों को सहायता का आश्वासन दिया था। लेकिन मैं जिस 'नव सीमान्त' की बात कर रहा हूँ वह आश्वासनों का नहीं, चुनौतियों का समुच्चयन है। इसका सारांश यह नहीं कि मैं अमरीकी लोगों को क्या देने की सोच रहा हूँ, वरन् यह है कि मैं उनसे क्या अपेक्षाएं करता हूँ। यह उनके स्वाभिमान को छूनेवाला है, उनकी पाकेटबुकों को नहीं, इसमें अधिक सुरक्षा की अपेक्षा अधिक त्याग-बलिदान का आह्वान है।

किन्तु मैं आपको बता दू कि नया क्षेत्र तो उपस्थित है ही, भले हों हम चाहें या न चाहें। उस सीमा से आगे विज्ञान एवं अन्तरिक्ष के अच्छे क्षेत्र हैं, युद्ध और शान्ति की अनसुलझी समस्याएं हैं, अज्ञान तथा पूर्वाग्रहों के अविजित क्षेत्र हैं और गरीबी तथा आधिक्य के अनुत्तरित प्रश्न हैं। उस सीमान्त से पीछे हट आना, अतीत की खतरों-रहित मध्यम स्थिति की ओर देखना और अच्छे इरादों तथा उच्च आदर्शों के भुलावे में अपने को रखना अपेक्षाकृत सुगम है और जो लोग इस मार्ग को पसन्द करते हैं, वे मुझे अपना वोट न दें, चाहे वे किसी भी पार्टी के क्यों न हों।

लेकिन मेरा विश्वास है कि अब आविष्कारों, नूतन मार्गों की खोज, दूर दृष्टि तथा निर्णयों का समय आ गया है। मैं आपमें से हर एक से कहूंगा कि आप उस नये क्षेत्र के अगुवा बनें। मेरा आह्वान उन लोगों के लिए है जो हृदय से अभी जवान हैं, भले ही उनकी उम्र कितनी ही हो, जिनकी भावना अदम्य है, चाहे वे किसी पार्टी के हों तथा उन लोगों के लिए है जो बाइबल के इस आह्वान के अनुसार आचरण करने को तैयार हैं : "शक्तिशाली बनो और खूब साहस रखो, भयभीत न हो और न ही निराश होओ।"

क्योंकि आज संतोष की नहीं साहस की, विक्रयकर्ता की नहीं सच्चे नेतृत्व की आवश्यकता है। और उस नेतृत्व की एक ही खरी कसौटी है कि वह मार्गदर्शन कर सके, शक्तिशाली ढंग से रास्ता दिखा सके। डेविड लायड जार्ज का कहना था कि एक थका हुआ राष्ट्र अनुदार राष्ट्र बन जाता है और संयुक्त राज्य अमरीका आज न तो थका हुआ राष्ट्र बन सकता है और न अनुदार।

ए

से कुछ लोग हो सकते हैं कि जो मुझसे इस या उस वर्ग के लिए अधिकाधिक वायदे सुनना चाहते होंगे, फ्रेमलिन में शासन कर रहे लोगों की भर्त्सना पसन्द करेंगे, स्वर्णिम भविष्य के बारे में अधिक आश्वासन चाहते होंगे, जिसमें कर सदैव कम हों तथा राजकीय सहायता अधिकतम। लेकिन मेरे वायदे इस मंच—चुनाव-घोषणापत्र—में दिए गए हैं जो आपने स्वीकार किया है। हमारे उद्देश्यों की पूर्ति मात्र भर्त्सनाओं से नहीं हो सकती और हम भविष्य

में तभी आस्था रख सकते हैं जब हमें स्वयं अपने पर आस्था हो ।

समूची स्थिति के कटु सत्य तो ये हैं कि हम इस सीमान्त पर ऐसे समय में खड़े हैं जो इतिहास का एक मोड़ है । हमें एक बार फिर यह सिद्ध करना है कि क्या यह राष्ट्र अथवा इसी तरह बना कोई राष्ट्र अधिक दिन तक टिक सकता है, क्या हमारा समाज—जिसमें किसी प्रकार का निर्णय करने की व्यक्ति को स्वतंत्रता है, अवसरों की व्यापकता तथा विकल्पों की विविधता है—साम्यवादी प्रणाली की एकजूट होकर की गई प्रगति से टक्कर ले सकता है या नहीं ।

क्या हमारे राष्ट्र जैसा संघटित तथा शासित राष्ट्र भी टिक सकता है ? यही वास्तविक प्रश्न है । क्या हमारे अन्दर वह क्षमता तथा इच्छाशक्ति है ? क्या हम इस युग में आगे निकल सकेंगे, जिसमें हम न केवल विनाशक शस्त्रास्त्रों के नये-नये आविष्कार देखेंगे, वरन् जिसमें आकाश एवं उसकी वर्षा, महासागर तथा उसके ज्वारों तथा अन्तरिक्ष के गहन अज्ञात वक्ष तथा मनुष्यों के दिमागों के आंतरिक कक्षों पर भी प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ लगी होगी ?

ह

म क्या यह करने की सामर्थ्य रखते हैं ? क्या हम चुनौतियों का सामना कर सकेंगे ? क्या हम भविष्य के लिए रूसियों द्वारा वर्तमान में किए गए त्यागों की बराबरी करने को तैयार हैं ? अथवा क्या हमें वर्तमान को भोगने के लिए भविष्य का बलिदान कर देना चाहिए ?

नव सीमान्त का यह बुनियादी प्रश्न है । यही चुनाव हमारे राष्ट्र को करना है । आज चुनाव दो व्यक्तियों या दो दलों के बीच नहीं करना है, वरन् सार्वजनिक हित तथा व्यक्तिगत आराम, राष्ट्रीय महानता तथा राष्ट्रीय पतन, प्रगति की ताज़ी बयार तथा 'सब कुछ सामान्य' के वासी तथा दमघोटू वातावरण और संकल्प-मना होकर आगे बढ़ने एवं औसत ढंग से घिसटते चलने के बीच करना है ।

समस्त मानवता हमारे इस निर्णय की प्रतीक्षा में है । समूचा विश्व निर्निमेष यह देख रहा है कि हम क्या करेंगे । हम उनके उस विश्वास को आघात नहीं पहुंचा सकते, हम नये प्रयत्न करने में पीछे नहीं रह सकते ।”

विजयश्री ने नवम्बर में उनका वरण किया । अब ग्यारह दिनों के अन्दर जॉन एफ० कैनेडी संयुक्त राज्य अमरीका के 35वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे । इस महान पद को सुशोभित करनेवाले आप सबसे कम आयु वाले तथा

कैथोलिक धर्मावलम्बी प्रथम व्यक्ति थे । आप बोस्टन आए-हुए थे मैसाचूसेट्स विधानमण्डल तथा अपने राज्य की जनता के बीच उद्बोधक भाषण देने । 9 जनवरी, 1961 का दिन था और वे यह सोचे बिना न रह सके कि इतिहास व्हाइट हाउस में उस उच्च तथा एकमात्र पद से किए उनके प्रयासों को किस दृष्टि से देखेगा ।

इ

स ऐतिहासिक विधानमण्डल और आप लोगों के माध्यम से मैसाचूसेट्स की उस जनता को संबोधित कर कुछ कहने के इस अवसर का मैंने स्वागत किया है जिसकी आजीवन मैत्री एवं विश्वास के प्रति मैं चिरकृणी हूं । चौदह वर्षों से मैंने इस राज्य के मतदाताओं पर भरोसा रखा है और उन्होंने भी मेरे प्रति विश्वास प्रकट कर उस भरोसे का उदारतापूर्वक प्रतिदान दिया है ।

अब...मैं नये तथा अधिक व्यापक उत्तरदायित्व उठाने जा रहा हूं । लेकिन यहां मैं मैसाचूसेट्स की जनता से विदाई लेने नहीं आया हूं । मेरे जीवन के तैंतालीस वर्षों से, चाहे मैं लंदन, वाशिंगटन, दक्षिणी प्रशान्त सागरीय प्रदेश या अन्यत्र कहीं भी रहा होऊं, यह मेरा घर रहा है और ईश्वर ने चाहा तो, मैं कहीं भी आपकी सेवा करूं, यह सदैव मेरा घर रहेगा ।

यहीं मेरे पितामहों ने जन्म लिया था और मुझे आशा है, यहीं मेरे पौत्रादि भी जनमेंगे । इस राज्य से मैं अपने साथ, उस उच्च तथा एकमात्र पद तक, जिसपर मैं अब आरुढ़ हूंगा, प्रिय स्मृतियों तथा गहरी मित्रताएं लेकर जा रहा हूं । मैसाचूसेट्स की स्थायी विशिष्टताएं—तीर्थयात्रियों तथा प्योरिटनों, मछिमारों तथा किसानों और मूल अमरीकनों एवं विदेशों से यहां आकर बसे लोगों द्वारा बुने संयुक्त ताने-बाने—राष्ट्र के उच्चतम प्रशासकीय प्रासाद में भी कभी न भूलेंगे, भूले भी न जा सकेंगे । वे मेरे जीवन, मेरे विश्वासों, मेरे अतीत के विचारों तथा भविष्य की आशाओं का अविच्छिन्न अंग बन चुके हैं ।

अपना कथन स्पष्ट करने की अनुमति दें : विगत साठ दिनों से मैं प्रशासकीय ढांचे का गठन करने के काम में लगा हुआ हूं । यह काफी लम्बी तथा सावधानी से विचारपूर्वक कदम उठाने की प्रक्रिया है । कुछ लोगों ने अधिक तेज़ी के साथ बढ़ने का परामर्श दिया । अन्य कुछ लोगों ने अन्य तरह की परीक्षाएं प्रस्तुत कीं । लेकिन मैंने जॉन विन्थाप (मैसाचूसेट्स के प्रथम गवर्नर) के उस दिशा-बोधक मार्गदर्शन से प्रेरणा ली जो उन्होंने 331 वर्ष पहले ध्वजपोत 'अरवेल्ला' पर अपने साथियों को दिया था, क्योंकि उनके समक्ष भी एक नई तथा खतरोंभरी सीमा पर एक सरकार बनाने का काम आ उपस्थित हुआ था । “हमें हमेशा ध्यान रखना चाहिए,” उन्होंने कहा था : “कि हम पहाड़ पर बने नगर के समान होंगे—

सभी लोगों की आंखें हमारे ऊपर होंगी।”

आज, विश्वभर की जनता की आंखें हमपर सचमुच लगी हैं और सभी शाखाओं तथा राष्ट्रीय, राज्यीय तथा स्थानीय सभी स्तरों की सरकारों को पहाड़ की चोटी पर बसे नगर की भांति होता है जिनका निर्माण ऐसे व्यक्तियों से हुआ है जो अपने गुरु-गंभीर विश्वास तथा महान उत्तरदायित्वों के प्रति भली भांति सजग हों। क्योंकि 1961 में हम एक ऐसी यात्रा पर निकल रहे हैं जो ‘अरवेत्ला’ पोत द्वारा 1630 में की गई यात्रा से कम कठिनाइयों वाली नहीं है। हम आज ऐसे राज्यपोत को खेने के काम को हाथ में ले रहे हैं जो मैसाच्यूसेट्स के कालोनी के उस समय के शासन से कम भयावह नहीं है, जहां बाहर से आक्रमण की तथा आंतरिक उपद्रव होने की आशंका बराबर रहती थी।

इतिहास हमारे प्रयासों का निर्णय नहीं करेगा और कोई भी सरकार रंग या धर्म या दलीय मान्यताओं के आधार पर नहीं चुनी जा सकती और न आज जैसे युग में, योग्यता, निष्ठाभक्ति या बड़प्पन—यद्यपि ये अत्यधिक जरूरी होते हैं—से ही काम चल सकेगा।

जि

न्हें अधिक दिया जाता है, उनसे उतनी अधिक अपेक्षाएं होती हैं। और जब कभी भविष्य में इतिहास का उच्च न्यायालय हममें से प्रत्येक के कार्यकलापों का निर्णय करने बैठेगा—अपने अल्प सेवाकाल में हमने अपने दायित्व पूरे किए या नहीं—इसकी सफलता या विफलता का अंकन निम्न चार प्रश्नों के आधार पर करेगा :

प्रथम, क्या वास्तव में हम साहसी व्यक्ति थे—क्या हममें ऐसा साहस था जो शत्रु के सामने खम ठोककर खड़े हो सकें, क्या हममें इतना साहस था कि आवश्यक होने पर अपने साथियों के मुकाबले भी खड़े हो सकें, क्या हममें सार्वजनिक दबाव तथा निजी लालचों का प्रतिरोध करने का साहस था ?

द्वितीय, क्या वास्तव में हम ठीक निर्णय कर सकनेवाले व्यक्ति थे, क्या हम भविष्य एवं अतीत के प्रति निर्णायक बुद्धि प्रयोग करने की क्षमता वाले थे, क्या हम अपनी तथा दूसरों की त्रुटियों का निश्चय कर लेते थे, क्या हममें इतनी बुद्धि थी कि हम यह जान सकें कि हमें क्या नहीं आता और क्या उसे स्वीकार करने की हिम्मत थी ?

तृतीय, क्या हम वास्तव में ईमानदार व्यक्ति थे—ऐसे व्यक्ति जो अपने सिद्धांतों से पीछे न हटे अथवा जिनका हमपर विश्वास है, उन्हें धोखा न दें, क्या हम ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें वित्तीय लाभ या राजनीतिक आकांक्षाएं कभी अपना पावन विश्वास पूरा करने के पथ से विरत नहीं कर सकतीं ?

अंतिम, क्या हम वास्तव में लगनवाले कर्तव्यपरायण व्यक्ति थे—ऐसे व्यक्ति जिसका सम्मान किसी एक व्यक्ति अथवा एक समूह के हाथ में न हो अथवा जो किसी वैयक्तिक कृतज्ञता अथवा लक्ष्य की पूर्ति के लिए सम्मान के साथ समझौता न करे वरन् जो सार्वजनिक भलाई तथा राष्ट्रीय हितों की खातिर ही निष्ठापूर्वक काम करे ?

साहस, निर्णायक बुद्धि, ईमानदारी तथा लगनशील कर्तव्य-परायणता इस ‘बे कालोनी’ तथा ‘बे स्टेट’ के ऐतिहासिक गुण रहे हैं। इन्हीं गुणों को यह राज्य बराबर ‘बीकन हिल’ तथा ‘वाशिंगटन’ में कैपीटोल हिल तक भेजता रहा है। और इन्हीं गुणों को मैसाच्यू-सेट्स का पुत्र प्रभु की कृपा से आगामी घटनापूर्ण चार वर्षों में राजकाज के संचालन में अपनाने की आशा करता है। विनयपूर्वक मैं इस संकल्प में उस प्रभु की सहायता की याचना करता हूं; लेकिन मुझे विदित है, प्रभु का प्रसाद भी मनुष्य के माध्यम से इस पृथ्वी पर प्राप्त होता है, इसलिए इस नई तथा पवित्र यात्रा पर खाना होने से पूर्व मैं आपकी सहायता तथा आपकी प्रार्थनाओं की याचना करता हूं।

शुक्रवार, 20 जनवरी, 1961 को दोपहर के 12 बजकर 51 मिनट पर श्री कॅनेडी ने वाशिंगटन में हाल ही में गिरी ताजी आठ इंच वर्फ तथा हजारों शुभेच्छुओं के बीच संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति पद की शपथ ली। इसके बाद स्मरणीय उद्घाटन भाषण में आपने राष्ट्रपति के रूप में प्रथम शब्द बोले। कड़ाके की सर्दियों में मुंह से निकली सांस भाप बनती जा रही थी। कैपीटोल की सीढ़ियों से पूर्व की ओर उस मैदान की ओर मुंह किए आप खड़े थे जहां 1817 से उद्घाटन समारोह होते रहे हैं। जहां वे खड़े थे वहां से तीस फुट (नी मीटर) की दूरी पर खड़े होकर सी साल पहले अब्राहम लिंकन ने संकटापन्न राष्ट्र से कहा था : “अन्ततः लोक-न्याय के प्रति धैर्यपूर्ण विश्वास क्यों नहीं है ? क्या इससे अच्छी या इसके समान कोई आशा हो सकती है ?” अब श्री कॅनेडी ने न केवल अमरीकी जनसमुदाय वरन् व्यापक विश्वराष्ट्रों की अंतिम लोक-न्याय-भावना के प्रति दृढ़ आस्था की उद्घोषणा की।

आ

ज हम किसी पार्टी की विजय नहीं मना रहे वरन् स्वाधीनता का उत्सव मना रहे हैं जो एक अन्त तथा एक नये श्रीगणेश का प्रतीक है जिससे एक नवीकरण तथा साथ ही एक परिवर्तन का बोध होता है। क्योंकि मैंने आपके तथा सर्वशक्तिमान परमात्मा के सामने वही शपथ ली है जो हमारे पूर्वजों ने अब से पौने दो शताब्दी पहले निर्धारित की थी।

अब संसार पहले से बहुत बदल गया है। आज मनुष्य के नश्वर हाथों में सभी प्रकार का मानव-दारिद्र्य तथा सभी प्रकार के मानव-जीवन का अन्त कर सकने की क्षमता आ गई है। फिर भी वह क्रान्तिकारी विश्वास जिसके लिए हमारे पूर्वज संघर्षरत रहे, आज भी विश्व-रंगमंच पर संघर्ष के कारण बना हुआ है। और वह विश्वास था कि मानव-अधिकार राज्य की उदारता से नहीं, वरन् परमात्मा के उदार करों द्वारा प्रदत्त है।

हम यह भूलने की हिम्मत नहीं कर सकते कि हम उस प्रथम क्रान्ति के उत्तराधिकारी हैं। आज इस समय तथा इस स्थान से हमारे शत्रु एवं मित्र भली प्रकार सुन-समझ लें कि क्रान्ति की वह मशाल अब अमरीकनों की नई पीढ़ी के हाथ में आ गई है जो इस सदी में जनमी है, युद्धकाल में पली है, कठोर एवं कटु शान्ति के अनुशासन में रही है, जिसे अपनी प्राचीन विरासत का अभिमान है और जो उन मानव-अधिकारों को धीरे-धीरे छिनते नहीं देख सकती और न छिनने देगी जिनके लिए यह राष्ट्र सदैव प्रतिश्रुत है तथा जिसके लिए हम आज भी स्वदेश एवं समस्त विश्व में प्रतिश्रुत हैं।

प्रत्येक राष्ट्र आज भली भांति समझ ले, चाहे वह हमारा शुभाकांक्षी हो या अशुभाकांक्षी कि हम स्वतन्त्रता को जीवित रखने तथा उसे सफल बनाने के लिए कोई भी कीमत देने, कोई भी भार उठाने, कोई भी मुश्किल सहने तथा किसी भी मित्र को सहायता देने तथा हर एक शत्रु का विरोध करने को तैयार हैं।

इतनी हम प्रतिज्ञा करते हैं—यही नहीं, और भी।

उन प्राचीन मित्रराष्ट्रों के प्रति जिनके सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उद्गम हमारे जैसे ही हैं, हम विश्वासभाजन मित्र की निष्ठा की प्रतिज्ञा करते हैं। सम्मिलित रूप से चलें तो अनेक सहकारी प्रयासों में हमारा योग तुच्छ होगा। अगर विभक्त रहे तो भी हमारा काम तुच्छ ही होगा, क्योंकि कठिनाइयों-भरे एवं विभक्त होकर भी हम शक्तिशाली चुनौती का सामना करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

जिन नये राष्ट्रों का हम स्वतन्त्र देशों की श्रेणी में स्वागत करते हैं, उन्हें हम वचन देते हैं कि एक प्रकार के औपनिवेशिक नियंत्रण को समाप्त होने देकर उससे भी अधिक लौह-यंत्रणा में उन्हें नहीं फँसने देंगे। हम उनसे यह आशा नहीं करते कि वे सदैव हमारे दृष्टिकोण का समर्थन करेंगे, लेकिन हम यह सदैव आशा करते हैं कि वे अपनी

स्वाधीनता का दृढ़ता से समर्थन करेंगे और यह याद रखेंगे कि अतीत में जिन लोगों ने मूर्खतापूर्वक शेर की पीठ पर चढ़कर शासन किया, वे भीतर से ही समाप्त हो गए।

आधे विश्व की, भोंपड़ों तथा गांवों में रहनेवाली जनता को जो व्यापक दैन्यों के बन्धनों को तोड़ने के लिए संघर्षरत है, जितने दिनों तक आवश्यकता होगी उतने दिन सहायता देने का हम वचन देते हैं ताकि वे अपनी सहायता आप कर सकें। ऐसा हम इसलिए नहीं करेंगे, क्योंकि यदि हम न करेंगे तो कम्युनिस्ट करेंगे, इसलिए भी नहीं कि हमें उनके वोटों की आवश्यकता है, वरन् ऐसा करना सही रास्ता है। अगर एक स्वतन्त्र समाज उन अनेक गरीबों की सहायता नहीं कर सकता तो वह कुछेक अमीरों को भी नहीं बचा सकता।

हमारी सीमा से दक्षिण में जो गणराज्य हैं, उनके प्रति हम विशेष रूप से प्रतिश्रुत होते हैं कि प्रगति के लिए नई मैत्री के अपने अच्छे शब्दों को अच्छे कार्यों में परिणत करेंगे ताकि स्वतंत्र जनता तथा स्वतंत्र सरकारों को निर्धनता की जंजीरों काट फेंकने में सहायक हो सकें। लेकिन आशाओं की इस शांतिपूर्ण क्रान्ति को विरोधी शक्तियों का शिकार नहीं होने दे सकते। हमारे पड़ोसी राष्ट्र यह भली प्रकार समझ लें कि हम उत्तरी या दक्षिणी अमरीका में कहीं भी हुए आक्रमण या आंतरिक उखाड़-पछाड़ का विरोध करने में उनके कंधे से कंधा मिलाए साथ देंगे। और संसार की प्रत्येक अन्य शक्ति को यह तथ्य भली भांति विदित हो जाना चाहिए कि इस गोलार्द्ध के लोग अपने घर के स्वयं मालिक रहना चाहते हैं।

सार्वभौम राष्ट्रों की उस विश्वसभा के प्रति, जिसे संयुक्त राष्ट्रसंघ कहते हैं और जो शांति के उपादानों की अपेक्षा युद्ध के उपादानों की अधिकता के युग में, जो हमारी सर्वोत्तम एवं अंतिम आशा का केन्द्र है, हम अपने समर्थन की प्रतिज्ञा दुहराते हैं कि हम उसे विघटक भाषणों का मंच न बनने देंगे, उसकी नये तथा दुर्बल राष्ट्रों की ढाल को शक्तिशाली बनाएंगे तथा उस क्षेत्र का विस्तार करेंगे जिसमें उसकी आशाओं का पालन होता है।

अन्त में, उन राष्ट्रों से जो स्वयं को हमारा शत्रु बनाएंगे, हम कोई प्रतिज्ञा नहीं करते वरन् निवेदन करते हैं कि विज्ञान ने संहार की जो भयावह शक्तियाँ हमें प्रदान की हैं, वे मानवता के सुनियोजित या आकस्मिक आत्मविनाश का क्षण ले आएँ, उससे पहले ही दोनों पक्ष नये सिरे से शांति की खोज में लग जाएँ।

हम अपनी निर्वलता से उन्हें आक्रमण के लिए ललचने नहीं दे सकते, क्योंकि जब हमारे शस्त्रास्त्र निस्सन्देह पर्याप्त होंगे तभी हमें निस्सन्देह इतना पक्का निश्चय हो सकेगा कि उन शस्त्रास्त्रों का कभी उपयोग न करना पड़ेगा।

लेकिन दो महान एवं शक्तिशाली राष्ट्रसमूह, हम दोनों के वर्तमान रास्ते से चैन की सांस नहीं ले सकते—दोनों ही पक्ष आधुनिक शस्त्र-निर्माण के भारी खर्च से दबे जा रहे हैं, दोनों ही घातक

राष्ट्रपति होने से पहले

परमाणु अस्त्रों की निरन्तर वृद्धि से ठीक ही चिन्तित हैं, लेकिन फिर भी दोनों ही उस आतंक का अनिश्चित संतुलन बदलने के प्रयास में दौड़ लगा रहे हैं, जिसका मानवता के सिर पर अन्तिम युद्ध का कराल पंजा फैला हुआ है।

अतः हमें नये सिरे से शुरूआत करनी चाहिए और दोनों पक्षों को यह स्मरण रखना चाहिए कि सभ्य नागरिकता की भावना कमजोरी की निशानी नहीं है और सद्भावना को सदैव प्रमाण मिलने पर ही स्वीकार किया जाता है। हमें भयभीत होकर कभी वार्ता शुरू नहीं करनी है, लेकिन वार्ता शुरू करने से भयभीत भी नहीं होना है।

दोनों पक्षों को ऐसी समस्याओं की खोज करनी चाहिए जो हमें मिलती हों, न कि उन समस्याओं की जो हमारे बीच विभेदक दीवार खड़ी करती हों।

आइए, हम दोनों पक्ष मिलकर पहली बार शस्त्रास्त्रों के नियंत्रण एवं निरीक्षण के लिए सच्चे मन से सुनिश्चित प्रस्ताव तैयार करें और अन्य राष्ट्रों को ध्वंस करने की अमर्यादित शक्ति को सभी राष्ट्रों के पूर्ण नियंत्रण के अधीन ले आएं।

हम दोनों पक्ष मिलकर विज्ञान की भयानकता के स्थान पर उसके अद्भुत चमत्कारों को जगाएं। हम मिलकर सितारों की खोज करें, रेगिस्तानों पर विजय प्राप्त करें, रोगों का समूल नाश करें, सागरों की गहराई टटोलें तथा कलाओं एवं वाणिज्य को प्रोत्साहन दें।

दोनों पक्ष मिलकर पृथ्वी के चारों कोनों में 'इसाइयाह' का आदेश मानकर "गहन भारों को हलका करें" (और) दलितों को मुक्त करें।"

यदि सहयोग का यह सेतु शंकाओं-अविश्वासों के जंगल को पीछे धकेलने में सफल हो सके, तो दोनों पक्षों को एक नया प्रयास शुरू करने के लिए मिल जाना चाहिए जिससे नया शक्ति-संतुलन नहीं, वरन् कानून को मान्यता देनेवाला एक नया विश्व बन सके जिसमें शक्तिशाली न्यायमार्ग का अवलम्बन करता हो, निर्वल सुरक्षित हो और शान्ति बनाई रखी जा सके।

यह सारा काम प्रथम सी दिनों में पूरा नहीं होगा। न यह प्रथम हजार दिनों में खत्म होगा, न इस प्रशासन के जीवनकाल में और न शायद इस ग्रह पर हमारे जीवनकाल में। लेकिन तब भी हमें शुरूआत तो करनी है।

मेरे साथी नागरिको, मेरी अपेक्षा आपके हाथों में ही हमारे इस रास्ते की अन्तिम सफलता या विफलता निर्भर करेगी। जब से यह देश बना है, तभी से अमरीकियों की हर पीढ़ी को अपनी राष्ट्रीय निष्ठा का प्रमाण देना पड़ा है। इस आह्वान की खातिर प्राण होम देनेवाले युवा अमरीकियों की समाधियां भूमण्डल में फैली हुई हैं।

अ

व बिगुल फिर बजा है—हमारा आह्वान हुआ है, लेकिन शस्त्र उठाने के लिए नहीं, हालांकि शस्त्रास्त्रों की हमें आवश्यकता है, समरभूमि में जाने के लिए नहीं, हालांकि हम समरांगण में हैं, वरन् यह आह्वान है एक दीर्घ संधिकालीन संघर्ष के लिए जिसमें वर्ष-प्रतिवर्ष आशाओं का आनन्द लेते हुए तथा अभिनन्दन के लिए धैर्यवान होना है, यह संघर्ष है मानव के समान शत्रुओं—आत-तायीपन, निर्धनता, रोग तथा स्वयं युद्ध के विरुद्ध।

क्या हम इन शत्रुओं के विरुद्ध एक महान तथा विश्वव्यापी उत्तर एवं दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम का गठबन्धन कर सकते हैं जिससे समस्त मानवता के लिए एक सुफलपूर्ण जीवन जीना सम्भव हो सके? क्या आप इस ऐतिहासिक प्रयास में साथ देंगे?

विश्व के सुदीर्घ इतिहास में कुछ पीढ़ियों के कंधों पर ही मानवता के अधिकतम संकट की घड़ी में स्वतन्त्रता की रक्षा करने का भार आया है। मैं इस उत्तरदायित्व से मुंह नहीं मोड़ूंगा, वरन् इसका स्वागत करूंगा। मैं नहीं समझता कि हममें से कोई अपना स्थान किसी अन्य देश की जनता अथवा किसी अन्य पीढ़ी से बदलना न चाहेगा। इस प्रयास में जिस शक्ति, निष्ठा तथा लगन से हम जुटे हैं, उससे हमारे देश तथा उससे लगे सभी लोगों को प्रकाश मिलेगा और उस आग की चमक से संसार में सच्चा प्रकाश फैलेगा।

अतः मेरे अमरीकी बन्धुओ, मुझसे यह मत पूछो कि आपका देश आपके लिए क्या करेगा, वरन् यह पूछो कि आप अपने देश के लिए क्या कर सकोगे।

विश्व के मेरे बन्धु नागरिको, यह मत पूछिए कि अमरीका आपके लिए क्या करेगा, वरन् हम मिलकर मानव की स्वतन्त्रता के लिए क्या कर सकेंगे।

और अन्त में, चाहे आप अमरीका के नागरिक हों, चाहे विश्व के, हमसे यहां शक्ति तथा त्याग के उन्हीं उच्च मानदण्डों की अपेक्षा कीजिए जिनकी अपेक्षा हम आपसे करते हैं। नेकनीयती और सच्चाई ही एकमात्र निश्चित प्रतिफल है, और इतिहास ही हमारे कार्यों का अन्तिम निर्णायक है, यह मानकर हम उस भूमि का नेतृत्व करने के लिए आगे बढ़ें, जो हमें प्रिय है। इस काम में हम उस प्रभु का आशीर्वाद तथा उसीकी सहायता चाहें, लेकिन हम यह समझें कि यहां पृथ्वी पर प्रभु का काम ही सच्चे अर्थों में हमारा अपना काम हो।

'सब लोग यह जान लें कि अब मशाल अमरीकियों की नई पीढ़ी के हाथ में दे दी गई है।'



‘खतरे

और

अवसर’



जॉन कॅनेडी ने उस समय पदभार संभाला जब चारों ओर संकट के बादल मंडरा रहे थे। एशिया में चीनी कम्युनिस्टों के दबाव से भारत, लाओस तथा दक्षिण वियतनाम के सामने खतरा उपस्थित था, अफ्रीका में कांगो के अन्दर चल रहा गृहयुद्ध उस नवस्वतंत्र देश की सीमाएं पार करके संघर्ष के विस्तार की संभावनाएं उपस्थित किए था, यूरोप में, सोवियत रूस बर्लिन नगर के स्वतंत्र भाग को पीड़ित कर रहा था और संयुक्त राज्य अमरीका के एकदम समीप क्यूबा में एक कम्युनिस्ट अड्डा स्थापित हो गया था। राष्ट्रपति को भली भांति विदित था कि आगे क्या अग्नि-परीक्षाएं आनेवाली हैं, किन्तु इसके साथ ही उन्हें यह भी पता था कि मानवता के लिए क्या अवसर उपलब्ध हैं। 30 जनवरी, 1961 को कांग्रेस के समक्ष पढ़े गए राष्ट्रपति के सन्देश में उन्होंने अपने विचारों को स्पष्टता के साथ सामने रखा।

प्र

सन्नता की बात है कि मैं जहां का था, वहीं फिर वापस आ गया हूं। वाशिंगटन में आप लोग मेरे सबसे पुराने मित्र हैं और यह सदन मेरा प्राचीनतम घर। चौदह वर्षों से भी अधिक पहले, मैंने यहीं पर संघीय पद की शपथ ली थी। यहीं पर मैंने गत चौदह वर्षों से दोनों सदनों के दोनों दलों के सदस्यों, आपके बुद्धिमान तथा उदार नेताओं तथा उन घोषणाओं से ज्ञान तथा प्रेरणा प्राप्त की है जो उस स्थान पर, जहां आप आज बैठे हैं, मैंने सुनी थीं। इनमें दो महान राष्ट्रपतियों के कार्यक्रम, चर्चिल का ओजस्वी वक्तव्य, नेहरू का उच्च आदर्शवाद तथा जनरल डी गाल की स्पष्टवादिता के स्वर सम्मिलित हैं। उसी ऐतिहासिक मंच से भाषण करना गुस्तापूर्ण अनुभव है। इतने मित्रों के बीच वापस आना सुखद है।

मुझे विश्वास है कि यह मित्रता बदस्तूर रहेगी। हमारे संविधान में सरकार की प्रत्येक शाखा—राष्ट्रपति तथा कांग्रेस को संयुक्त तथा पृथक्-पृथक् काम देकर ठीक ही किया गया है। इससे सभी एक-दूसरे का आदर करेंगे तथा एक-दूसरे के अधिकार-क्षेत्र का न तो उल्लंघन करेंगे, न अपने क्षेत्र का उल्लंघन करने देंगे। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं कांग्रेस या जनता से विगत, वर्तमान या भावी किसी ऐसी बात या रिपोर्ट को गुप्त न रखूंगा जो हमारे आचरण तथा बाधाओं के बारे में सुविचारित निर्णय करने के लिए आवश्यक हो। मैं कार्यपालिका द्वारा किए जानेवाले निर्णयों का भार कांग्रेस पर न डालूंगा और न उन निर्णयों के परिणामों के दायित्वों से वचूंगा।

आज मैं ऐसी घड़ी में भाषण कर रहा हूं जब राष्ट्रीय खतरे और राष्ट्रीय अवसर, दोनों समान रूप से उपस्थित हैं। मेरा कार्य-काल समाप्त होने से पहले ही हमें इस बात की जांच करनी होगी कि क्या हमारे जैसा संगठित एवं शासित देश आज की दुनिया में टिक सकता है? इसका परिणाम भी कुछ सुनिश्चित नहीं है। हम सबको—प्रशासन को, कांग्रेस को तथा राष्ट्र को मिलकर ये उत्तर देने हैं।

लेकिन आज अगर मैं पदभार ग्रहण करके एक सप्ताह से कुछ ही अधिक समय के बाद, सभी राष्ट्रीय खामियों को दूर करनेवाला विस्तृत कानून पेश करूं तो इस कांग्रेस का यह सोचना ठीक ही होगा कि उत्तरदायित्व के कर्तव्य का स्थान जल्दबाजी ने ले लिया है।

इसलिए इस समय मेरी टिप्पणियां एक सीमा के अन्दर ही होंगी, लेकिन स्पष्टता लिए हुए होंगी। तथ्यों को स्पष्टता के साथ प्रस्तुत करना तो भविष्य को निराशापूर्ण बनाना है और न अतीत को दोष देना है। समझदार उत्तराधिकारी अपनी विरासत का सावधानी से लेखा-जोखा करता है और उन लोगों के समक्ष ईमानदारी से उसे प्रस्तुत करता है जिन्हें उसपर विश्वास होता है। और यद्यपि इस अवसर पर आशीर्वादों तथा श्रेयों का बखान ज़रूरी नहीं है, फिर भी मैं कहूंगा कि निर्वाचित अधिकारियों के माध्यम से प्राप्त स्वतंत्र एवं कृतसंकल्प जनता की सहमति से बड़ी संपत्ति कोई नहीं होती जो स्पष्टता के साथ सभी समस्याओं का सामना करने तथा घबराहट या भय से मुक्त हुए सभी खतरों को उठाने को तैयार है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी पार्टी का हो और चाहे वाशिंगटन में उसने किसी भी रूप में पहले कितनी ही सेवा की हो, इस पद पर आसीन होकर, दस दिन के अल्प कार्यकाल में ही, यह जानने पर लड़खड़ाए बिना नहीं रह सकता कि आगामी चार वर्षों में उसे जिन परीक्षाओं में से गुज़रना है, वे कितनी अधिक एवं कितनी कठोर हैं। प्रतिदिन संकटों की संख्या बढ़ती जाती है। दिन-प्रतिदिन उन समस्याओं का समाधान कठिनतर होता जाता है। प्रतिदिन जैसे-जैसे शस्त्रास्त्रों की संख्या बढ़ती है और विरोधी शक्तियां अधिक शक्तिशाली होती जाती हैं, हम अधिकतम संकट की घड़ी के समीप होते जाते हैं। मैं अनुभव करता हूं कि मुझे कांग्रेस को सूचित कर देना चाहिए कि गत दस दिनों में हमने जो विश्लेषण किया है, उससे स्पष्ट हो गया है कि प्रत्येक प्रमुख संकट-क्षेत्र में घटनाओं का ज्वार मर्यादा की सीमाएं तोड़े दे रहा है और समय भी हमारा साथ नहीं दे रहा है।

एशिया में कम्युनिस्ट चीन का अनवरत दबाव भारत और दक्षिण वियतनाम की सीमाओं से लेकर लाओस के जंगलों तक, जहां अपनी नव अर्जित स्वाधीनता की रक्षा के लिए संघर्ष चल रहा है, समूचे क्षेत्र की सुरक्षा के लिए खतरा बना हुआ है। लाओस में हम वही प्राप्त करना चाहते हैं, जो समूचे एशिया—समूचे विश्व में प्राप्त करना चाहते हैं अर्थात् जनता के लिए स्वतंत्रता और सरकार

के लिए आजादी। और यह राष्ट्र इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनवरत प्रयासशील रहेगा।

अफ्रीका कांगो-गृहयुद्ध, राजनीतिक अशांति तथा सार्वजनिक गड़बड़ी से बुरी तरह विखरा पड़ा है। वहां शांति एवं व्यवस्था पुनः स्थापित करने के संयुक्त राष्ट्रसंघ ने जो शानदार प्रयास किए हैं, उनका समर्थन करना हम जारी रखेंगे। हालांकि लगातार बढ़ते तनावों, अनसुलझी समस्याओं तथा अनेक सदस्य-राष्ट्रों का समर्थन घट जाने से संयुक्त राष्ट्रसंघ के ये प्रयास खतरे में पड़ गए हैं।

दक्षिणी अमरीका में कम्युनिस्ट एजेंटों ने उस क्षेत्र में आशाओं की शांतिमय क्रांति का लाभ उठाकर हमारे तट से सिर्फ 90 मील (145 किलोमीटर) की दूरी पर स्थित क्यूबा में अपना अड्डा स्थापित कर लिया है। सुखी जीवन प्राप्त करने के लिए क्यूबा के लोगों द्वारा छेड़े गए आंदोलन से हमारा मतभेद नहीं है। हमारी आपत्ति तो विदेशी तथा स्वदेशी आततायियों द्वारा उनको अपने पैरों तले रौंदने पर है। क्यूबा के सामाजिक तथा आर्थिक सुधारों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आर्थिक तथा व्यापारिक नीतियों सम्बन्धी प्रश्नों पर सदैव बातचीत की जा सकती है, लेकिन इस गोलार्द्ध में कम्युनिस्टों के शासन के बारे में कोई वाचीत नहीं की जा सकती।

हम इस बात के लिए कटिबद्ध हैं कि अपने बंधु गणतंत्रों से मिलकर कार्रवाई करके अमरीकी महाद्वीपों को इस प्रकार की सभी विदेशी दासता तथा समस्त जुल्मों से मुक्त रखेंगे और होप अन्तरीप से लेकर ध्रुवीय क्षेत्रों तक फैले गोलार्द्ध को स्वतंत्र बनाने एवं इस क्षेत्र में स्वतंत्र सरकारों की स्थापना करने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

यूरोप में हमारी मैत्री-संधियों की आकांक्षाएं परिपूर्ण नहीं हुई हैं और उनमें जहां-तहां खटास है। उत्तरी अटलांटिक संधि-संगठन की एकता आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता से कमजोर हुई है तथा राष्ट्रीय हितों के कारण उसमें छीजन आई है। अभी तक 'नाटो' ने न तो अपने समस्त साधनों का उपयोग शुरू किया है और न समान दृष्टि-कोण विकसित किया है। फिर भी कोई अटलांटिक राष्ट्र-रक्षा, विदेशी सहायता, मुद्राकोषों तथा बहुत-से अन्य क्षेत्रों में उपस्थित आपसी समस्याओं का अकेले ही सामना करने की स्थिति में नहीं है और जिनकी आशाओं एवं हितों के हम समान भागीदार हैं, उन देशों के साथ हमारे घनिष्ठ सम्बन्ध इस राष्ट्र की सर्वाधिक शक्ति-शाली पूंजी है।

इ

सके बाद भी हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती वह संसार है जो शीतयुद्ध के परे स्थित है, लेकिन उससे पहली बड़ी बाधा है सोवियत रूस तथा कम्युनिस्ट चीन के साथ हमारे सम्बन्ध। हमें

कभी यह सोचकर ढीले नहीं पड़ जाना चाहिए कि इनमें से कोई भी राष्ट्र संसार पर अपनी प्रभुता जमाने की आकांक्षाएं त्याग चुका है। उन्होंने कुछ समय पहले ही अपनी आकांक्षाओं का शक्तिशाली भाषा में पुनराख्यान किया था। इसके विपरीत हमारा काम उनको यह बात मनवा देना है कि उनके इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आक्रमण तथा आंतरिक तोड़-फोड़ कोई सही रास्ते नहीं हैं। प्रतिष्ठा अर्जित करने, व्यापार बढ़ाने, वैज्ञानिक सफलताएं प्राप्त करने, यहां तक कि मानव-मस्तिष्क को अपनी ओर झुकाने के लिए खुली एवं शांतिपूर्ण प्रतियोगिता करना दूसरी बात है, क्योंकि शांतिमय विश्व में यदि स्वतंत्र देश तथा साम्यवादी देश मानवता की निष्ठा अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए प्रतियोगिता में कूदते हैं तो मैं भविष्य को अधिक विश्वासपूर्ण दृष्टि से देखूंगा।

इन चुनौतियों का सामना करने तथा विश्व-रंगमंच पर वह भूमिका अदा करने के लिए, जिससे हम बच नहीं सकते, हमें अपने शस्त्रागार के सभी—सैनिक, आर्थिक एवं राजनीतिक—शस्त्रास्त्रों का नये सिरे से निरीक्षण एवं हेर-फेर करना होगा।

एक को दूसरे पर नहीं छा जाना चाहिए। राष्ट्रपति के राजपट पर राजकीय चिह्न अमरीकी गृह अपने दाहिने पंजे में शांति की प्रतीक 'ओलिव' टहनी को पकड़े है और बायें पंजे में तीरों को। हम दोनों के प्रति बराबर ध्यान देना चाहते हैं।

भवसे पहले हमें अपने सैनिक शस्त्रास्त्रों को शक्तिशाली बनाना है। हम अनिश्चित खतरे तथा महान दायित्वों वाले युग की तरफ बढ़ रहे हैं जिसमें सैनिक एवं कूटनीतिक संभावनाएं ऐसी हैं कि जिसमें स्वतंत्र विश्व की शक्ति इतनी बलशाली होनी चाहिए कि वह किसी भी आक्रमण को स्पष्टतः व्यर्थ सिद्ध कर सके।

दूसरे, हमें अपने आर्थिक उपकरणों में सुधार करना होगा। समस्त गैर-कम्युनिस्ट जगत् के लिए सुस्थिर एवं विस्तारशील अर्थतंत्र के निर्माण के लिए हमारी भूमिका आवश्यक तथा अपरिहार्य है। हमें अन्य राष्ट्रों को इतना शक्तिशाली बनने में सहायता देनी होगी—जिससे वे अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान कर सकें, अपने आस-विश्वासों की स्वयं पूर्ति कर सकें तथा अपने खतरों का स्वयं सामना कर सकें। इस लक्ष्य की पूर्ति के मार्ग में आनेवाली समस्याएं बहुत बड़ी तथा अभूतपूर्व हैं। इसलिए इनका प्रत्युत्तर भी इतना ही बड़ा तथा इतना ही अभूतपूर्व होना चाहिए जैसे पिछले वर्षों में उधार-पट्टा अथवा मार्शल योजना थी जिसके इतने अच्छे सुपरिणाम देखने में आए थे।

अन्य देशों तथा अन्य महाद्वीपों के आर्थिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक विकास में सहायता देने के उद्देश्य से मैं एक नया तथा अधिक प्रभावपूर्ण कार्यक्रम शुरू करने के लिए कांग्रेस से अधिकार मांगने की सोच रहा हूँ। यह कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो हमारे मित्रराष्ट्रों के अंशदान को बढ़ावा दे तथा उनके अंशदान का

कारगर रूप से उपयोग करे। साथ ही वह हमारे अपने उन कार्यक्रमों का निर्देशन करे जो अक्सर एक-दूसरे का ख्याल रखे बिना चलते हैं, जो कभी-कभी परस्पर विरोधी हो जाते हैं तो कभी हमारी शक्तियों एवं साधनों का अपव्यय करते हैं।'''

मुझे आशा है कि सेनेट उस संधि को स्वीकार करने के लिए शीघ्र कदम उठाएगी जिसके अधीन आर्थिक सहयोग एवं विकास संस्था बनाई जानी है। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण उपकरण होगा जिसके द्वारा हम विकास के प्रयास में मित्रों का हाथ बंटा सकते हैं और उस दिन को लाने के लिए कार्य कर सकते हैं जब प्रत्येक राष्ट्र अपनी क्षमता के अनुसार अपना योग देगा; क्योंकि हम इतने भारी बोझ में अपना हिस्सा उठाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन हमसे यह सारा बोझ अकेले उठाने की न तो आशा की जा सकती है और न की ही जानी चाहिए।

दक्षिण के अपने बंधु गणतंत्रों को हमने प्रगति के लिए एक नई मैत्री—एलियान्झा पारा एल प्रोग्रेसो—का वचन दिया है। इससे हमारा उद्देश्य दक्षिण अमरीका को स्वतंत्र एवं समृद्ध बनाना है जिसमें सभी राज्यों तथा वहाँ की समस्त जनता के लिए आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति का एक ऐसा स्तर स्थापित हो सके, जो संस्कृति, ज्ञान तथा स्वतंत्रता के क्षेत्र में उनके ऐतिहासिक योगदान के अनुरूप हो। पड़ोसियों के प्रति उस मैत्री में इस राष्ट्र का इस अवसर पर योगदान आरम्भ करने के लिए मैं निम्नलिखित बातों की सिफारिश करता हूँ :

—बोगोटा अधिनियम के अधीन 50 करोड़ डालर धन खर्च करने का जो वचन दिया गया है, कांग्रेस उस पूरे धन का विनियोग करे जिसे अमरीका महाद्वीपों के सुदृढ़ विकास की दिशा में पहले कदम के रूप में खर्च किया जाएगा।

—विदेश विभाग के नेतृत्व में अंतःविभागीय कृतिक दल (टास्क फोर्स) स्थापित किया जाए जो अमरीकी महाद्वीपों से सम्बन्धित सभी नीतियों तथा कार्यक्रमों का उच्चतम स्तर पर समन्वय करेगा।

—अमरीकी राज्य संघटन में हमारे प्रतिनिधि, अन्य सदस्यों के साथ मिलकर उस संगठन को शांति-स्थापना तथा इस गोलार्द्ध में कभी भी विदेशी प्रभुत्व रोकने के साधन के रूप में, सशक्त बनाएं।

—अन्य राष्ट्रों के सहयोग से हम अशिक्षा तथा सभी स्तरों पर शिक्षा-सुविधाओं की अपर्याप्तता के विरुद्ध समूचे गोलार्द्ध में नया अभियान आरम्भ करें। और अन्त में,

—दक्षिणी अमरीका को फौरन ही 'शांति के लिए अन्न मिशन भेजे जाएं' जिससे कि यह पता लग सके कि हमारे यहां भारी मात्रा में जो अन्न है, उसे हमारे अपने गोलार्द्ध के कुछ क्षेत्रों में विद्यमान भूख तथा न्यूनपोषणता को समाप्ति में किस तरह प्रयोग किया जा सकता है।

यह प्रशासन 'शांति के लिए अन्न'¹ कार्यक्रम का प्रत्येक सम्भव तरीके से विस्तार कर रहा है। हमारी अन्न-प्रचुरता का भुखमरी समाप्त करने तथा भूमण्डल के चारों कोनों में आर्थिक विकास में सहायता देने के लिए अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रयोग किया जाना चाहिए। और मैंने इस कार्यक्रम के निदेशक से कहा है कि वह ऐसे अन्य तरीकों की सिफारिश करें जिससे यह प्रचुर अन्न विश्वशांति का उद्देश्य पूरा कर सके। विश्व का खाद्य-भंडार स्थापित करना भी ऐसा एक उपाय हो सकता है।

और इससे भी अधिक मूल्यवान राष्ट्रीय संपत्ति हमारे लाखों लगनशील स्त्री-पुरुष हैं, जो हमारे कालेजों के क्षेत्रों में ही नहीं, वरन् सभी आयु-वर्गों में हैं और जिन्होंने अपनी सारी कुशलता, सारे प्रयास तथा अपने जीवन का एक भाग विश्व में व्यवस्था बनाए रखने के संघर्ष के लिए देने की इच्छा प्रकट की है। हम इस प्रतिभा का सदुपयोग एक राष्ट्रीय शांतिसेना बनाकर कर सकते हैं। इस सेना में उन लोगों की सेवाएं प्राप्त की जाएंगी जो प्रशिक्षित व्यक्तियों-विषयक विदेशों की आवश्यकताएं पूरी करने के इच्छुक तथा सक्षम हैं।

अन्त में, यद्यपि हमारा ध्यान गैर-कम्युनिस्ट जगत् पर ही केन्द्रित है, तथापि पूर्वी यूरोप की जनता की अन्ततः स्वतंत्रता और उसके कल्याण-विषयक अपनी आशाओं का भी हमें त्याग नहीं करना चाहिए। ऐतिहासिक मैत्री-सम्बन्ध पुनः स्थापित करने के हेतु तैयार होने के उद्देश्य से, मैं कांग्रेस से इस बात की अधिक अनुमति चाहूंगा कि जब भी स्पष्टतः राष्ट्रीय हित में हो, इस क्षेत्र में आर्थिक साधनों का बखूबी प्रयोग किया जाए। इसके लिए पारस्परिक रक्षा सहायता नियंत्रण अधिनियम में उसी प्रकारका संशोधन करना होगा, जैसा कि सेनेट के सदस्य के रूप में मैंने किया था। इस बीच मैं पोलिश सरकार से जन्त किए पोलिश धन को उन शांति-प्रायोजनाओं पर खर्च करने की सम्भावनाएं खोजने की आशा करता हूँ जिससे पोलैण्ड की जनता तथा पोलिश हितों के प्रति हमारी अनन्य मित्रता प्रकट होगी।

तीसरे, हमें अपने राजनीतिक तथा कूटनीतिक साधनों को तेज करना चाहिए—सहयोग एवं करार किए जाने चाहिए जिनके ऊपर अन्ततः विश्व-व्यवस्था लागू करना निर्भर होता है।

मैं पहले ही ऐसे कदम उठा चुका हूँ जिससे हमारे निरस्त्रीकरण-प्रयासों का समन्वय तथा विस्तार किया जा सके, गवेषणा एवं अध्ययन के कार्यक्रमों को बढ़ाया जा सके और शस्त्रास्त्र-नियंत्रण को अपनी देखरेख में अपनी राष्ट्रीय नीति का मूल नक्ष्य बनाया जा

1. 1954 में कांग्रेस द्वारा स्वीकृत एक अधिनियम के अनुसार यह कार्यक्रम शुरु किया गया था, जिसका उद्देश्य था कालात् अमरीकी अन्न का प्रयोग करके विदेशों में भुखमरी को समाप्त करना।

1. राष्ट्रपति का संदेश

सके। शस्त्रास्त्रों की भयानक होड़ तथा इस होड़ में खपनेवाले विशाल साधनों के कारण एक लम्बे अरसे से वह कुछ नहीं किया जा रहा है जो हमें करना चाहिए था। शस्त्र-प्रतियोगिता में नये राष्ट्र फंसें, परमाणु वम नये राष्ट्रों के पास हों तथा बाह्य अन्तरिक्ष तक और राष्ट्र जाएं, इसे रोकना चाहिए। हमें ऐसा निश्चित प्रबन्ध करना चाहिए कि हमारे वार्ताकारों को और अधिक जानकारी रहे तथा वे अपनी तरफ से व्यावहारिक प्रस्ताव पेश कर सकें तथा अन्य लोगों के प्रस्तावों पर सुविचारित निर्णय ले सकें।

मैंने अन्य सम्बद्ध सरकारों से कहा है कि वे परमाणु-परीक्षण पर प्रतिबन्ध लगाने सम्बन्धी वार्ता में थोड़ी देर करने के लिए सहमत हो जाएं। हमारा इरादा यह है कि किसी भी ऐसे राष्ट्र से अंतिम समझौता करने की तैयारी करके वार्ता पुनः शुरू करें जो हमारे समान ही कारगर तथा लागू की जाने योग्य संधि करने के लिए तैयार हो।

शीतयुद्ध समाप्त करने के माध्यम के रूप में—न कि शीतयुद्ध में दो-दो हाथ करने के मंच के रूप में—हमें संयुक्त राष्ट्रसंघ का समर्थन करते रहना चाहिए। उसके बढ़ते हुए महत्त्व तथा सदस्य-संख्या दुगुनी होने की स्वीकृति के रूप में हम संयुक्त राष्ट्रसंघ में अपने प्रतिनिधि दल की संख्या तथा स्तर बढ़ा रहे हैं। हम यह देखेंगे कि इसके लिए धन की उयुक्त व्यवस्था रहे और हम बराबर यह प्रयास करेंगे कि महासचिव के पद का उचित सम्मान बना रहे।

और मैं विश्व के छोटे राष्ट्रों से अपील करूंगा कि वे इस संगठन को सुदृढ़ बनाने में हमारा साथ दें जो हमारी अपेक्षा उनकी रक्षा के लिए अधिक आवश्यक है। यह संसार में एक ऐसी संस्था है जहां किसी भी राष्ट्र को सुरक्षित रहने के लिए शक्तिशाली होने की जरूरत नहीं और जहां कोई भी राष्ट्र अपनी सेनाओं की शक्ति के अनुरूप नहीं, बरन् अपने विचारों की शक्ति के अनुसार, अपना प्रभाव डाल सकता है। इसे सभी का समर्थन मिलना चाहिए।

अ

न्त में मैं कहूंगा कि मेरी सरकार सोवियत संघ तथा अन्य राष्ट्रों के साथ 'विज्ञान की भयानकताओं के स्थान पर विज्ञान के चमत्कारों के पोषण के लिए सहयोग के सभी सम्भव क्षेत्र तत्काल खोजना चाहती है। अधिक स्पष्टता से कहूं, अब मैं सोवियत संघ समेत सभी राष्ट्रों को ऋतु-भविष्यवाणी कार्यक्रम, नये दूरसंचार उपग्रह कार्यक्रम तथा मंगल एवं बृहस्पति सरीखे दूरस्थ ग्रहों की खोज की तैयारी में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं। ग्रहों की खोज से ब्रह्माण्ड के गहनतम रहस्यों का एक दिन उद्घाटन हो सकेगा।

आज यह देश अंतरिक्ष विज्ञान तथा टेक्नालाजी में सबसे आगे है और सोवियत संघ विशाल अंतरिक्ष-यानों की कक्षा में स्थापित करने की क्षमता में सबसे आगे है। दोनों ही राष्ट्र यदि इन प्रयासों को

शीतयुद्ध की कटु तथा फिजूलखर्ची की प्रतियोगिता से दूर रखेंगे तो अपना तथा अन्य राष्ट्रों का भला ही करेंगे। संयुक्त राज्य अमरीका इस नये ज्ञान के सुफल सभी के लिए सुलभ बनाने के महान्तर प्रयास में सोवियत संघ तथा सभी राष्ट्रों के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर काम करने को तैयार है। यही नहीं, इससे भी आगे बढ़कर, हम उस प्रयास में भी सबका साथ देने को तैयार हैं जिसके अधीन भूख से पीड़ित राष्ट्रों को कृषि-टैक्नालाजी प्रदान की जाए, बीमारियां समाप्त कर दी जाएं, वैज्ञानिकों तथा उनके ज्ञान का विनिमय बढ़ाया जाए और अपनी प्रयोगशालाएं अन्य देशों के टेक्नीशियनों को सुलभ की जाएं जिन्हें अपना काम आगे बढ़ाने की सुविधाएं अपने देश में सुलभ नहीं हैं। जहां प्रकृति ने हम सबको प्राकृतिक रूप से मित्र बना दिया है, हमें यह दिखा देना चाहिए कि जिन लोगों से हमारा मत एकदम नहीं मिलता उनके तथा हमारे बीच में भी लाभप्रद सम्बन्ध सम्भव हैं और एक दिन यही चलकर विश्व-शांति तथा विश्व-व्यवस्था का आधार बनेगा।”

मैंने स्वयं प्रतिज्ञा ली है तथा मंत्रिमण्डल के साथियों को प्रतिज्ञा दिलाई है कि हम सार्वजनिक हित के लिए लगातार पहल करने, उत्तरदायित्व उठाने तथा प्राणवान ढंग से आगे बढ़ने के प्रयासों को प्रोत्साहन देते रहेंगे। हर सरकारी कर्मचारी, चाहे उसका पद छोटा हो या बड़ा, यह भली भांति समझ ले कि सरकार में उसके पद एवं प्रतिष्ठा का निर्धारण उसके काम की गरिमा के आधार पर होगा, न कि उसके कर्मचारियों की संख्या, उसके पद अथवा वज्र के विशालता के आधार पर। यह सभी को स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह प्रशासन मतविभिन्नता तथा साहसी होने का मूल्य समझता है और हम स्वस्थ मतभेदों को स्वस्थ परिवर्तन का सूचक मानते हैं। सरकारी नौकरी अब गौरवपूर्ण तथा प्राणवान हो जानी चाहिए। हमारी राष्ट्रीय सरकार के किसी विभाग, किसी पद तथा किसी भी स्थान पर काम करनेवाला हर पुरुष तथा महिला भविष्य में गर्व तथा सम्मान के साथ कह सके कि “मैंने राष्ट्रीय आवश्यकता की घड़ी में संयुक्त राज्य अमरीका सरकार की सेवा की थी।”

राष्ट्रीय हितों के प्रति पूरी निष्ठा और उनके लिए पूरी लगन के साथ काम करने से ही हम अपने देश को भावी संकट-भरे वर्षों से गुज़ारकर आगे बढ़ा सकते हैं। हमारी समस्याएं बहुत ही गंभीर हैं। तूफान हमारे खिलाफ चल रहा है। हमें अच्छी खबरों के बदले और भी खराब खबरें मिलेंगी। और सर्वोत्तम परिणामों की आशा में तदनुसार प्रयास करते रहने पर भी हमें बुरी से बुरी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

हम अपने खतरों से बच नहीं सकते, लेकिन हमें यह भी नहीं होने देना है कि वे खतरे हमें आतंकग्रस्त कर दें तथा हमें संकीर्ण एकाकीपन में धकेल दें। विश्व के अनेक भागों में जहां शक्ति-संतुलन हमारे विरोधियों के हाथ में है, स्वाधीनता-समर्थक शक्तियों में तीव्र

मतभेद हैं। हमारे युग की यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि कठोर तथा दमन-पूर्ण शासन-पद्धति अपने कर्मचारियों में अनुशासन तथा उत्साह बढ़ाए तथा स्वतंत्रता के वरदान को प्रायः सुविधाओं, भौतिकता तथा आरामतलबी के जीवन का पर्याय समझ लिया जाए।

लेकिन स्वतंत्रता के विषय में मेरा विचार इससे सर्वथा भिन्न है।

1961 में जीवन आरामतलबी का न होगा। इसकी आकांक्षा करने, इसकी भविष्यवाणी करने तथा मांग करने पर भी ऐसा जीवन न बन सकेगा। हवा हमारे अनुकूल हो, उससे पहले हमें और भी हारें उठानी पड़ सकती हैं। लेकिन हवा का रुख हमें बदलना अवश्य है। समस्त विश्व की आशाएं हमारे ऊपर केन्द्रित हैं, इस सदन में बैठे हम लोगों पर ही नहीं, वरन् लाओस के किसानों, नाइजीरिया के मछुआरों, क्यूबा के निर्वासितों तथा उस भावना पर केन्द्रित हैं जो हमारे समान स्वाधीनता तथा भविष्य के प्रति आशावान व्यक्तियों तथा राष्ट्रों को प्रेरित किया करती हैं। और अंततः विश्लेषण करें, तो अधिकांशतः वे आशाएं इस महान गणतंत्र के नागरिकों के गर्व एवं सहनशीलता पर केन्द्रित हैं।

महान राष्ट्रपति (फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट) ने, सौभाग्य से जिनका जन्मदिवस आज ही पड़ता है, सोलह वर्ष पहले कांग्रेस को दिए अपने अंतिम संदेश के अंत में कहा था : “हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान ने जो अनन्त अवसर हमें प्रदान किए हैं, हम उनके योग्य स्वयं को सिद्ध कर सकें।”

राष्ट्रपति कैंनेडी ने कांग्रेस को दिए अपने संदेश की व्याख्या 25 मई, 1961 को की जबकि उन्होंने कांग्रेस के समक्ष कहा :

आ

जकल का जमाना असाधारण है। हमारा सामना एक असाधारण चुनौती से है। हमारी शक्ति तथा हमारे विश्वासों के कारण इस राष्ट्र के ऊपर स्वाधीनता बनाए रखने के लिए नेता बनने का भार आ गया है।

इतिहास में इस भूमिका से अधिक कठिन तथा अधिक महत्वपूर्ण भूमिका और नहीं हो सकती। हम स्वाधीनता के पुजारी हैं। अपने लिए यही हमारा दृढ़ विश्वास है और दूसरों के लिए यही हमारा वचन है। कोई मित्र, कोई भी तटस्थ राष्ट्र तथा कोई भी विरोधी इसके अलावा कुछ और न समझे। यदि कोई स्वाधीनता का विरोध न करता हो तो हम न तो किसी व्यक्ति, न किसी राष्ट्र और न किसी प्रणाली के विरुद्ध हैं। मैं यहां कोई नया सैनिक सिद्धान्त प्रतिपादित करने खड़ा नहीं हुआ हूँ कि जिसे कोई विशिष्ट

नाम दिया जाए या जो किसी क्षेत्र-विशेष के विरुद्ध हो। मैं तो यहां स्वाधीनता-सिद्धान्त का प्रतिपादन करने आया हूँ।

आज स्वाधीनता की रक्षा तथा उसके विस्तार का संघर्ष-स्थल भूमण्डल का समस्त दक्षिणी भाग है—एशिया, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका तथा मध्यपूर्व, जहां की जनता में जागृति फैल रही है। मानव-इतिहास में उनकी क्रान्ति सबसे महान है। ये देश अन्याय, अत्याचार तथा शोषण का अन्त करने में जुटे हुए हैं। अन्त ही नहीं, वे एक नई शुरूआत करने में लगे हैं।

उनकी क्रान्ति ऐसी क्रान्ति है, जिसका समर्थन हम शीतयुद्ध की परवाह किए बिना करेंगे और जिसका समर्थन करते समय हम यह ख्याल नहीं करेंगे कि स्वाधीनता की मंजिल तक पहुंचने के लिए वे कौन-सा राजनीतिक या आर्थिक रास्ता चुनते हैं।

स्वाधीनता के विरोधी क्रान्तियां नहीं करते और न वे ऐसी स्थितियां ही पैदा करते हैं जिनसे क्रान्ति आना अनिवार्य हो। इसके विपरीत वे उसकी लहरों की छाती पर चढ़ने तथा उसे अपने उद्देश्यों की सिद्धि के लिए अपने काबू में करना चाहते हैं।

किन्तु उनका यह आक्रमण प्रायः प्रत्यक्ष के बदले प्रच्छन्न होता है। वे कोई भी प्रक्षेपणास्त्र नहीं छोड़ते और न ही उनकी सेनाएं कहीं दिखाई देती हैं। वे तो हथियार, अन्दोलनकर्ता, सहायता, टैक्नीशियन तथा प्रचार-सामग्री प्रत्येक अशांत क्षेत्र में भेजा करते हैं। लेकिन जहां युद्ध की आवश्यकता होती है, लड़ाई और ही लोग करते हैं। यह लड़ाई छापामार करते हैं जो रात में हमले करते हैं, वे हत्यारे करते हैं जो अकेले में हमला करते हैं,—वियतनाम में गत बारह महीनों में चार हजार असैनिक अफसरों की हत्या हो चुकी है—या उपद्रवी तोड़-फोड़ करनेवाले अथवा विद्रोह करनेवाले करते हैं, जिनका कभी-कभी स्वतंत्र राज्यों के भीतर समूचे भू-भाग पर नियंत्रण रहता है।

इन ज़बर्दस्त हथियारों से स्वाधीनता के दुश्मन अपने इलाके में अपना शासन मजबूत करने, विश्व के नवोदित राष्ट्रों का शोषण, नियंत्रण और अन्त में उनकी आशाएं नष्ट करने की योजना बनाते हैं और उनकी आकांक्षा तो यह है कि वे यह काम इस दशाब्दी के अन्त से पहले ही कर लेंगे। यह संघर्ष इच्छा तथा उद्देश्य का, शक्ति एवं हिंसा का, मस्तिष्कों एवं आत्माओं और जीवन एवं प्रदेश का है। और उस संघर्ष में हम दूर खड़े-खड़े देखते नहीं रह सकते।

हम शुरू से ही राष्ट्रों की स्वाधीनता तथा समानता के पक्षपाती रहे हैं तथा आज भी हैं। क्रान्ति से ही इस राष्ट्र का जन्म हुआ है और यह स्वाधीनता में पलकर बढ़ा हुआ है। और हम एक-तंत्रात्मकता के लिए रास्ता खुला छोड़ देना नहीं चाहते।...

लेकिन हम जब स्वतंत्र विचारों के भागीदार बनने, उनका निर्माण करने तथा प्रतियोगिता की बात करते हैं, तब अन्य राष्ट्र शस्त्रास्त्रों की बातें करते हैं तथा युद्ध की धमकी देते हैं। इसलिए,

1. राष्ट्रपति का संदेश

हमने अपनी सुरक्षा-व्यवस्था शक्तिशाली रखना तथा रक्षा में औरों के साथ भागीदार के रूप में सहयोग करना सीख लिया है।.....

स्वाधीनता की रक्षा का केन्द्रबिन्दु हमारी विष्वव्यापी सैनिक संधियां हैं जो 'नाटो', जिसकी सिफारिश डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति ने की थी और जिसे रिपब्लिकन कांग्रेस ने मंजूर किया था, से लेकर 'सिएटो' (दक्षिण-पूर्व एशिया संधि-संगठन) तक फैली हुई है जिसकी सिफारिश रिपब्लिकन राष्ट्रपति ने की थी और जिसे डेमोक्रेटिक कांग्रेस ने स्वीकार किया था। ये सैनिक संधियां 1940 तथा 1950 के दशकों में की गई थीं। 1960 के बाद के दशक में उनको बलशाली बनाना हमारा काम तथा हमारा उत्तरदायित्व है।... 1961 में एक राष्ट्र के रूप में हम इस बात के लिए कृतसंकल्प हैं कि स्वाधीनता जीवित रहेगी और सफल होकर रहेगी। चाहे जितने भी खतरे तथा ऊंच-नीच आएँ, हमें कुछ बहुत बड़े लाभ भी सुलभ हैं।

पहली बहुत सीधी-सादी बात यह है कि हम आजादी के हामी हैं और इतिहास के आरंभिक काल से ही, खासकर द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद से, आजादी समस्त भूमण्डल में विजयिनी रही है।

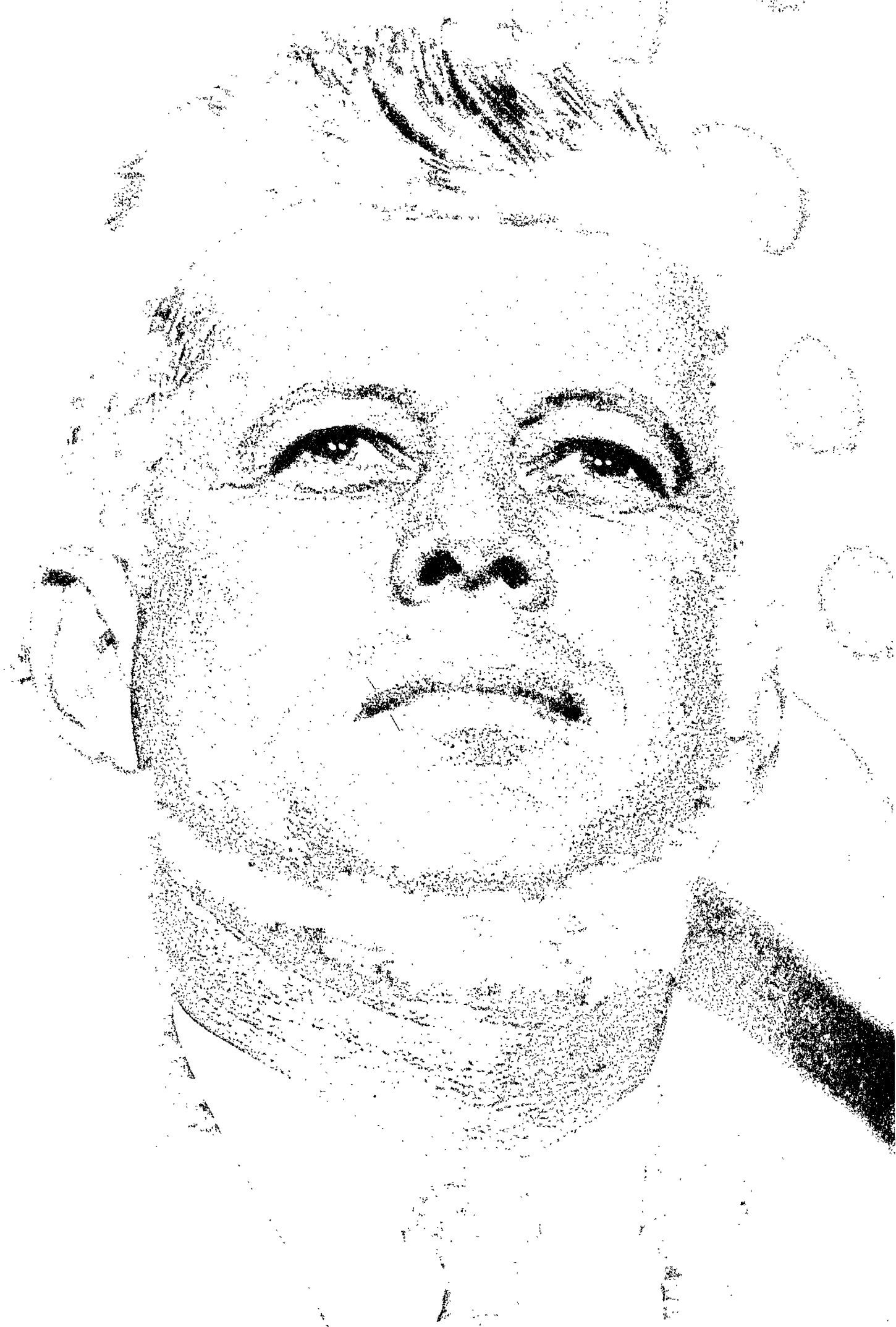
दूसरी मूल्यवान सम्पत्ति यह है कि हम अकेले नहीं हैं। संसार-भर में हमारे मित्र तथा साथी फैले हैं जो स्वाधीनता के प्रति हमारी ही तरह समर्पित हैं।..

हमारी तीसरी पूंजी शांति के लिए हमारी इच्छा है। हमारी यह इच्छा सच्ची इच्छा है और मुझे विश्वास है कि समूचा विश्व इस बात को जानता है। इस इच्छा को हम परीक्षण-प्रतिबन्ध सम्मेलन में प्रदर्शित अपने धैर्य से तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ में सिद्ध कर रहे हैं, जहां हमारे प्रयास, छोटे राष्ट्रों की स्वाधीनता के रक्षक के रूप में, इस संस्था को उपयोगी बनाए रखने के रहे हैं। इन तथा दूसरी अन्य बातों में हमारे विरोधियों का प्रत्युत्तर कुछ उत्साहवर्द्धक नहीं रहा है।

फि

र भी यह महत्त्वपूर्ण है कि वे जान लें कि वार्ता-मेज पर हमारा धैर्य सहज समाप्त होनेवाला नहीं है यद्यपि उसकी भी सीमाएं हैं। शांति के प्रति हमारी आशाएं असंदिग्ध हैं, लेकिन अपनी सुरक्षा की रक्षा करने के लिए हमारा निश्चय अत्यन्त पक्का है।....

समस्याएं जटिल तथा अभूतपूर्व हैं।



हमारी समस्याएं मानवकृत

2: शांति : तात्कालिक आवश्यकता

जॉन एफ० कॅनेडी के लिए शांति एक संतुलित विवेक वाले व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य है—एक ऐसा लक्ष्य जिसकी पूर्ति के लिए जी-जान से लगा जाना चाहिए। शांति की खोज के प्रति उनकी निष्ठापूर्ण लगन तथा उनके निश्चय का प्रभाव उनपर, जो उन्हें जानते थे एवं उन करोड़ों व्यक्तियों पर जो उन्हें नहीं जानते थे, पड़ा। उस 22 नवम्बर के बाद जिसपर किसीको विश्वास नहीं होता, नार्वे के प्रधानमंत्री ईनरग्रहर्डसन ने कहा था : “राष्ट्रपति कॅनेडी के उच्च तथा महत्वपूर्ण पद पर आसीन होने से हम अपने को सुरक्षित अनुभव करते थे। हमें उनपर भरोसा था और हमें न्याय तथा शांति के लिए उनकी इच्छा पर विश्वास था।”

शांति के लिए श्री कॅनेडी की आशा उनके भाषणों में निरंतर प्रदर्शित होती थी। वास्तव में ‘पृथ्वी पर शांति की प्राचीन आकांक्षा तथा सभी मानवों के प्रति सद्भाव’ की अपील उनके उस भाषण का चरमोत्कर्ष थी, जो वे अपनी हत्या के दिन देनेवाले थे। यही भाव उस भाषण में भी निहित था जो 28 नवम्बर, 1963 को अमरीका के वार्षिक धन्यवाद-दिवस के लिए लिखा गया था। लेकिन यह भावना कहीं भी उतनी स्पष्टता से व्यक्त नहीं की गई थी जितनी कि 10 जून, 1963 को वाशिंगटन में अमरीकी विश्वविद्यालय में दिए गए उनके भाषण में की गई थी।

य

ह अवसर तथा यह स्थान मैंने एक ऐसे विषय के विश्लेषण के लिए चुना है, जिसके बारे में प्रायः बहुत अधिक अज्ञानता दिखाई जाती है और सच्चाई बहुत ही कम अपनाई जाती है—फिर भी वह पृथ्वी का सबसे महत्वपूर्ण विषय है : विश्व-शांति।

किस प्रकार की शांति से मेरा आशय है ? किस प्रकार की शांति हम प्राप्त करना चाहते हैं ? वह अमरीकी युद्ध-अस्थि से विश्व पर थोपी हुई अमरीकी शांति नहीं होगी। न वह कन्न की शांति या दास की सुरक्षा होगी। मैं असली शांति की बात कह रहा हूँ। इस प्रकार की शांति जिससे पृथ्वी पर जीवन जीने योग्य बनता है, ऐसी शांति जिससे राष्ट्रों तथा व्यक्तियों को विकास का अवसर मिलता है, आशाएं पूरी होती हैं और जिसमें वे अपने बच्चों के लिए अच्छी ज़िन्दगी का निर्माण कर सकते हैं—वह शांति केवल अमरीकियों के लिए नहीं वरन् सनस्त स्त्री-पुरुषों के लिए होगी—वह शांति हमारे

शीतयुद्ध का नग्न प्रतीक : पूर्वो जर्मनी का सीमा-सन्तरी
कम्युनिस्टों से घिरे पश्चिमी बर्लिन को घूरता हुआ।

2. शांति : तात्कालिक आवश्यकता

युग के लिए ही नहीं वरन् सार्वकालिक शांति होगी।

मैं शांति की बात युद्ध के नये स्वरूप के कारण कर रहा हूँ। आज के युग में समग्र युद्ध का कोई अर्थ नहीं, जब बड़ी शक्तियाँ अपनी-अपनी विशाल तथा अपेक्षाकृत अमोघ परमाणु शक्ति बनाए रहें और उस परमाणु शक्ति का प्रयोग किए बिना आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दें। आज के युग में युद्ध का कोई अर्थ नहीं, जब एक परमाणु अस्त्र की शक्ति, द्वितीय विश्वयुद्ध में मित्रराष्ट्रों की वायु-सेनाओं द्वारा प्रयुक्त समस्त बमों की शक्ति से दस गुनी होती है। इस युग में युद्ध का कोई अर्थ नहीं, जबकि दोनों पक्षों द्वारा प्रयुक्त परमाणु बमों से उत्पन्न घातक विषों को वायु व पानी और मिट्टी तथा बीज समस्त भूमंडल में फैला देंगे तथा जिनका असर उनपर भी पड़ेगा जिनका अभी जन्म नहीं हुआ है।

इसलिए मैं एक समझदार व्यक्ति के समझदारीपूर्ण उद्देश्य के रूप में विश्व-शांति की बात करता हूँ। मैं अनुभव करता हूँ कि शांति का पालन करना उतना नाटकीय नहीं है जितना युद्ध का और कभी-कभी शांति की बात करनेवाले के कथन की तरफ ध्यान भी नहीं दिया जाता। लेकिन इससे अधिक तात्कालिक आवश्यकता की कोई और चीज नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि विश्व-शांति, विश्व-कानून अथवा विश्व में निरस्त्रीकरण की बात करना बेकार ही है और यह तब तक बेकार ही रहेगा जब तक सोवियत सरकार अधिक विचारपूर्ण रवैया नहीं अपनाती। मुझे आशा है, सोवियत सरकार का रवैया विचारपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि हम उन्हें यह रवैया अपनाने में मदद कर सकते हैं। लेकिन मेरा यह विश्वास भी है कि हमें एक व्यक्ति तथा एक राष्ट्र के रूप में अपने रवैये पर भी फिर से गौर करना चाहिए, क्योंकि उनके रवैये की तरह हमारा रवैया भी आवश्यक है।

सबसे पहले हमें स्वयं शांति के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना चाहिए। हममें से बहुतों की राय में शांति असम्भव है। बहुतों के मतानुसार विश्व-शांति अवास्तविक है। लेकिन यह एक खतरनाक और पलायनवादी धारणा है। इसका अर्थ यही निकलता है कि युद्ध अनिवार्य है, मानवता का विनाश निश्चित है और हम ऐसी शक्ति के पंजे में जकड़ गए हैं जिसपर हम नियंत्रण नहीं कर सकते।

यह दृष्टिकोण स्वीकार करना हमारे लिए आवश्यक नहीं है। हमारी समस्याएं मानवकृत हैं और इसलिए मानव इन समस्याओं को सुलझा भी सकता है। और मनुष्य उतना महान हो सकता है जितना वह बनना चाहे। मानव के भाग्य से सम्बद्ध कोई भी समस्या मानव की पहुँच में पड़े नहीं है। मनुष्य की तर्कबुद्धि तथा भावना ने अक्सर वे समस्याएँ सुलझा ली हैं जो कभी हल किए जाने योग्य नहीं मानी जाती थी और हमें आशा है कि वह फिर ऐसा ही कर सकेगा।

यहाँ मेरा मतव्य सम्पूर्ण, अनन्त विश्व-शांति या सद्भावना से नहीं है... मैं आशाओं तथा स्वप्नों के मूल्यों को झुठलाना नहीं चाहता। लेकिन अगर हम उन्हींको अपना एकमात्र तात्कालिक लक्ष्य मान लें तो हम निराशा तथा अविश्वसनीयता को ही आमंत्रित करेंगे।

इसलिए हमें अधिक व्यावहारिक तथा प्राप्य शांति पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो मानव-स्वभाव की आकस्मिक क्रांति पर आधारित नहीं होगी, वरन् मानव-संस्थाओं के क्रमिक विकास, बहुत-सी ठोस कार्रवाइयों तथा ऐसे कारगर कार्यों पर आधारित होगी जो सभी सम्बन्धित पक्षों के हित में हों। इस शांति के लिए कोई एक सीधी-सादी कुंजी नहीं है, ऐसा कोई शानदार तथा जादू-भरा गुर नहीं है जिसे एक या दो राष्ट्रों द्वारा अपनाने से शांति आ जाए। वास्तविक शांति तो अनेक राष्ट्रों तथा बहुत-सी कार्रवाइयों का परिणाम होगी। यह शांति गतिमान होनी चाहिए, जड़ नहीं, जो प्रत्येक नई पीढ़ी की चुनौतियों का सामना करने के लिए बदलती रह सके। कारण, शांति एक प्रक्रिया है, समस्याएँ हल करने का एक तरीका है।

इस प्रकार की शांति रहने पर झगड़े तथा हितों का टकराव तो रहेगा ही जैसाकि परिवारों तथा राष्ट्रों में होता है। सामाजिक शांति के समान विश्व-शांति के लिए यह जरूरी नहीं कि हर व्यक्ति अपने पड़ोसी को प्यार करे। इसके लिए सिर्फ इतना ही आवश्यक है कि वे एक-दूसरे को वर्दाश्त करते हुए रहें और अगर कोई झगड़े उठ खड़े हों तो उनके उपयुक्त एवं शांतिपूर्ण निपटारे के लिए प्रस्तुत रहें। इतिहास बताता है कि मनुष्यों के समान राष्ट्रों की दुश्मनी भी शाश्वत नहीं होती। हमारे अपने राग-द्वेष चाहे कितने ही तीव्र हों, फिर भी समय की गति और घटनाक्रम प्रायः राष्ट्रों एवं पड़ोसियों के सम्बन्धों में आश्चर्यजनक परिवर्तन कर देते हैं।

अतः हमें निरन्तर प्रयास करते रहना है। यह आवश्यक नहीं कि शांति अव्यवहार्य हो और युद्ध अवश्यम्भावी। अपने उद्देश्य की अधिक स्पष्ट व्याख्या करके तथा ऐसी स्थिति उत्पन्न करके कि वह अधिक प्राप्य तथा कम दूर दिखे, हम अन्य सभी देशों को वैसा समझने में सहायता दे सकते हैं, उससे आशाएँ लगाने तथा उसकी ओर अविराम बढ़ने में सहायक हो सकते हैं।

दूसरे, हमें सोवियत संघ के प्रति अपने दृष्टिकोण पर नये सिरे से विचार करना चाहिए। यह सोचना निराशापूर्ण है कि उनके नेता भी वही सोचते या विश्वास करते हैं जैसाकि उनके प्रचारकर्ता लिखते हैं। सैनिक रणनीति के बारे में हाल का अधिकृत सोवियत वक्तव्य पढ़कर निराशा हुई जिसमें निराधार तथा अमान्य दावों की भरमार थी और इस प्रकार के आरोप लगाए गए थे कि—“अमरीकी साम्राज्यवादी लोग दूसरे प्रकार के युद्ध छेड़ने की तैयारी कर रहे हैं” अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा सोवियत संघ के

विरुद्ध निरोधात्मक युद्ध छेड़ देने का वास्तविक खतरा है (और) अमरीकी साम्राज्यवादियों का राजनीतिक उद्देश्य यूरोप तथा अन्य पूँजीवादी देशों को आर्थिक तथा राजनीतिक दासता में जकड़ देना है (और) ...आक्रामक युद्ध छेड़कर...विश्व पर प्रभुत्व जमाना है।"

बहुत पहले लिखी गई यह बात आज भी सच है कि "जब शैतान का पीछा न करो तो वह खुद भाग जाता है।" लेकिन सोवियत रूस के ये वक्तव्य पढ़कर वास्तव में दुःख होता है। इससे हम दोनों के बीच की दूरी प्रकट होती है। लेकिन यह एक चेतावनी भी है, अमरीकी लोगों के लिए इस बात की चेतावनी कि वे उस माया-जाल में न फँसे जिसमें रूसी लोग फँसे हुए हैं, दूसरे पक्ष का विकृत तथा निराशापूर्ण चित्र न देखें, संघर्ष को अवश्यम्भावी न मानें, किसी प्रकार की गुंजाइश को असम्भव न समझें और पत्रादि को केवल धमकियों के विनिमय-मात्र का ही माध्यम न मानें।

कोई भी सरकार या सामाजिक प्रणाली इतनी बुरी नहीं है कि उसकी जनता को सद्गुणों से हीन ही समझा जाए। हम अमरीकियों के लिए साम्यवाद वैयक्तिक स्वाधीनता एवं सम्मान के पूर्ण अनस्तित्व का बोधक है। लेकिन हम इसके बाद भी रूसी लोगों की विज्ञान तथा अन्तरिक्ष-विद्या, आर्थिक एवं औद्योगिक विकास तथा संस्कृति एवं साहसपूर्ण कार्यों के लिए प्रशंसा करते हैं।

हमारे दोनों देशों की जनता के बीच जो बहुत-सी बातें मिलती-जुलती हैं उनमें कोई भी इतनी शक्तिशाली नहीं है जितनी हम दोनों के लिए युद्ध के प्रति घृणा है। प्रमुख विश्वशक्तियों में एक तरह से यह अपूर्व बात ही है कि हमारा एक-दूसरे से कभी युद्ध नहीं हुआ और युद्धों के इतिहास में किसी भी राष्ट्र का इतना नुकसान नहीं हुआ जितना द्वितीय महायुद्ध में सोवियत संघ का हुआ। कम से कम दो करोड़ व्यक्ति मारे गए। न जाने कितने करोड़ घरों और फार्मों को आग लगाई गई या बर्बाद किया गया। समूचे राष्ट्र का एक-तिहाई भाग, जिसमें देश का करीब एक-तिहाई औद्योगिक भाग भी शामिल था, एक तरह से बेकार ज़मीन में परिणत कर दिया गया और इस प्रकार रूस की यह हानि, शिकागो के पूर्वी क्षेत्र में हुए विनाश के बराबर थी।

अ

गर अब फिर कभी महायुद्ध छिड़ा तो, चाहे जैसे हो, हमारे दोनों देश ही उस युद्ध के केन्द्र बन जाएंगे। विचित्र संयोग ही सही, किन्तु वस्तुस्थिति यही है कि दो सर्वाधिक शक्तिशाली राष्ट्र ही विनाश के सर्वाधिक खतरे में हैं। युद्ध छिड़ने पर पहले चौबीस घण्टों के अन्दर ही, जो कुछ हमने बनाया है या जिसके लिए हम प्रयासशील रहे हैं, वह सारा का सारा नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा।

और शीतयुद्ध तक में, जिसका भार और खतरा बहुत-से देशों

को—जिनमें इस राष्ट्र के घनिष्ठतम मित्रराष्ट्र भी शामिल हैं उठाना पड़ता है; हमारे दोनों देशों को सबसे अधिक भार उठाना पड़ता है, क्योंकि दोनों ही विशाल धनराशि शस्त्रास्त्र बनाने पर खर्च करते हैं जबकि इस राशि को अज्ञान, गरीबी और बीमारी दूर करने पर लगाकर बेहतर ढंग से खर्च किया जा सकता है। हम दोनों ही एक खतरनाक दुष्चक्र में पड़ गए हैं जिससे एक देश के सन्देह से दूसरे देश को सन्देह होता है और इधर बने नये शस्त्रास्त्रों के कारण दूसरी तरफ जवाबी हथियार बनने लगते हैं।

संक्षेप में संयुक्त राज्य अमरीका और उसके मित्रराष्ट्र तथा सोवियत संघ और उसके मित्रराष्ट्र दोनों को ही न्यायपूर्ण और वास्तविक शांति स्थापित होने अथा शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता रोकने में गहरी दिलचस्पी है। इस उद्देश्य के लिए किए गए समझौते सोवियत संघ के लिए जितने भले हैं उतने हमारे लिए भी और उन संधियों में दिए वचनों को पालने तथा संधि-दायित्वों को स्वीकार करने के लिए धोरतम विरोधी राष्ट्र पर भी विश्वास किया जा सकता है। हां, वे उन्हीं संधि-दायित्वों को मानेंगे जो उनके अपने हित में हों।

इसलिए हमें अपने मतभेदों की तरफ से आँखें नहीं फेर लेनी चाहिए, पर इसके साथ ही हमें अपने समान हितों की तरफ तथा उन साधनों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए जिनसे उन मतभेदों को दूर किया जा सकता है और अगर अब हम आपसी मतभेद दूर नहीं कर सकते तो हम कम से कम विश्व को विविधताओं के लिए सुरक्षित रख सकने में मदद तो कर सकते हैं। क्योंकि अगर विश्लेषण करके देखें तो हम अन्त में पाते हैं कि हम लोगों का सबसे आधारभूत समान तत्त्व यही है कि हम सब इसी ग्रह के निवासी हैं। हम एक ही वायुमण्डल में सांस लेते हैं। हमारी सभी की कामना है कि हमारे बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बने और हम सब नश्वर शरीर-धारी हैं।

तोसरे, हमें शीतयुद्ध के प्रति अपने दृष्टिकोण पर फिर से गौर करना चाहिए और यह याद रखना चाहिए कि हम किसी वाद-विवाद-प्रतियोगिता में भाग नहीं ले रहे, जिसमें बहस के पाइंट अपने पक्ष में बटोरने का लक्ष्य हो। हम किसीपर लांछन लगाने या भले-बुरे का निर्णय करने यहां एकत्र नहीं हुए हैं। हमें विश्व को वर्तमान स्थिति में देखना चाहिए न कि उस स्थिति में जिसमें वह गत अठारह वर्षों का इतिहास भिन्न होने पर होता।

इसलिए हमें इस आशा में शांति के लिए अनवरत प्रयत्नशील रहना ही चाहिए कि कम्युनिस्ट गुट के अन्दर ऐसे रचनात्मक परिवर्तन आ सकते हैं जिससे, आज जो समझौते हमारी पटुंच के बाहर लगते हैं, वे हमें अपनी पटुंच के अन्दर लगे। हमें अपना कार्य कुछ इस प्रकार चलाना है कि कम्युनिस्टों को सच्ची शांति के लिए सहमत होना अपने स्वयं के हित में लगे। इन सबसे ऊपर, अपने महत्त्वपूर्ण हितों की रक्षा करते हुए, परमाणु-शक्ति वाले राष्ट्रों को आमने-

2. शांति : तात्कालिक आवश्यकता

सामने आने की ऐसी स्थिति बचानी चाहिए जिससे विपक्षी के सामने पीछे की ओर असम्मानजनक कदम हटाने या परमाणु-युद्ध छोड़ने देने के अलावा कोई और चारा न रह जाए। इस प्रकार की नीति आज के परमाणु-युग में अपनाना हमारी नीति के दिवालियापन का प्रमाण होगा अथवा समस्त विश्व की सामूहिक मृत्यु-कामना होगी।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति की खातिर ही, अमरीका के शस्त्रास्त्र युद्ध भड़काने के लिए नहीं हैं, सावधानी के साथ नियंत्रित हैं। वे प्रतिपक्षी को आक्रमण करने से रोकने के लिए बनाए गए हैं तथा सोच-समझकर प्रयोग करने के लिए हैं। हमारी सैनिक शक्तियाँ शांति को अर्पित हैं और आत्मसंयम का अनुशासन माननेवाली हैं। हमारे राजनयिक प्रतिनिधियों को हिदायतें मिली हुई हैं कि वे ऐसी बातें बचाएं जिनसे अनावश्यक भुंक्लाहट जगे अथवा शुद्ध उन्मादपूर्ण विरोध को प्रश्रय मिलता हो, क्योंकि अपनी सतर्कता में किसी प्रकार की कमी न आने देते हुए भी हम तनावनी कम करने की कोशिश कर सकते हैं।...

जैसाकि विश्व जानता है, संयुक्त राज्य अमरीका कभी भी युद्ध नहीं छोड़ेगा। हम युद्ध नहीं चाहते। अब किसी युद्ध के होने की हमें आशा नहीं है। अमरीकियों की इस पीढ़ी ने युद्ध, घृणा तथा उत्पीड़न, सभी कुछ बहुत काफी देख लिया है। अगर दूसरे चाहेंगे तो हम युद्ध के लिए तैयार होंगे। हम उसे रोकने की चेष्टा करने के लिए सतर्क रहेंगे।

लेकिन इसके साथ-साथ हम ऐसी विश्व-शांति स्थापित करने में भी अपना पूरा योग देने को तैयार रहेंगे, जिससे दुर्बल राष्ट्र सुरक्षित हों तथा बलवान राष्ट्र न्याय-पथगामी हों। यह कार्य करने के लिए हम असहाय नहीं हैं अथवा इसकी सफलता के प्रति निराश नहीं हैं। विश्वासभरे तथा निर्भय होकर हम मेहनत करते चल रहे हैं—सर्वनाश की तैयारी के लिए नहीं, वरन् शांति की तैयारी के लिए।

‘हमारी अन्तिम श्रेष्ठतम आशा’

राष्ट्रपति कैंनेडी के निधन के चार दिन पश्चात् संयुक्त राष्ट्र-संघ की 111 सदस्यीय महासभा की बैठक उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हुई थी। महासभा के अध्यक्ष वेनेजुएला के कार्लोस सोसा रोड्रिगज़ ने श्री कैंनेडी के निधन को “संयुक्त राष्ट्रसंघ की भयंकर क्षति” कहा था और स्मरण कराया कि “राष्ट्रपति के पद पर आरूढ़ होने के दिन ही... राष्ट्रपति कैंनेडी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ का इन अविस्मरणीय शब्दों में समर्थन किया था—‘जिस युग में युद्ध के साधनों ने

शांति के साधनों को दीड़ में पीछे छोड़ दिया था, संयुक्त राष्ट्रसंघ ही हमारी अन्तिम श्रेष्ठतम आशा है। सार्वभौम सत्तासम्पन्न राष्ट्रों की इस विश्व-महासभा का समर्थन करने की हम नये सिरे से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम इसे केवल वाक्ययुद्ध का अखाड़ा न बनने देंगे, नये तथा दुर्बल राष्ट्र की रक्षा करनेवाली इसकी ढाल को मजबूत बनाएंगे और उस क्षेत्र का विस्तार करेंगे, जिसमें इसके आदेशों का पालन हो।’”

“और उस प्रतिज्ञा का भली प्रकार पालन किया गया,” महासभा के अध्यक्ष ने कहा।

केवल दो महीने पहले—20 सितम्बर को—श्री कैंनेडी महासभा के समक्ष भाषण करने आए थे। उन शब्दों में, जो डा० सोसा रोड्रिगज़ के कथनानुसार—“अब भी हमारे कानों में गूँज रहे हैं,”—उन्होंने भविष्य के स्वरूप को चित्रित किया था।

आ

ज यहां मेरी उपस्थिति किसी संकट का चिह्न नहीं है, वरन् विश्वास का चिह्न है। मैं यहां शांति के लिए उपस्थित हुए किसी नये खतरे अथवा युद्ध की किसी नई संभावना की सूचना देने नहीं आया हूँ। मैं संयुक्त राष्ट्रसंघ को अभिवादन करने तथा आपके दैनिक कार्यों के प्रति अमरीकी जनता का समर्थन प्रदर्शित करने आया हूँ।

इस महान संस्था के काम का मूल्य संकटों की उपस्थिति या नाटकीय विजयों के द्वारा शांति जीत लाने पर ही निर्भर नहीं है। शांति तो एक दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक प्रक्रिया है जो शनैः-शनैः मत-परिवर्तन लाकर, पुरानी बाधाओं को थोड़ा-थोड़ा हटाती हुई मौन भाव से नया निर्माण करती है। शान्ति-पथ का अनुगमन चाहे जितना अनाटकीय हो, लेकिन उस पथ पर चलना जारी रहना चाहिए।...

शांति-सेतु के निर्माण का काम बड़े तथा छोटे—सभी राष्ट्रों के नेताओं का है। क्योंकि संघर्ष तथा आकांक्षाएं बड़े राष्ट्रों की ही नहीं हैं और परमाणु अस्त्रों की प्रतियोगिता ही एकमात्र शस्त्र-प्रतियोगिता नहीं है। परमाणु आयुधों वाले युग में छोटी-लड़ाइयां तक खतरनाक हैं। शांति के लिए सुदीर्घ प्रयास प्रत्येक राष्ट्र का दायित्व है और इस प्रयास में हममें से कोई भी तटस्थ नहीं रह सकता। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कोई भी पक्ष वचनबद्ध हुए बिना नहीं रह सकता।

विश्वव्यापी तनाव कम करना किसीके लिए अपने क्षुद्र स्वार्थों

की सिद्धि का बहाना नहीं बनाया जाना चाहिए। यदि विश्वव्यापी स्वार्थों तथा विरोधी सैद्धान्तिक मान्यताओं और दूसरे पर ताने हुए परमाणु आयुधों के होते हुए भी संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत संघ समान हितों तथा सहमतियों की बातें खोज सकते हैं तो अन्य राष्ट्र भी निश्चय ही ऐसा कर सकते हैं जो क्षेत्रीय संघर्षों, जातीय विद्वेषों अथवा प्राचीन उपनिवेशवादी मौत के शिकंजे में कसे हुए हैं। पुराने लम्बे भगड़े, जनता की आवश्यकताओं पर लगनेवाले मूल्यवान साधनों को भगड़ों में लगाते हैं अथवा दोनों पक्षों की शक्तियों को खाते रहते हैं, इनसे किसीका लाभ नहीं होता और आज के युग में सबसे बड़ा उत्तरदायित्व शांतिपूर्ण हल खोजना है।

प्रयास करना कभी भी जल्दबाजी नहीं कहलाता। और कभी भी बातचीत शुरू करने को विलम्ब होने की संज्ञा नहीं दी जा सकती। और अब समय आ गया है जब इस महासभा की विचारसूची में दर्ज अनेक भगड़ों को वाद-विवाद की सूची से निकालकर बातचीत की मेज पर भेज दिया जाए।

प्रतिस्पर्धा तो चलती रहेगी। ऐसी प्रतिस्पर्धा उन लोगों के बीच होगी जो एकतन्त्रीय विश्व बनाने तथा जो मतभेदों से युक्त विश्व को रखने के हामी हैं। लेकिन यह प्रतिस्पर्धा विनाश के स्थान पर नेतृत्व तथा उत्तरदायित्वों के लिए हो, पीड़न के बदले प्राप्ति, सफलता, कामना के लिए हो। संयुक्त राज्य अमरीका की तरफ से मैं इस प्रतिस्पर्धा का स्वागत करता हूँ, क्योंकि हम मानते हैं कि सत्य भूलों से अधिक बलशाली होता है और स्वतन्त्रता उत्पीड़न से अधिक स्थायी होती है और बेहतर जीवन के लिए हुई प्रतियोगिता में समस्त विश्व ही विजयी होगा।

मानव-समुदाय की स्थिति सुधारने का प्रयास चंद लोगों का ही काम नहीं है। यह तो सभी राष्ट्रों का काम है—अकेले, मिलकर या राष्ट्रसंघ की मार्फत—क्योंकि बीमारियाँ तथा घातक रोग, लूट एवं वर्णसंकरता, प्रकृति के प्रकोप और वृद्धों की भूख, सभी राष्ट्रों के दुश्मन हैं। पृथ्वी, सागर तथा वायु की चिन्ता सभी राष्ट्रों को है तथा विज्ञान, टेक्नालाजी एवं शिक्षा सभी राष्ट्रों के मित्र हो सकते हैं।

पहले कभी भी मानव के पास अपनी स्थितियों के नियंत्रण के साधन ऐसे नहीं थे कि वे प्यास-भूख को समाप्त कर सकें, निर्धनता तथा रोगों पर विजय प्राप्त कर सकें तथा अज्ञानता एवं व्यापक मानव-कष्टों का अंत कर सकें। हमारे हाथों में यह शक्ति है कि हम इस पीढ़ी को विश्व-इतिहास की सर्वोत्तम पीढ़ी बना सकते हैं तथा मानवता की अन्तिम पीढ़ी भी...

प्रत्येक राष्ट्र को विकास-सहायता जारी रखनी ही चाहिए। लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ को भी आधुनिक विज्ञान तथा उद्योग के सुफल सभी मानव-समुदायों तक पहुँचाने में सहायक होने की अधिकाधिक भूमिका अदा करनी चाहिए। इस सम्बन्ध में, इसी वर्ष

जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन ने विकासशील राष्ट्रों के लिए नये मार्गों का उद्घाटन किया था। और संयुक्त राष्ट्रसंघ का चार बटा पाँच भाग विज्ञान एवं टेक्नालाजी के सभी उपादानों को संयुक्त राष्ट्रीय विकास दशक के लिए प्रयोग करने को तैयार हैं।

ले

किन इससे भी अधिक किया जा सकता है :

—विश्व-स्वास्थ्य-संगठन के अधीन विश्व-स्वास्थ्य-संचार-केन्द्र महामारियों की चेतावनी दे सकता है तथा कुछ भेपजों (ड्रग्स) के प्रतिकूल प्रभाव तथा नये परीक्षणों एवं नई खोजों के परिणाम सभी देशों को बता सकता है।

—आंचलिक गवेषणा-केन्द्र हमारे सम्मिलित चिकित्सा-ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं और नये वैज्ञानिकों तथा नये डाक्टरों को नये राष्ट्र के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं।

—उपग्रहों की विश्वव्यापी व्यवस्था द्वारा पृथ्वी के सभी कोनों के लिए दूर-संचार तथा ऋतु-सम्बन्धी सूचनाओं का प्रबन्ध हो सकता है।

—संरक्षण का विश्वव्यापी कार्यक्रम से वनों की तथा उन वन्य-जन्तुओं की रक्षा हो सकेगी जिनके समूल नाश का खतरा उपस्थित है, सागरों से खाद्य-पदार्थ प्राप्त करने में सुधार हो सकेगा तथा औद्योगिक एवं परमाणु दूषणों से वायु तथा पानी को दूषित होने से बचाया जा सकेगा।

—और अन्त में, हमारे देश की 'शांति के लिए अन्न' कार्यक्रम के अनुरूप, कृषि-उत्पादकता तथा अन्न-वितरण के विश्वव्यापी कार्यक्रम के द्वारा प्रत्येक वच्चे को उसकी आवश्यकता के अनुरूप खाद्य-पदार्थ दिया जा सकता है।

लेकिन मनुष्य केवल रोटी-मात्र से जीवित नहीं रहता और इस संगठन के सदस्य, घोषणापत्र के अनुसार, मानव-अधिकारों को बढ़ाने तथा उसका सम्मान करने के लिए वचनबद्ध हैं।

डम महासभा द्वारा पन्द्रह वर्ष पहले की गई मानवाधिकार-सम्बन्धी घोषणा को पूरी तरह सार्थक बनाना है तो नये प्रयास करने आवश्यक होंगे। यात्रा तथा संचार साधनों और लोगों, पुस्तकों एवं ब्राडकास्टों का आदान-प्रदान करके विचारों के मुक्त आदान-प्रदान तथा लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए नये तरीके खोजने होंगे, क्योंकि संसार ज्यों-ज्यों अस्त्र-प्रतियोगिता छोड़ता जा रहा है, त्यों-त्यों विचारों की प्रतियोगिता बढ़नी चाहिए तथा यह प्रतियोगिता यथासंभव पूर्ण एवं उचित होनी चाहिए।

संयुक्त राज्य अमरीका का प्रतिनिधिमण्डल संयुक्त राष्ट्रसंघ को मुभाव दे सकेगा कि इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए क्या-क्या कदम उठाए जाएं। यह सन्स्था शांति-स्थापन के लिए बनी है और शांति कराकर काम करने तथा प्रगति किए बिना नहीं स्थापित हो सकती।

2. शांति : तात्कालिक आवश्यकता

शांति-स्थापन की दिशा में संयुक्त राष्ट्रसंघ का काम गौरवपूर्ण रहा है हालांकि उसके काम हमेशा ही बहुत गुरुतर रहे हैं। हमारा सीमागम्य है कि हमें सुयोग्य महासचिव की सेवाएं सुलभ हैं तथा उन लोगों के वीरतापूर्ण प्रयासों का लाभ मिला है जिन्होंने कांगों, मध्यपूर्व, कोरिया, कश्मीर, पश्चिमी न्यूगिनी तथा मलयेशिया में शांति-स्थापनार्थ काम किया है। लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भूतकाल में जो काम किए हैं वे भविष्य में किए जानेवाले कार्यों से कम महत्वपूर्ण हैं। हम यह नहीं मान सकते कि इसके शांति-स्थापन-कार्य सदा सफल ही होंगे। इसके प्रशासनतंत्र के लिए उपयुक्त धन होना ही चाहिए। अगर कुछ सदस्य अपने हिस्से का धन न दें तो इस संस्था की वित्तीय स्थिति कैसे सुदृढ़ होगी। इस प्रकार वे अपना दायित्व पूरा न करके इस संस्था को भी अपना दायित्व पूरा न करने देंगे। जो राष्ट्र इस संस्था में मत देने के अधिकारी हैं, उन सबको संस्था का धन अदा करना चाहिए। और इसके कार्यकलापों का आखिर तक समर्थन करना चाहिए।'''

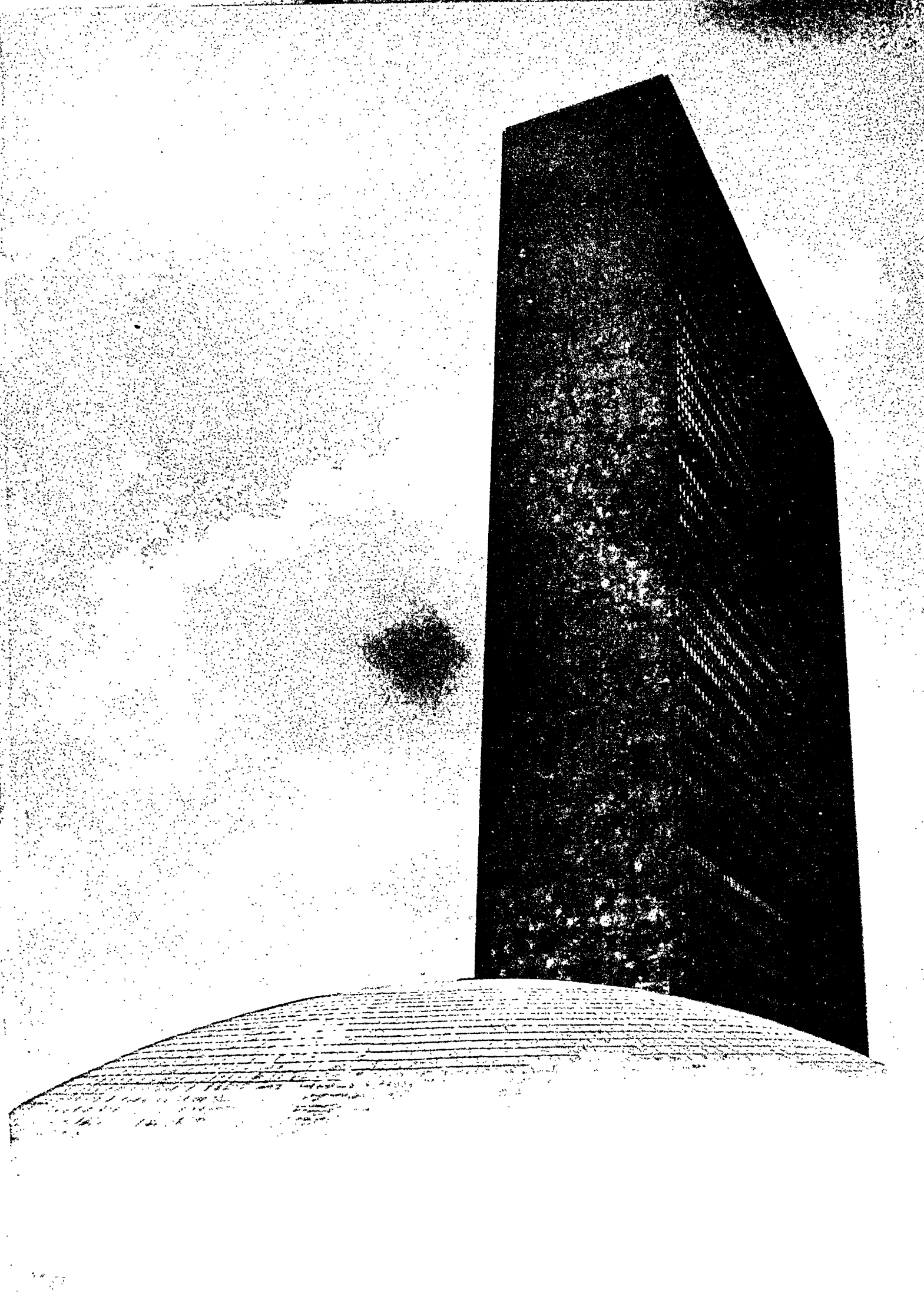
संयुक्त राष्ट्रसंघ जड़ अवस्था में जीवित नहीं रह सकता। इसके आकार के साथ-साथ इसकी ज़िम्मेदारियां बढ़ रही हैं। इसके घोषणापत्र तथा इसकी परम्पराओं में परिवर्तन किया जाना चाहिए। उस घोषणापत्र के निर्माताओं का यह उद्देश्य कभी नहीं था कि वह अनन्तकाल तक यथावत् बना रहेगा। शस्त्रास्त्र-विज्ञान तथा युद्धों ने, अठारह वर्ष पहले सैन फ्रांसिस्को की अपेक्षा, आज हमें कहीं अधिक एक विश्व व एक मानव-जाति बना दिया है जिसका भाग्य एकसाथ जुड़ा हुआ है। ऐसे विश्व में पूर्ण सार्वभौमता सम्पूर्ण सुरक्षा के प्रति आश्वस्त नहीं कर सकती। शांति-प्रयत्न आगे बढ़ें और युद्ध के आविष्कारों से भी आगे निकल जाएं। अपनी सफलताओं की सीढ़ियों पर चढ़ते तथा अपनी विफलताओं से सबक लेते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ को वास्तविक विश्व-सुरक्षा-व्यवस्था करनी चाहिए।

किन्तु शांति घोषणापत्रों तथा प्रतिज्ञापत्रों में ही नहीं रहती। वह तो सभी व्यक्तियों के हृदयों में तथा मस्तिष्कों में रहती है। और आज के विश्व में कोई भी अधिनियम, कोई करार, कोई संधि तथा कोई संगठन शांति को तब तक स्थायी नहीं बना सकता जब तक उसे सभी देशों के लोगों का पूर्ण समर्थन नहीं मिलता तथा वे उसके प्रति पूर्णतः अपने को अर्पित नहीं करते। इसलिए हम अपनी आशाएं करार-पत्रों और कागजों पर केन्द्रित न रखें वरन् हमें शांति की स्थापना के लिए प्रयास करना चाहिए। सभी लोगों के अन्दर शांति की इच्छा हो, शांति-स्थापनार्थ काम करने की भावना दिलों, दिमागों में होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि हम ऐसा कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि मानव के भविष्य की समस्या मानव की पहुँच से बाहर नहीं है।'''

इ

स पृथ्वीग्रह के निवासी मेरे बन्धुओ ! आओ, हम राष्ट्रसंघ की इस महासभा में अपना स्पष्ट शांति-मतव्य प्रकट करें और यह देखें कि क्या हम अपने ही जमाने में विश्व को न्यायपूर्ण तथा स्थायी शांति प्रदान करने की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं।

राष्ट्रसंघ का
मुख्य कार्यालय



Gusheer
Jumma
Galiwo

व्यावहारिक प्रश्न'

“मा

नव का मस्तिष्क, मानव के हृदय तथा मानव की
आध्यात्मिक आकांक्षाओं, सभी की यही कामना है
कि हाल के इतिहास की धारा उलट जाए, विनाश के अनवरत
बढ़ते हुए संप्रह का स्थान मानव की नफ़रताओं के लिए
उन्मुक्त निरंतर बढ़ते अवसर ले लें। “यह कार्य मानवता की
विषम-मूर्खी की सबसे पहली मद होनी चाहिए।”

निरस्त्रीकरण

ये शब्द राष्ट्रपति कॅनेडी ने परराष्ट्र सचिव डीन रस्क को लिखे थे। इन शब्दों की ध्वनि सुपरिचित है, अधिक स्पष्ट तथा अधिक गूँजेवाली और शायद निरस्त्रीकरण के लिए उपस्थित उस दलील की ही प्रतिध्वनि है जो फरवरी, 1945 में नौसेना के एक युवा जवानमर्द (जिसने लड़ाई का भरपूर जाम पीकर देखा था) जॉन फिट्जरेल्ड कनेडी ने 'हम शांति का परीक्षण तो करके देखें' निबंध में प्रस्तुत की थी।

चन्द लोग ही होंगे जिन्हें उनकी अपेक्षा निरस्त्रीकरण-प्रयासों के इतिहास का अधिक ज्ञान हो तथा जिन्हें इन प्रयासों में अंतर्निहित खतरों का बेहतर एहसास हो। लेकिन इस क्षेत्र में प्रगति हो सकती है, इसका जॉन कॅनेडी को पूरा विश्वास था। उनकी यह दृढ़ आस्था 1961 के मध्य में कांग्रेस की स्वीकृति से नई अमरीकी शस्त्र-नियंत्रण एवं निरस्त्रीकरण एजेन्सी की स्थापना करने से प्रकट होती है। निरस्त्रीकरण के लिए उनका सर्वाधिक स्मरणीय भाषण 25 सितम्बर, 1961 को हुआ जब वे संयुक्त राष्ट्रसंघ के लगनशील महासचिव डाग हैमरशोल्ड को श्रद्धांजलि देने उपस्थित हुए थे जबकि वे गृहयुद्ध की लपटों से पीड़ित कांगो में युद्ध बंद कराने के प्रयास में विमान-दुर्घटना में मारे गए थे।

हम इस समय दुःख तथा चुनौती भरी घड़ी में मिल रहे हैं।

डाग हैमरशोल्ड का निधन हो चुका है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र-संघ अभी जीवित है। उनके दुःखद निधन से हमारे दिलों में गहरा धाव हुआ है, लेकिन जिस उद्देश्य की खातिर उन्होंने अपने प्राण गंवाए वह हमारी कार्य-सूची में सबसे ऊपर है। शांति का एक सच्चा सेवक बना गया, लेकिन शांति की तलाश अभी हमारे आगे जारी है।

समस्या एक व्यक्ति के मरने की नहीं है, समस्या इस संस्था के जीवन की है। या तो यह संस्था इतनी शक्तिशाली हो जाएगी कि हमारे युग की चुनौतियों का सामना कर सके अथवा इतनी हलकी होकर निष्प्राण, शक्तिहीन तथा आदरहीन होकर खत्म हो जाएगी। अगर हम इसे मरने देंगे, उसकी शक्ति को कम होने देंगे, इसके अधिकारों को छीनने देंगे, तो हम अपने भविष्य को ही नष्ट करेंगे।

इस संस्था के विकास में ही युद्ध का सच्चा विकल्प समाहित है और युद्ध रोकने की अपीलें अब सम्यक् विकल्प नहीं रह गया है। बिना शर्त के छोड़ा गया युद्ध अब बिना शर्त जीता नहीं जा सकता।

अब युद्धों के द्वारा भगड़ों का निपटारा नहीं हो सकता। अब युद्ध केवल बड़े राष्ट्रों तक ही सीमित नहीं है, क्योंकि अब परमाणु वम की विभीषिका हवा, पानी तथा भय के साथ छोटे और बड़े, गरीब तथा अमीर, गुटबंदी में फंसे तथा गुटबंदी से अलग, सभी को समान-रुस से ग्रसेगी। अतः मानव को युद्ध समाप्त कर देने चाहिए अन्यथा युद्ध मानव को समाप्त कर देंगे।

अतः हम संकल्प करें कि डाग हैमरशोल्ड व्यर्थ ही नहीं गए या व्यर्थ ही नहीं मरे। हमें आतंक की समाप्ति करनी चाहिए। हमें शांति की शुभाशीषों को आमंत्रित करना चाहिए। और जब हम शांति बनाए रखने की अंतर्राष्ट्रीय क्षमता प्राप्त कर रहे हैं तो हमें युद्ध छोड़ने की राष्ट्रीय क्षमता समाप्त करने के लिए मिलकर प्रयास करने चाहिए।

इसके लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ को नई शक्ति की आवश्यकता होगी तथा नई भूमिकाओं का निर्वाह करना होगा। क्योंकि बिना जांच के निरस्त्रीकरण करना छायामात्र है और कानून के बिना समाज-मात्र एक ढोल है। संयुक्त राष्ट्रसंघ मानव की परम उदार भावनाओं का मापक तथा वाहक बन चुका है। यह मध्यपूर्व, एशिया तथा अफ्रीका में इस वर्ष कांगो में हिंसा को सीमाओं के अन्दर रखने के साधन प्रस्तुत कर सका है।

लेकिन इस महान संस्था के सामने 1945 में जो प्रश्न उपस्थित था वह आज भी उपस्थित है : क्या प्रगति तथा शांति की मानव की चिरपोषित आशाएं आतंक तथा तोड़-फोड़ द्वारा नष्ट कर दी जाएंगी, क्या 'युद्ध के दूषित भंभा' को समय रहते रोका जा सकेगा ताकि समझदारी की शीतल वायु उससे मुक्त रह सके, क्या घोषणा-पत्र में की गई उन प्रतिज्ञाओं का परिपालन किया जाएगा अथवा उल्लंघन जिनमें शांति, प्रगति, मानव-अधिकार तथा विश्व-कानून प्राप्त करने की बात कही गई थी।...

आज इस ग्रह के प्रत्येक निवासी को उस दिन की कल्पना करनी चाहिए कि जब इस ग्रह पर मानव के रहने के लिए जगह नहीं रह जाएगी। प्रत्येक पुरुष, स्त्री तथा बच्चे के सिर पर आज परमाणु अस्त्र की तलवार अत्यन्त पतले धागों से बंधी लटक रही है और यह धागा किसी भी समय दुर्घटनावश, गलतफहमी या पागलपन की अवस्था में टूट सकता है। युद्ध के शस्त्रास्त्र हमें नष्ट करें, उससे पहले ही हमें उनको ही नष्ट कर देना चाहिए।

आज मनुष्य इस बहस में नहीं पड़ता कि शस्त्रीकरण तनाव का लक्षण है या तनाव का कारण। आधुनिक शस्त्रास्त्रों का होना ही, जो विश्व में पहले कभी भी मौजूद शस्त्रों से एक करोड़ गुना अधिक शक्तिशाली है, और पृथ्वी-भर में किसी भी लक्ष्य पर मिनटों के अन्दर पहुंच सकते हैं, भयानकता, असंतोष तथा अविश्वास का कारण है। आज मानव-समाज यह नहीं मानता कि सभी भगड़े निपट जाने के बाद ही निरस्त्रीकरण किया जाए क्योंकि स्वयं

निरस्त्रीकरण ही उस स्थायी शांति-व्यवस्था का अंग होना चाहिए। अब मनुष्य यह नहीं कह सकता कि निरस्त्रीकरण की इच्छा कम-जोरी की निशानी है, क्योंकि होड़ के कारण बढ़ रही शस्त्र-प्रतियोगिता में किसी राष्ट्र की सुरक्षा उसके शस्त्रास्त्रों के परिमाण में हुई वृद्धि के अनुपात में घट भी सकती है।

गत पन्द्रह वर्षों से यह संस्था शस्त्रास्त्रों में कमी करने तथा उनका विनाश करने का प्रयास करती रही है। अब वह लक्ष्य एक स्वप्न-मात्र नहीं रह गया है, यह जीवन या मरण का एक व्यावहारिक प्रश्न बन गया है। निरस्त्रीकरण में अन्तर्निहित खतरे, असीमित शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता में अन्तर्निहित खतरों की तुलना में कुछ भी नहीं है।

इसी भावना के अनुसार हाल के वेलग्रेड सम्मेलन ने यह मानते हुए कि यह अब न तो सोवियत समस्या है और न अमरीकी समस्या-वरन् मानव-मात्र की समस्या है, 'सार्वजनिक, पूर्ण तथा सर्वथा अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में निरस्त्रीकरण' के एक कार्यक्रम को स्वीकार किया था। इसी भावना के वशीभूत होकर संयुक्त राज्य अमरीका के लोगों ने इस वर्ष प्रयास किए थे जिसमें नई आवश्यकता-नुभूति थी तथा कांग्रेस द्वारा पूर्णतः अनुमोदित नई, कानून के अनुसार बनी संस्था ने निरस्त्रीकरण-समस्या का ऐसा हल खोजने के प्रयास किए जिससे निरस्त्रीकरण दीर्घकालिक, फिर भी यथार्थता-पूर्ण तथा परस्पर इतना सतुलित एवं लाभदायक हो कि जिसे प्रत्येक राष्ट्र स्वीकार कर सके। इसी भावना के अनुसार इसने सोवियत संघ से करार किया है जिसमें दोनों राष्ट्रों ने 'आम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण' के लिए वार्ता के नये स्वीकृत सिद्धान्तों के नये वक्तव्य को स्वीकार किया है।

किन्तु हमें यह भली भांति विदित है कि सभी ऐद्धान्तिक समस्याएं हल नहीं हो गई हैं और सिद्धान्तों पर सहमति होना ही काफी नहीं है। इसलिए हमारा इरादा सोवियत रूस को शस्त्र-प्रतियोगिता के लिए नहीं, शांति-प्रतियोगिता के लिए, कदम-कदम तथा एक चरण से दूसरे चरण में पहुंचने के लिए तब तक ललकारने का है जब तक आम और पूर्ण निरस्त्रीकरण संभव नहीं हो जाता। हम अब उनको सिद्धान्ततः सहमत होने से भी आगे बढ़कर वास्तविक योजनाओं पर करार करने के लिए आमंत्रित करते हैं।

प्रभावपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण के अन्तर्गत आम एवं पूर्ण निरस्त्रीकरण के लिए इस महासभा में प्रस्तुत किया जानेवाला कार्यक्रम उन दो विचारधाराओं का अन्तर दूर करने का प्रयास करेगा जिनमें से एक तो धीरे-धीरे आगे बढ़ने का समर्थक है और दूसरा अन्तिम तथा पूर्ण सफलता की बात कहता है। इससे एक ऐसी व्यवस्था का जन्म होगा, जिसके अनुसार ज्यों-ज्यों युद्धतंत्र नष्ट होता चलेगा त्यों-त्यों शांति का सिक्का जमता चलेगा। यह व्यवस्था संतुलित तथा सुरक्षित चरणों से गुजरेगी जो इस प्रकार बनाई

जाएगी कि किसी एक राज्य को दूसरे राज्य पर सैनिक लाभ न हो। इसके अनुसार निरस्त्रीकरण की जांच तथा नियंत्रण का अन्तिम उत्तरदायित्व न तो बड़े राष्ट्रों पर, न किसी एक राष्ट्र या उसके विरोधी राष्ट्र पर डाला जाएगा, वरन् संयुक्त राष्ट्रसंघ के ढांचे के अन्दर एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को सौंपा जाएगा।

इससे निरस्त्रीकरण की एक अनिवार्य शर्त—सच्ची जांच—पूरी हो सकेगी—तथा जिस प्रकार धीरे-धीरे निरस्त्रीकरण होता चलेगा, उसी मात्रा में निरीक्षण-कार्य होता रहेगा। यह जांच शस्त्रास्त्रों के साथ उन्हें गिरानेवाले वाहकों की भी की जाएगी। इसके अनुसार अन्ततः इनके उत्पादन, परीक्षण, उनके हस्तान्तरण तथा उन्हें अपने पास रखने आदि सभी पर रोक लगा दी जाएगी। इससे अन्तर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण संस्था की देख-रेख में परमाणु अस्त्रों तथा परम्परागत अस्त्रों से लैस सभी सेनाओं को धीरे-धीरे लगातार कम किया जाएगा, जब तक कि आंतरिक शांति बनाए रखने तथा नई संयुक्त राष्ट्रीय शांतिसेना के लिए आवश्यक टुकड़ियां ही शेष न रहें। और उस दिशा में आज, अभी जैसे बातचीत शुरू हो, उसीके साथ कार्रवाई शुरू कर दी जाए।

संक्षेप में, आम तथा पूर्ण निरस्त्रीकरण अब एक नारा-मात्र नहीं रह जाना चाहिए जो आरम्भिक कदम उठाना रोकने के उद्देश्य से दिया जाता है। यह एक ऐसा लक्ष्य नहीं रह जाना चाहिए जिसे प्राप्त करने के साधन न हों, जिसकी प्रगति आंकने की कोई तरकीब न हो तथा जिससे शांति बनाए रखना सम्भव न हो। यह एक यथार्थतावादी योजना है, एक परीक्षा है। उन लोगों की परीक्षा है जो खाली बातें करना चाहते हैं तथा उन लोगों की परीक्षा है जो काम करने के लिए भी तैयार हैं।

इस तरह की योजना से विश्व केवल संघर्ष अथवा लालच से ही मुक्त नहीं होगा, वरन् इससे सामूहिक विनाश से भी विश्व को मुक्ति मिल सकेगी। इससे किसी 'महाराज्य' का युग आरम्भ न होगा, वरन् इससे एक ऐसे युग का श्रीगणेश होगा, जिसमें एक राज्य दूसरों का न तो समूल नाश कर सकेगा और न कोई अन्य उसे विनष्ट कर सकेगा।

1946 में ही अमरीका ने वरुच योजना का प्रस्ताव रखा था, जिसके अधीन अन्य राष्ट्रों के पास परमाणु बम होने से पहले ही उसका अन्तर्राष्ट्रीयकरण करने तथा विसैन्यीकरण करने का प्रस्ताव रखा जबकि कोरिया में युद्ध चल रहा था। यद्यपि बर्लिन में हम अपनी रक्षा-व्यवस्था की तैयारी कर रहे हैं, तब भी हम आज अपने प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं, इसलिए नहीं कि हमारा मत स्थिर नहीं है या हमारी नीयत नेक नहीं है या हम किसीसे डर गए हैं, बल्कि इसलिए कि हम जानते हैं कि स्वतन्त्र लोगों के अधिकार ही अन्ततः विजयी होंगे, इसलिए कि हम अपनी इच्छा के प्रतिकूल सदाश्व होने के लिए बाध्य किए जा रहे हैं, फिर भी हम विश्वासपूर्वक बर्लिन से

3. निरस्त्रीकरण

आगे उस निरस्त्र विश्व की बाट जोह रहे हैं जिसे हम पसन्द करते हैं।

इसलिए मैं प्रस्ताव करता हूँ कि इस योजना के आधार पर निरस्त्रीकरण-वार्ताफौरन शुरू हो और तब तक बिना रुके चलती रहे जब तक आम एवं पूर्ण निरस्त्रीकरण के समूचे कार्यक्रम पर सहमति ही नहीं हो जाए वरन् ऐसा निरस्त्रीकरण वास्तव में अपना लिया जाए।

इसकी तर्कसंगत शुरूआत एक ऐसी संधि होगी जिसके अनुसार सभी स्थितियों में सभी प्रकार के परमाणु-परीक्षणों पर रोक लगाना तथा व्यावहारिक नियंत्रण सुनिश्चित हों। संयुक्त राज्य अमरीका तथा ब्रिटेन ने इस प्रकार की संधि का प्रस्ताव किया है जो औचित्यपूर्ण एवं प्रभावकारी है तथा हस्ताक्षरों के लिए तैयार है। हम आज भी उस संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हैं।

हमने वायुमण्डलीय परीक्षणों पर आपसी प्रतिबन्ध लगाने का प्रस्ताव भी रखा है जिसके लिए निरीक्षण या नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है। इसका उद्देश्य मानव-जाति को रेडियमधर्मी धूल गिरने से बचाना है। हमें खेद है कि हमारा यह प्रस्ताव भी स्वीकार नहीं किया गया।

गत पन्द्रह वर्षों से हम यत्न कर रहे हैं कि परमाणु को युद्ध की अपेक्षा शांतिपूर्ण विकास का साधन बनाएं। लेकिन गत पन्द्रह वर्षों से हमारी रियायतों का प्रत्युत्तर बाधाओं से मिला है तथा हमारे धैर्य का बदला अड़ियलपन से दिया गया है। शांति के लिए मानवता के तर्कों का उत्तर उनकी उपेक्षा करके दिया गया है।

अन्त में, जब अन्य देशों के विस्फोटों से आकाश में बादल उठ रहे थे तो हमारे देश के सामने इसके सिवा कोई और विकल्प नहीं रह गया था कि वह भी अपनी तथा स्वतन्त्र विश्व की सुरक्षा की खातिर कार्रवाई करे। जब और लोग अपने शस्त्रास्त्रों को सुधारने में लगे हों, तब हम परीक्षणों से विरत होकर सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकते। गत तीन वर्षों से हमने अपने मुक्त समाज में ये व्योखिम भी उठाए हैं और दूसरी तरफ हम परीक्षणों की जांच-पड़ताल पर समझौता करने के लिए भी प्रयत्नशील हैं। लेकिन इस वर्ष जब हम जेनेवा में ईमानदारी के साथ बातचीत कर रहे थे तो दूसरे लोग गुप्तरूप से विनाश के नये परीक्षण करने की तैयारियां कर रहे थे।

हमारे परीक्षण वायुमण्डल को दूषित नहीं करते हैं। दूसरे पक्ष को शस्त्र उठाने से रोकनेवाले हमारे शस्त्रास्त्रों का आकस्मिक दुर्घटनावश विस्फोट या प्रयोग न हो, इसकी पूरी चौकसी है। हमारे डाक्टर तथा वैज्ञानिक ऐसे प्रत्येक राष्ट्र की सहायता करने को तैयार हैं, तथा स्वास्थ्य के लिए घातक प्रत्येक परेशानी को दूर करने में सहायता करने को प्रस्तुत हैं जो वायुमण्डलीय परीक्षणों के अनिवार्य परिणाम होते हैं।

लेकिन इन भयंकर अस्त्रों के विस्तार, वायुमण्डल को दूषित होने से तथा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़नेवाली शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता को रोकने के लिए हम समझौते के नये मार्ग खोजने को सदैव तैयार रहे हैं। इस प्रकार हमारे नये निरस्त्रीकरण-कार्यक्रम में निम्नलिखित प्रस्ताव सम्मिलित हैं:

प्रथम, सभी राष्ट्रों द्वारा परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाने की संधि पर हस्ताक्षर करना। यह तो अभी किया जा सकता है। परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाने की वार्ता शुरू करने के लिए आम निरस्त्रीकरण होने की प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है, न करनी ही चाहिए।

दूसरे, शस्त्रास्त्रों में प्रयोग होनेवाले विस्फोटक पदार्थों का उत्पादन रोकना तथा इस समय जिन राष्ट्रों के पास परमाणु अस्त्र नहीं हैं, उन्हें इन विस्फोटक पदार्थों का हस्तांतरण रोकना।

तीसरे, परमाणु अस्त्रों पर उन राष्ट्रों को नियंत्रण हस्तांतरित करने से रोकना जिनके पास परमाणु अस्त्र नहीं हैं।

चौथे, परमाणु अस्त्रों को अन्तरिक्ष में नये युद्धक्षेत्रों के बीज बोने से रोकना।

पांचवां, इस समय वन चुके परमाणु अस्त्रों को धीरे-धीरे नष्ट करना तथा उनमें लगी सामग्री को शांतिपूर्ण कामों में प्रयोग करना, और

अन्त में, परमाणु अस्त्रों को ले जानेवाले सामरिक महत्त्व के वाहनों के उत्पादन तथा असीमित परीक्षण रोकना तथा धीरे-धीरे उन सबको नष्ट करना।

लेकिन शस्त्रास्त्रों को नष्ट कर देना ही पर्याप्त नहीं है। जैसे-जैसे हम शस्त्रास्त्र नष्ट करें, हमें विश्व-भर में न्याय-व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए और जैसे-जैसे हम विश्व-भर में युद्धों तथा शस्त्रों को वर्जनीय बनाएं, उसके साथ ही विश्व में न्याय-व्यवस्था लागू करना सम्भव बनाएं। हम जिस विश्व के निर्माण की बात कह रहे हैं, उसमें जल्दी-जल्दी जुटाई गई संयुक्त राष्ट्रसंघीय संकटकालीन सेनाएं पर्याप्त नहीं होंगी, जिनके पास रसद की सुनिश्चित व्यवस्था तथा जिनके खर्च की समुचित व्यवस्था नहीं है।

अतः संयुक्त राज्य अमरीका की सिफारिश है कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी सेनाओं में विशेष शांति-स्थापक दस्ते बनाकर रखे जिन्हें संयुक्त राष्ट्रसंघ जब चाहे तभी बुला सके। ये दस्ते विशेष रूप से प्रशिक्षित हों, फौरन उपलब्ध हो सकते हों तथा उनके खर्च एवं परिवहन की पहले से व्यवस्था हो।

इसके अतिरिक्त अमरीकी प्रतिनिधिमण्डल का सुभाव है कि ऐसे अनेक कदम उठाए जाएं, जिससे भगड़ों को शांतिपूर्वक निपटाने, घटनास्थल पर वस्तुस्थिति की जांच करने, मध्यस्थता तथा पंच-निर्णय करने तथा कानून-व्यवस्था का विस्तार करने की संयुक्त राष्ट्रसंघ की कार्यप्रणाली में सुधार हो। क्योंकि शांति केवल सैनिक

अथवा टैक्नीकल समस्या ही नहीं है, यह तो मूलभूत रूप में राजनीतिक तथा जनता की समस्या है। और जब तक मानव, शस्त्र-निर्माण एवं टैक्नालाजी में की गई प्रगतिके समान ही सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में प्रगति नहीं करता, तब तक हमारी शक्ति का समुचित नियंत्रण न होगा और हम इस पृथ्वी पर से मिट जाएंगे।

आगामी दस महीनों की घटनाएं तथा निर्णय आगामी दस हजार वर्षों तक के लिए मानव के भाग्य का निर्णय कर देंगे। इन घटनाओं को टाला नहीं जा सकता। इन निर्णयों के विरुद्ध कहीं भी अपील नहीं की जा सकेगी। इस हाल में बैठे हम लोगों को या तो उस पीढ़ी का अंग गिना जाएगा जिसने इस ग्रह को जलती चिता में परिणत किया या वह पीढ़ी समझा जाएगा जिसने 'आनेवाली पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने की अपनी प्रतिज्ञा' का निर्वाह किया।

उस प्रतिज्ञा का निर्वाह करने के प्रयासस्वरूप मैं इस राष्ट्र द्वारा शक्ति-भर हर संभव कोशिश करने का वचन देता हूँ। मैं वचन देता हूँ कि यह राष्ट्र न तो आक्रमण करेगा और न आक्रमण के लिए उकसाएगा, यह राष्ट्र न तो शक्ति की धमकी देगा और न धमकी के आगे भागेगा तथा यह राष्ट्र न तो डरकर बातचीत करेगा और न बातचीत करने से डरेगा।

“शांति तथा स्वतंत्रता में विश्वास रखनेवाले किसी राष्ट्र को निराश होने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अकेला नहीं है। अगर हम सब आत्मनियंत्रण रख सकते हैं, अगर हम सब, चाहे जिस देश या जिस पद पर हों, अपनी सीमाओं तथा आकांक्षाओं से आगे देख सकते हैं, तो निश्चय ही उस युग का अम्युदय होगा जिसमें शक्ति-शाली न्यायपूर्ण, कमजोर संरक्षित तथा शांति सुरक्षित रहेगी।

इस महासभा में उपस्थित महिलाओं तथा सज्जनो, निर्णय करना हमारे ऊपर है। विश्व के राष्ट्रों को आज जितना खोना या पाना है, उतना पहले कभी नहीं था। आज मिलकर हम अपने पृथ्वीग्रह को बचा सकते हैं अथवा आग की लपटों में भस्मसात् कर सकते हैं। इसे हम बचा सकते हैं, हमें इसे अवश्य बचाना चाहिए और तभी हम मानवता के शाश्वत धन्यवाद तथा शांति-स्थापक के रूप में परमात्मा के शाश्वत वरदान के अधिकारी होंगे।

शस्त्रास्त्र कम करने के श्री कैंनेडी के प्रस्तावों को विस्तार के साथ अमरीकी प्रतिनिधि ने मार्च, 1962 में अठारह राष्ट्रीय जेनेवा निरस्त्रीकरण सम्मेलन में प्रस्तुत किया। ये प्रस्ताव किसी भी राष्ट्र द्वारा प्रस्तुत सर्वाधिक व्यापक तथा विशिष्ट सुझाव थे। इसके साथ ही इस स्विस् नगर में पृथक् से हो

रहे अमरीकी-ब्रिटिश-सोवियत सम्मेलन में परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध के नये अमरीकी प्रस्ताव भी उपस्थित किए गए। ये सम्मेलन सारे वर्ष-भर चलते तथा स्थगित होते रहे और कम से कम सीमित समझौता करने पर विशेष बल दिया जाता रहा, लेकिन मास्को इसके साथ अनेक मेगाटन के परमाणु अस्त्रों का विस्फोट करता रहा तथा अक्टूबर में तो रूस ने क्यूबा को अमरीकी मुख्य भूमि की ओर लक्ष्य ताने प्रक्षेपणास्त्रों के अग्रिम अड्डे के रूप में परिवर्तित करके संकट उपस्थित कर दिया।

इसके बाद भी जॉन कैंनेडी के कारण इस वार्ता में प्रगति हुई। विचित्र संयोग ही है कि शांति की दिशा में प्रगति, शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता समाप्त करने की अपीलों के कारण नहीं हुई वरन् क्यूबा-कांड से मास्को को अकस्मात् पता चल गया कि उनके प्रथम राष्ट्राध्यक्षीय भाषण का ठीक-ठीक अर्थ क्या था, जब उन्होंने कहा था : यद्यपि संयुक्त राज्य अमरीका शांति की खोज में आगे चलने को तैयार है, लेकिन वह “अपने अस्तित्व की रक्षा तथा स्वाधीनता की सफलता के लिए कोई भी कीमत अदा करने को तैयार है, कोई भी भार उठाने को प्रस्तुत है तथा किसी भी शत्रु से लोहा लेने में समर्थ है।” जॉन कैंनेडी की—और अमरीका की स्वाधीनता के प्रति आस्था का कम मूल्यांकन करके संकट खड़ा करनेवाला मास्को अकस्मात् यह समझ गया कि निरस्त्रीकरण की दिशा में कम से कम आरंभिक कदम उठाने की आवश्यकता है।

क्यूबा का संकट 22 अक्टूबर को आरम्भ हुआ था जब संयुक्त राज्य अमरीका को कैरीबियन सागर के उस असंतुष्ट द्वीप पर सोवियत प्रक्षेपणास्त्रों की गतिविधि की असंदिग्ध जानकारी मिल चुकी थी और वह छः दिन बाद ही समाप्त हो गई जब श्री कैंनेडी की दृढ़ता तथा अमरीकी जनता द्वारा उनके ठोस समर्थन के स्पष्ट प्रमाण के कारण मास्को अपने प्रक्षेपणास्त्र तथा जेट वमवर्षकों को वापस सोवियत रूस ले जाने को प्रस्तुत हो गया। और उस छठे दिन निकिता ख्रुश्चोव ने जॉन कैंनेडी को लिखा : “हमको अणु तथा परमाणु शस्त्रास्त्रों पर प्रतिबंध लगाने, आम निरस्त्रीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने सम्बन्धी अन्य समस्याओं पर विचार-विमर्श जारी रखना

3. निरस्त्रीकरण

चाहिए।”

राष्ट्रपति ने तत्काल इसके उत्तर में सोवियत प्रधान-मंत्री को लिखा :

हमें निरस्त्रीकरण की समस्या पर फौरन ही ध्यान देना चाहिए क्योंकि इसका सारे संसार से तथा संकटपूर्ण क्षेत्रों से सम्बन्ध है। शायद अब जब हम खतरे से एक कदम पीछे हट आए हैं, हम मिलकर इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में कुछ वास्तविक प्रगति कर सकें। मैं समझता हूँ कि हमें पृथ्वी पर तथा बाह्य अन्तरिक्ष में परमाणु अस्त्रों पर रोक लगाने सम्बन्धी प्रश्नों को प्राथमिकता देनी चाहिए। लेकिन हमें इस बात के लिए कठोर परिश्रम करना चाहिए कि निरस्त्रीकरण के व्यापक मसलों पर भी सहमति हो जाए और शीघ्र ही उन समझौतों पर अमल किया जा सके। संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार इन प्रश्नों पर फौरन ही रचनात्मक भावना के साथ जेनेवा में या अन्यत्र कहीं भी विचार करने को तैयार होगी।

इसके बाद के महीने निरस्त्रीकरण-वार्ता के युद्धोत्तर इतिहास में सबसे अधिक परिणामदायक सिद्ध हुए। 5 अप्रैल, 1963 को जेनेवा में सोवियत प्रतिनिधिमण्डल ने अमरीका का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि वाशिंगटन तथा क्रेमलिन के बीच सीधी टेलीटाइप लाइन चालू की जाए। संकट के समय अमरीकी राष्ट्रपति और सोवियत प्रधानमंत्री के बीच शीघ्रता से बातचीत करने का साधन सुलभ होने से आकस्मिक दुर्घटना से युद्ध छिड़ने का खतरा कम हो सकेगा, इस बात का विश्वास हो जाने पर तथाकथित ‘हॉट लाइन’ हेमन्त ऋतु में चालू हो गई। लेकिन इससे अधिक महत्वपूर्ण थी सीमित परमाणु-परीक्षण-प्रतिबन्ध सन्धि, जिसकी मांग अब तक श्री कैंनेडी करते रहे थे और अन्त में जिसपर मास्को में 25 जुलाई, 1963 को तीन प्रमुख परमाणु शक्तियों—संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन तथा सोवियत संघ—ने हस्ताक्षर किए।

अपने तीन वर्ष के कार्यकाल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवीय घोषणाओं में से एक घोषणा श्री कैंनेडी ने अगले ही दिन की, जब संविधान के अन्तर्गत उन्होंने अमरीकी सेनेट से उस संधि की संपुष्टि का आग्रह किया। रेडियो

तथा टेलीविजन पर भाषण करते हुए आपने अमरीकी जनता से कहा :

आज रात मैं आप लोगों के सामने आशापूर्ण भावना के साथ बोल रहा हूँ। अठारह वर्ष पहले परमाणु अस्त्रों के अभ्युदय से विश्व तथा युद्ध की अवस्था ही बदल गई थी। उसी समय से समस्त मानवता पृथ्वी पर सामूहिक विनाश की अन्धकारपूर्ण संभावना से बचने के लिए संघर्ष करती चली आ रही है। ऐसे युग में जब दोनों पक्षों के पास इतनी परमाणु शक्ति हो कि वे समस्त मानव-जाति को कई बार विध्वंस कर सकते हैं, साम्यवादी तथा स्वतंत्र विचारों के विश्व परस्पर विरोधी सिद्धान्तवाद तथा परस्पर विरोधी हितों के दुष्पक्ष में फँस गए हैं। तनाव की हर वृद्धि के साथ शस्त्रास्त्रों की वृद्धि हुई है और शस्त्रास्त्रों की हर वृद्धि के साथ तनाव बढ़ा है।...

कल अंधकार की सघनता को चीरती हुई, प्रकाश की एक किरण उदित हुई है। मास्को में बातचीत के फलस्वरूप एक संधि हुई है, जिसके अनुसार पृथ्वी, बाह्य अन्तरिक्ष अथवा जल के अन्दर सभी तरह के परमाणु-परीक्षणों पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा। पहली बार परमाणु विनाश की शक्तियों को अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण में लाए जा सकने के लिए एक समझौता हुआ है। यह ऐसा लक्ष्य है जिसे वर्नाडि बरुच ने 1946 में ही संयुक्त राष्ट्रसंघ के सामने एक व्यापक नियंत्रण योजना के अधीन प्रस्तुत किया था।

उस योजना तथा बाद की अनेक छोटी-बड़ी योजनाओं को उन लोगों ने अवरोध कर दिया जो अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण के विरोधी थे। लेकिन परमाणु-परीक्षण पर प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था के अंतर्गत निरीक्षण की आवश्यकता तभी पड़ेगी जब भूगर्भीय परीक्षण किए जाएं। इस राष्ट्र के पास ऐसी बहुत-सी तकनीकें सुलभ हैं, जिनसे अन्य राष्ट्रों द्वारा वायुमण्डल या पानी के भीतर किए गए परमाणु-परीक्षणों का पता आसानी से चल सकता है, क्योंकि इस प्रकार के परीक्षणों से वे स्पष्ट चिह्न प्रकट होते हैं जिन्हें आधुनिक यंत्रादि से पकड़ा जा सकता है।

अतः, कल जो संधि हुई है, वह एक सीमित संधि है जिसके अनुसार भूगर्भीय परमाणु-परीक्षण किए जा सकते हैं। इसके अधीन उन्हीं परीक्षणों पर प्रतिबंध लगाया गया है, जिन्हें हम स्वयं भी पकड़ सकते हैं। इसके लिए किसी नियंत्रण चौकी, घटनास्थल पर जाकर किसी प्रकार के निरीक्षण करने अथवा कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनाने की आवश्यकता नहीं।

हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि इसकी अन्य सीमाएं भी हैं। इस संधि पर हस्ताक्षर करनेवाला कोई राष्ट्र उस अवस्था में इस संधि से बाहर जा सकता है, जब वह यह समझे कि संधि के विषय से

संबंधित असाधारण घटनाओं के कारण उसके सर्वोच्च हित खतरे में पड़ गए हैं, और किसी भी राष्ट्र का आत्मरक्षा का अधिकार किसी भी अवस्था में इससे बाधित नहीं होगा। इस संधि का यह अर्थ भी नहीं है कि इससे परमाणु-युद्ध का खतरा समाप्त हो गया। इससे परमाणु अस्त्रों का संग्रह भी कम नहीं होगा। इससे परमाणु अस्त्रों का उत्पादन भी न रुकेगा और युद्ध छिड़ने पर इनका प्रयोग भी न रोका जा सकेगा।

फिर भी, इस संधि से परमाणु-परीक्षणों में जबर्दस्त कमी आ जाएगी जो अन्यथा दोनों तरफ से चलते रहते। यह संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन तथा सोवियत संघ को वायुमण्डलीय परीक्षण करने से रोकेंगी जिसने मानवता को इतना अधिक चिन्ताग्रस्त कर दिया है; और इससे समूचे विश्व को स्वागत योग्य आशाचिह्न मिल गया है।

यह कोई एकपक्षीय रोक नहीं है, वरन् एक निश्चित तथा पवित्र कानूनी दायित्व है। हालांकि इस राष्ट्र को यह संधि भूगर्भीय परीक्षण करने तथा अन्य राष्ट्रों की कार्यवाहियों से आवश्यक हो जाने के कारण वायुमण्डलीय परीक्षण करने से रोक न सकेगी, फिर भी यह एक ऐसा ठोस सुअवसर उपस्थित करती है कि इससे अन्य राष्ट्र बंधे तथा बाद में अन्य प्रकार के परमाणु-परीक्षण रोके जा सकें।

यह संधि एक तरह से पश्चिमी राष्ट्रों के धैर्य तथा सतत सतर्कता का परिणाम है। हमने स्पष्ट कर दिया—सबसे हाल में बर्लिन तथा क्यूबा में—कि हम अपनी सुरक्षा तथा अपनी स्वतंत्रता की किसी भी प्रकार के आक्रमण से रक्षा करने के लिए कृतसंकल्प हैं। साथ ही हमने शस्त्र-प्रतियोगिता सीमित करने का अपना दृढ़ निश्चय भी स्पष्ट कर दिया।

यह संधि ही सब कुछ नहीं है। इससे सभी समस्याएं हल नहीं हो सकेंगी अथवा इससे कम्युनिस्ट अपनी महत्वाकांक्षाएं नहीं त्याग देंगे या युद्ध का खतरा नहीं टल जाएगा। इससे शस्त्रास्त्रों या मित्रों की आवश्यकता या अन्य राष्ट्रों को सहायता देने के कार्यक्रम की जरूरत कम न होगी। लेकिन यह एक महत्वपूर्ण पहला कदम है—शांति की तरफ, समझदारी की तरफ उठाया गया तथा युद्ध से हटकर एक कदम है।

“इतिहास तथा हमारी अपनी आत्मा हमें बुरा कहेगी, अगर हम अब अपनी आशाओं को कार्य की कसौटी पर कसने का हर संभव प्रयत्न नहीं करते हैं और यह स्थान उस प्रयत्न को शुरू करने का है। प्राचीन चीनी कहावत है: “हजार मील की यात्रा का श्रीगणेश एक कदम उठाने के साथ होना चाहिए।”

मेरे अमरीकी बंधुओं, हमें यह पहला कदम उठाना चाहिए। अगर हम बच सकें तो हमें युद्ध की काली छायाओं से बच जाना चाहिए और शांति का रास्ता खोजना चाहिए। और वह यात्रा एक हजार मील या इससे भी अधिक लंबी है तो इतिहास को लिखने

दोजिए कि इस राष्ट्र के रहनेवाले हम लोगों ने इस अवसर पर पहला कदम उठाया।

सेनेट का अनुमोदन सितम्बर में प्राप्त हुआ और वाशिंगटन, लंदन तथा मास्को में सम्पुष्टि-पत्रों के आदान-प्रदान के साथ 10 अक्टूबर, 1963 को संधि लागू हो गई, लेकिन तब तक करीब सौ राष्ट्रों ने उस संधि पर हस्ताक्षर कर दिए थे। जॉन एफ० कैंनेडी ने विदेश नीति के क्षेत्र में अपनी सबसे बड़ी सफलता पाई और वे परमाणु-राक्षस को फिर बोतल में बन्द करा सके।

अभी एक बात में समझौता और होना था। कैंनेडी का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह आश्वासन प्राप्त करना था कि बाह्य अन्तरिक्ष किसी भी भावी युद्धक्षेत्र का अंग न बनाया जाएगा। यह आश्वासन 17 अक्टूबर, 1963 को मिला। जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सोवियत संघ की सहमति से एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें सभी राष्ट्रों से अनुरोध किया गया था कि वे “पृथ्वी के चारों तरफ की कक्षा में ऐसी कोई चीज़ न भेजें जिसमें परमाणु अस्त्र या सामूहिक विनाश का किसी प्रकार का अस्त्र हो, इस प्रकार के अस्त्रों को खगोलीय पिंडों पर न पहुंचाएं और न किसी अन्य विधि से इन शस्त्रास्त्रों को बाह्य अन्तरिक्ष में स्थित करें।”

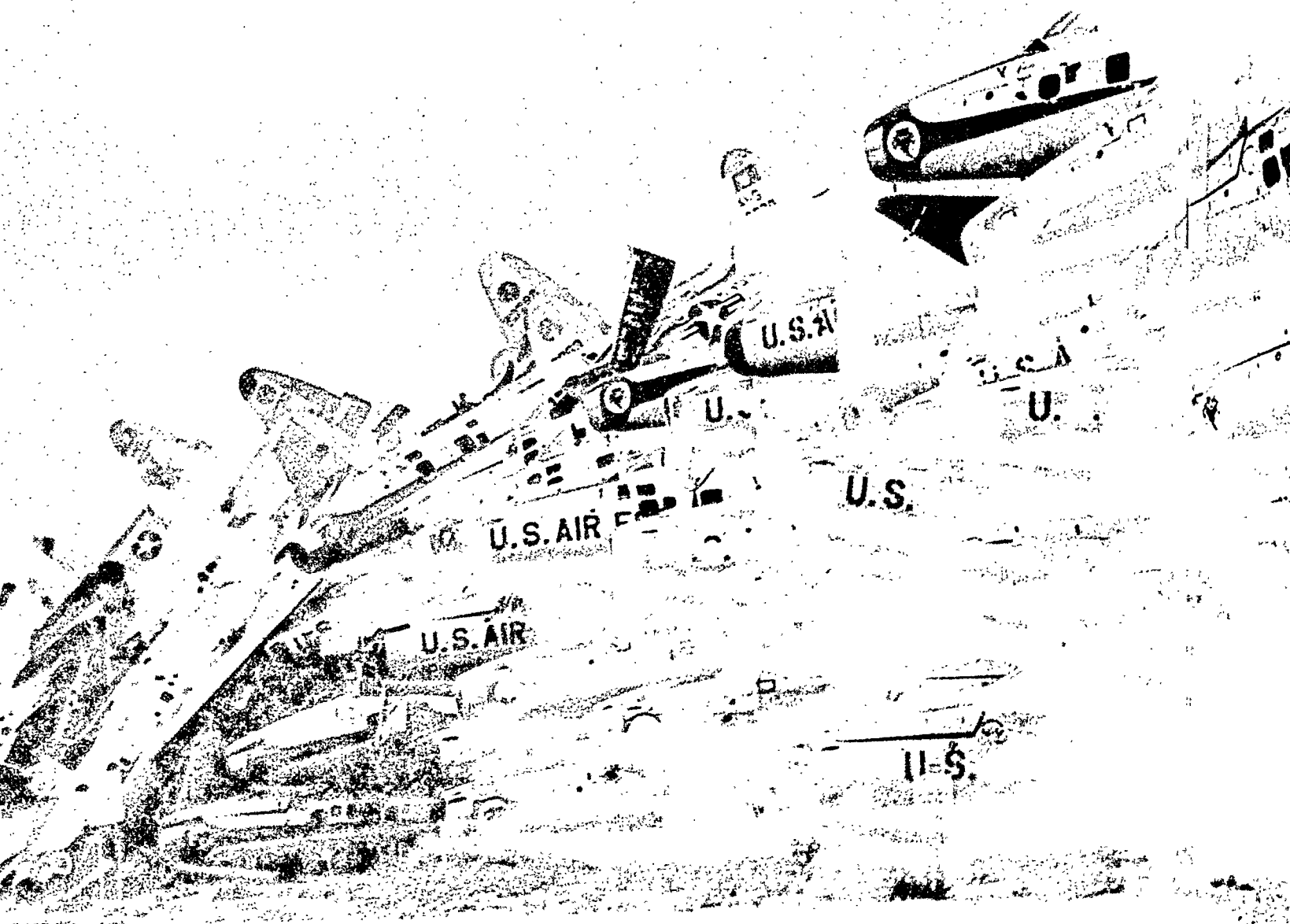
भावी प्रगति के मार्ग का अंकन राष्ट्रपति ने 20 सितम्बर, 1963 को संयुक्त राष्ट्रसंघ के समक्ष किए अपने भाषण में किया:

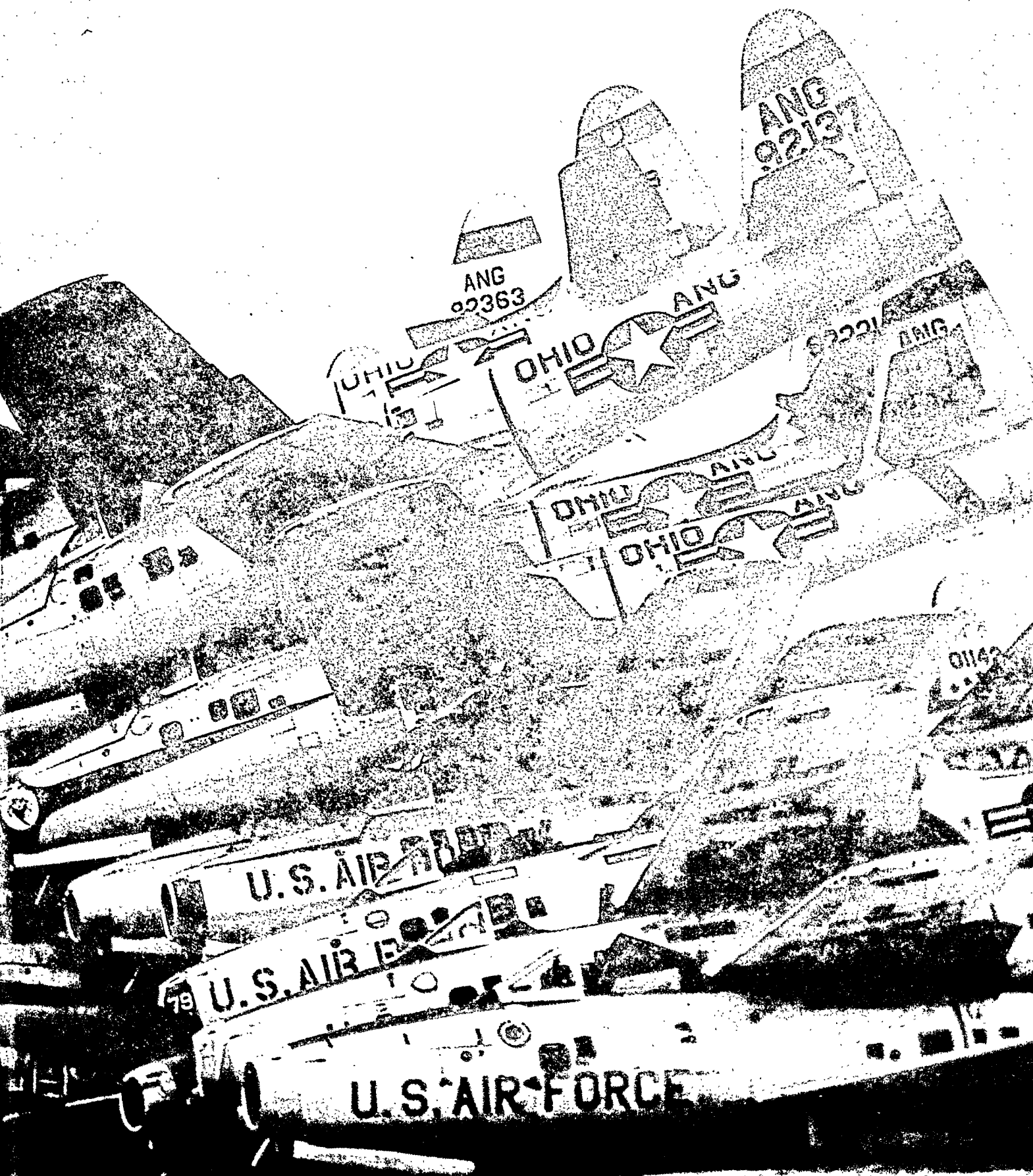
“अगले कदमों-सम्बन्धी विचार-सूची के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं हो सकता। हमें उन उपायों के बारे में समझौते करने की कोशिश करते रहना चाहिए जिनसे दुर्घटनावश या गलती से युद्ध छिड़ना रोका जाए। हमें आकस्मिक आक्रमण से सुरक्षा हासिल करने के समझौते के लिए प्रयास जारी रखने चाहिए जिनमें प्रमुख न्यायों पर ‘निरीक्षण चौकियों’ की स्थापना भी शामिल हो। परमाणु शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता रोकने के और उपायों पर समझौता करने के प्रयास हमें जारी रखने चाहिए। इन उपायों में परमाणु शस्त्रास्त्रों का हस्तांतरण नियंत्रित करना, विस्फोटक पदार्थों की

3. निरस्त्रीकरण

शांतिपूर्ण कार्यों के लिए परिवर्तित करना तथा भूगर्भीय परीक्षणों पर पर्याप्त निरीक्षण तथा प्रवर्तन द्वारा प्रतिबन्ध लगाना शामिल होगा। हमें पूर्व से पश्चिम तथा पश्चिम से पूर्व को अधिक खुले रूप से सूचनाएं तथा लोगों का आना-जाना शुरू करने के लिए समझौतों के प्रयास करते रहना चाहिए।

इन तथा अन्य उपायों द्वारा हमें खड़ी चढ़ाई एवं कठिनाइयों से भरे निरस्त्रीकरण के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए, आपसी पूछताछ करके पारस्परिक विश्वास बढ़ाना चाहिए और जैसे-जैसे हम युद्ध के तंत्र को तोड़ते जाएं, वैसे शांतिपरक संस्थाओं का निर्माण करते चलना चाहिए।***





सकते'



लिण्डन जॉनसन ने कहा था : “उन्होंने हमारे राष्ट्र की शक्ति को मोड़कर उस विश्व की सेवा में लगाया जहां स्वाधीनता तथा शांति-व्यवस्था बढ़ रही है।” और इतिहासकार आर्थर एम० श्लेसिंगर जूनियर ने, जो जॉन कनेडी को भली भांति जानते थे, लिखा : “उनके अन्यतम विश्वासों का जो संसार था, वह स्वरूप तथा ऐतिहासिक घटनाक्रम की दृष्टि से विविधताओं से भरा था—एक ऐसा विश्व जिसमें आर्थिक प्रणालियों, राजनीतिक तंत्रों तथा दार्शनिक विश्वासों की महान विविधताओं को स्थान प्राप्त था। वे अन्य राष्ट्रों तथा अन्य समाजों के पृथक् मूल्यों तथा परम्पराओं और पृथक् अस्तित्वों का सम्मान करते थे। वे अनुभव करते थे कि जिस प्रकार अमरीकी समुदाय में सम्पन्न वर्गों पर विपन्न तथा अरक्षित लोगों का एक दायित्व है, ठीक उसी प्रकार सम्पन्न राष्ट्रों पर उन राष्ट्रों का दायित्व है जो प्रगतिहीनता तथा अभावों के चक्र से निकलने के लिए संघर्षरत हैं।”

जॉन कनेडी ने इसे केवल नैतिक दायित्व ही नहीं माना, वरन् एक सामाजिक आवश्यकता भी समझा। उन्होंने एक बार कहा था : “जो लोग शांतिपूर्ण क्रांति को असंभव बनाते हैं वे उग्र क्रांतियों को अनिवार्य बनाते हैं।” फिर भी संयुक्त राज्य अमरीका में ऐसे लोग थे जो जार्ज वाशिंगटन की 1796 में अपनाई ‘विदेशी झंझटों में न पड़ने’ की नीति का पालन करने के लिए कहते थे। साल्ट लेक सिटी, यूटाह में 26 सितम्बर, 1963 को श्री कनेडी ने आधुनिक विश्व में अमरीकी दायित्वों के विषय में विचार प्रकट करते हुए कहा था :

‘अन्य राष्ट्रों के लोगों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए’

मैं

संयुक्त राज्य अमरीका की स्वदेश तथा आसपास विश्व में विद्यमान शक्ति में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध देखता हूँ। यहां इस देश में जो होता है, उसका संयुक्त राज्य अमरीका की सुरक्षा पर तथा समूचे विश्व में स्वाधीनता के आदर्श पर प्रभाव पड़ता है। अगर यह समाज शक्तिशाली, प्राणवान तथा उद्यमी समाज है, तो स्वाधीनता का आदर्श भी शक्तिशाली, प्राणवान तथा उद्यमी रहेगा।

मैं

जानता हूँ कि इस राज्य तथा अन्य राज्यों के बहुत-से व्यक्ति कभी-कभी आश्चर्य करते होंगे कि आखिर हम कहां जा रहे हैं और संयुक्त राज्य अमरीका संसार-भर के इतने सारे भगड़ों में तथा इतने सारे देशों के मामलों में क्यों उलझा पड़ा है। मैं अनुभव करता हूँ कि इनका भार काफी अधिक है और मैं यह भी मानता हूँ कि इन भंभटों से अपने को मुक्त रखने का यह बड़ा लालच लोगों के मन में आ सकता है कि हमें संयुक्त राज्य अमरीका में ही करने के लिए बहुत कुछ है अतः हमें दुनिया-भर में इतना फंसा नहीं रहना चाहिए। वस्तुस्थिति यह है कि अमरीकियों की यह पीढ़ी हमारे देश की पहली पीढ़ी है जो समस्त भूमण्डल के मामलों में फंसी है। इस देश के आरम्भ से, वाशिंगटन के दिनों से लेकर द्वितीय महायुद्ध के ज़माने तक, यह देश सबसे दूर, सबसे अलग रहता आया है। अपने इतिहास के अधिकांश काल में हम किसी तरफ नहीं रहे, एक पक्षहीन राष्ट्र, एक तटस्थ राष्ट्र रहे हैं। हमारी स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी और इच्छा भी। हमारा विश्वास था कि दो महासागरों के बीच, हम शेष संसार से काफी दूर एकांत में रहते हुए सुरक्षित तथा समृद्ध रह सकेंगे।

परिणामस्वरूप इस एकान्तवासी वृत्ति की समाप्ति का अर्थ हुआ राष्ट्र की हृद्दन्त्री के तारों में एक जोर की भंकार। लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, हम यह अनुभव करते गए कि हमारे एकान्तवास की समाप्ति कोई ज़बर्दस्त गलती या बुराई जैसी चीज़ नहीं थी। हम समझते गए कि यह विकास का—संयुक्त राज्य अमरीका के आर्थिक विकास, सैनिक शक्ति के विकास तथा सांस्कृतिक विकास का—अनिवार्य परिणाम था। कोई भी राष्ट्र जो हमारे राष्ट्र सरीखा शक्तिशाली, इतना प्राणवान तथा इतना धनी होने के बाद अन्य राष्ट्रों से अलग एकान्त में नहीं रह सकता, सो भी उस युग में जब

विज्ञान और टेक्नालाजी संसार को छोटा बनाते जा रहे हैं। ... हमने कभी नहीं चाहा था कि हम एक विश्वशक्ति बन जाएं। किन्तु घटनाक्रम ने हमारे ऊपर यह स्थिति लाद दी है। हम भी उसके अनुरूप बन गए और हमने जो किया उसपर मुझे गर्व है। उन आरम्भिक दिनों के आकर्षण को मैं भली भांति समझ पा रहा हूँ। हममें से प्रत्येक के मन में कामना रहती थी कि काश हमारे वे दिन ही बने रहते! किन्तु दो विश्वयुद्धों ने यह स्पष्ट कर दिया कि हम चाहे कितनी ही कोशिश करें, हम संसार की घटनाओं से अपनी पीठ नहीं मोड़ सकते। अगर हम ऐसा करते हैं तो हम अपनी आर्थिक प्रगति को खतरे में डालते हैं, राजनीतिक स्थिरता को संकट में डालते हैं और अपनी भौतिक सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं।

अमरीकी थोड़ी अवधि में ही, संसार की समस्याओं में उलझने की आवश्यकता काफी कुछ समझने लगे हैं। लेकिन इनमें पड़ने के दबाव एवं तनाव भी होते हैं और उनको हम समूचे देश पर पड़ता अनुभव करते हैं। प्रतिदिन मेरी मेज़ पर जो पत्र आते हैं, उनमें मैं इन तनावों को देख पाता हूँ। ... ऐसा विशाल सैनिक संघ बनाए रखने में, जिसमें दस लाख अमरीकी अपनी सीमाओं से बाहर तैनात हों, दूर दराज़ देशों में विकास सहायता कार्यक्रमों के लिए धन जुटाने में तथा जटिल एवं चकित करनेवाली कूटनीति के संचालन में भारी बोझ हमपर पड़ता है और इसीसे कुछ लोग सलाह देते हैं कि हम कदम पीछे हटा लें और पुनः एकान्तवासी हो जाएं। ...

किन्तु संसार के मामलों में, जैसा कि जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों में होता है, शांत अतीत के दिन सदा-सदा के लिए चले जा चुके हैं। विज्ञान तथा टेक्नालाजी में हुई प्रगति के चक्र को उलटा नहीं घुमाया जा सकता। अगर हम चाहें तो भी पालों वाली नौका चलाने या ढके माल-डिब्बों वाले ज़माने में लौटकर नहीं जा सकते। और अगर हमें राष्ट्रों के आज के वास्तविक जगत् में अपना अस्तित्व बनाए रखना है और सफल होना है, तो हमें विश्व की यथार्थताओं को स्वीकार करना पड़ेगा और उन्हीं यथार्थताओं का मैं यहां उल्लेख करूंगा। सबसे पहले हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हम अपने आदेशों के द्वारा संसार को फिर से नहीं बना सकते। ... प्रत्येक राष्ट्र की अपनी परम्पराएं होती हैं, अपनी मान्यताएं तथा अपनी आकांक्षाएं होती हैं। समय-समय पर हमारी सहायता अन्य राष्ट्रों को अपनी स्वतन्त्रता कायम रखने तथा विकास-कार्य में प्रगति करने में सहायक हो सकती है, किन्तु उन्हें हम अपने ही अनुरूप नये सिरे से नहीं ढाल सकते।

हम उनके कानून नहीं बना सकते, उनकी सरकार नहीं चला सकते और न ही उनकी नीतियों का निर्देशन कर सकते हैं।

दूसरे, हमें यह मानना होगा कि प्रत्येक राष्ट्र अपने हितों की दृष्टि से अपनी नीतियाँ निर्धारित करता है। जार्ज वाशिंगटन ने लिखा था कि किसी भी राष्ट्र पर उससे अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता जितना कि वह अपने हितों के कारण बंधा है और कोई भी समझदार राजनेता अथवा राजनीतिज्ञ इसे भूलकर नहीं चलेगा। राष्ट्रीय हित राजनीतिक सिद्धान्तों से भी अधिक शक्तिशाली हैं। कम्युनिस्ट साम्राज्य के अन्दर हाल में जो घटनाएं घटित हुई हैं, वे इस तथ्य को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं। जैसाकि पामरस्टोन ने लिखा है, मैत्री-लता बढ़ या मुरझा सकती है, किन्तु राष्ट्रीय हित सदैव ही जीवित रहते हैं।

1945 के बाद से तीन राष्ट्रपतियों के कार्यकाल में संयुक्त राज्य अमरीका ने ठीक ही यह निर्णय किया है कि हमारे हितों, हमारी सुरक्षा तथा अमरीका की सबसे अधिक भलाई इसीमें है कि विविधताओं से भरे संसार को बनाए रखा जाए, उसकी रक्षा की जाए जिसमें कोई एक शक्ति या शक्तियों का कोई गुट संयुक्त राज्य अमरीका की सुरक्षा के लिए खतरा उपस्थित न कर सके। अब तक हम संसार के भगड़ों में इतना पड़ते चले गए, उसका कारण विश्व-युद्ध की समाप्ति पर खासकर चीन के कम्युनिस्ट बन जाने पर हमारा यह भय था कि जापान और जर्मनी समाप्त हो जाएंगे और यही दो राष्ट्र थे जो अभी तक सोवियत प्रगति तथा रूसियों के इतने आगे बढ़ने में एक रोक थे कि वह समस्त यूरोप तथा समस्त एशिया पर विजय प्राप्त कर ले और फिर शक्ति-संतुलन हमारे प्रतिकूल हो जाए, हम अन्ततः अकेले पड़ जाएं और फिर आखिर में नष्ट कर दिए जाए। गत अठारह वर्षों से हम इसी बात के लिए प्रयत्नशील हैं कि ऐसा न होने पावे, कोई एक शक्तिपुंज इतनी शक्ति वाला न हो कि संयुक्त राज्य अमरीका को नष्ट कर दे।...

और तीसरे, हमें यह भली भाँति समझ लेना चाहिए कि आधुनिक जगत् में विदेश नीति के कारण आसानी से सीधे-सादे लिखित समझौते नहीं हो पाते। अगर हम केवल उन्हीं देशों से राजनयिक सम्बन्ध रखेंगे जिनके राजनीतिक सिद्धान्तों को हम पसन्द करते हैं, तो शीघ्र ही हमारे सम्बन्ध बहुत थोड़े देशों से रह जाएंगे। अगर हम उन सभी देशों से अपनी सहायता का हाथ खींच लेंगे जो हमारी सरकार से भिन्न पद्धति पर चलते हैं तो हम आधा संसार अपने प्रतिद्वंद्वियों के लिए खाली कर देंगे। अगर हम अपनी विदेश नीति को, अपने से

हीन लोगों को अपने ही धर्म-उपदेश देने का माध्यम बनाएंगे, तो हमें विश्व में अपना प्रभाव रखने या विश्व-नेतृत्व के सारे विचार छोड़ देने चाहिए, क्योंकि विदेश नीति का उद्देश्य अपनी आशाओं या तिरस्कारों के भाव व्यक्त करने का माध्यम बनना नहीं है वरन् वास्तविक विश्व के घटनाक्रम का निरूपण तथा निर्धारण करना है। हम ऐसी नीति नहीं अपना सकते कि जो यह कहे कि यदि जैसा हम चाहते हैं, ठीक वैसा ही न होगा या अन्य लोग हमारी इच्छानुसार ठीक वैसा ही काम न करेंगे तो हम 'अमरीकी दुर्ग' को वापस चले जाएंगे।

इस बदलती दुनिया में, ऐसी नीति पीछे हटने की नीति होगी, शक्ति की नीति नहीं।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्याह-सफेद, सब कुछ या कुछ नहीं वाली नीति हमारे हितों को सर्वोपरि नहीं रखेगी वरन् हमारी भुंभुलाहट को प्रधान बनाएगी। उसके वास्तविक परिणाम हमारी सुरक्षा के लिए घातक होंगे। अगर हम संयुक्त राष्ट्रसंघ को छोड़कर चले आएंगे, जिन देशों को पसन्द नहीं करते, उनसे संबंध तोड़, उन देशों को स्वतंत्र रखने के प्रयास में उन देशों को विदेशी मदद तथा सहायता देना बन्द कर देंगे, वायुमण्डलीय परमाणु-परीक्षण फिर शुरू करने को कहेंगे तथा शेष मानव-जगत् से पीठ मोड़ लेंगे, तो हम न केवल संसार में अमरीका का प्रभाव खो देंगे, वरन् कम्युनिस्ट-विस्तार को आमंत्रित करेंगे जिसका प्रत्येक कम्युनिस्ट देश स्वागत करेगा। और इस प्रकार गत अठारह वर्षों से इतने सारे अमरीकियों ने जो प्रयास किए हैं, वे सब हवा में उड़ जाएंगे।

इस खतरनाक जगत् की इन स्थितियों में हमारी इस नीति का कोई प्रतिरोधक प्रभाव नहीं होगा, क्योंकि वे राष्ट्र जो स्वतंत्र होने का निश्चय करके आगे बढ़ रहे हैं, वे अमरीका पर किसी प्रकार का भरोसा न कर सकेंगे।...

हम अपने आदर्शों, अपने दायित्वों तथा स्वतंत्र तथा विविधता-युक्त भविष्य में अपने हितों का पालन तब तक नहीं कर सकते जब तक कि अनवरत सतर्कता, लगन तथा उससे भी अधिक जुटे रहने, जमे रहने को तैयार न हों, थकान उठाकर प्रयास करने को तैयार न हों, सरल-सुगम उत्तर स्वीकार करने को तैयार न हों, वरन् दायित्वों का भार उठाने को प्रस्तुत हों... संयुक्त राज्य अमरीका को इस शताब्दी के शेष भाग में ऐसा ही करते रहना चाहिए जब तक कि अन्ततः हम एक शांतिपूर्ण विश्व में न रहने लगे।...

‘औरों के

प्रयासों में

सहायता’



शांतिदल का एक डाक्टर अफ्रीका में

विरोधी रिपब्लिकन पार्टी के एक सदस्य ने स्वर्गीय जॉन कॅनेडी को जो श्रद्धांजलि अर्पित की, उसे निश्चय ही उन्होंने सर्वाधिक मूल्यवान समझा होता। सेनेटर कॅनेथ कीटिंग ने कहा था : “‘युवकत्व’ तथा ‘शांति’—ये दो शानदार शब्द उनके प्रशासन पर अमिट अक्षरों में अंकित हैं। इन दोनों ही के लिए किए गए प्रयासों में उनके शासनकाल के हजार दिन और भी गौरवपूर्ण हो गए हैं। शांति-सेनाओं के रूप में—जो कालांतर में उनकी सर्वोत्तम प्रेरणा सिद्ध होगी—उन्होंने उन दोनों को एक-दूसरे में गूँथ दिया था। उन्होंने इन दोनों ही को साथ-साथ विश्व के सामने रखा था। क्या संसार के सामने ऐसा कोई धर्मपूर्ण कार्य हुआ था—युवा अमरीका शांतिपूर्वक शांति के लिए प्रयत्नशील है ? क्या कभी संसार के सामने ऐसा विस्मित कर देनेवाला जगमगाता और कोई उदाहरण है ?”

विश्व-सेवा के लिए राष्ट्र को मोड़ने तथा आगे बढ़ाने के अपूर्व साधन के रूप में शांतिसेना का विचार राष्ट्रपति ने पहली मार्च, 1961 को कांग्रेस को दिए अपने संदेश में प्रकट किया था।

स

मग्न विश्व में नवविकसित देशों की जनता आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए संघर्षशील है जोकि उनकी अन्यतम इच्छाओं की प्रतीक है। हमारी अपनी स्वतंत्रता तथा विश्व-भर में स्वतंत्रता का भविष्य सही अर्थों में इस बात पर निर्भर है कि ये देश

कहां तक स्वयं को विकासशील तथा स्वतंत्र राष्ट्र बना सकते हैं जहां मनुष्य सम्मान के साथ तथा भूख, अज्ञान एवं गरीबी के बंधनों से मुक्त रह सके।

इस उद्देश्य की पूर्ति में सबसे बड़ी एक बाधा है ऐसे प्रशिक्षित स्त्री एवं पुरुषों की कमी जो युवा लोगों को सिखा सकें तथा विकास-परियोजनाओं के संचालन में सहायता दे सकें, जो तेजी से परिवर्तन-शील अर्थ-व्यवस्थाओं की आवश्यकताएं संभाल सकें तथा उनमें ऐसी लगन हो कि वे अपनी इस क्षमता का संघर्षरत दर्जनों राष्ट्रों के गांवों, पहाड़ों, कस्बों तथा कारखानों में प्रयोग कर सकें।

आर्थिक विकास के विशाल कार्य के लिए ऐसे कुशल व्यक्तियों की कड़ी आवश्यकता है जो समाज का काम कर सकें, स्कूलों में शिक्षा देने में सहायक हों, विकास-आयोजनाओं का निर्माण कर सकें, गांवों में सफाई की नई विधियों का प्रदर्शन कर सकें तथा प्रशिक्षण एवं परिपक्व ज्ञान के सैकड़ों अन्य काम कर सकें।

कुशल कर्मियों की इस कड़ी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, हम एक शांतिसेना की स्थापना का प्रस्ताव रखते हैं। यह संस्था अमरीकी स्वयंसेवकों की भरती करेगी तथा प्रशिक्षण देगी और उन्हें अन्य राष्ट्रों के लोगों के साथ काम करने के लिए विदेश भेजेगी।

यह संस्था वर्तमान सहायता-कार्यक्रमों से इस अर्थ से भिन्न होगी कि इसके सदस्य विकासशील राष्ट्रों को विशिष्ट कुशल ज्ञान प्रदान करके तकनीकी सलाहकारों के पूरक के रूप में काम करेंगे। ये लोग आतिथेय सरकार द्वारा आयोजित विकास-परियोजनाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान वाले कर्मचारियों के रूप में व्यक्तिगत त्याग करते हुए काम करेंगे। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि सेवा करने के इच्छुक लोगों की संख्या इतनी अधिक होगी कि हम सबका उपयोग भी न कर सकेंगे।

सबसे अधिक उत्साहवर्द्धक बात यह है कि इस प्रस्ताव के प्रति छात्रवर्ग, व्यावसायिक संस्थाओं तथा सामान्य नागरिकों, सभीने उत्साह प्रकट किया है जो निश्चय ही इस बात को प्रकट करता है कि इस देश में ऐसे लगनशील पुरुषों या महिलाओं की विशाल संख्या है जो अपनी शक्तियों, समय तथा परिश्रम को विश्व-शांति तथा मानव की प्रगति में लगाने के इच्छुक हैं।

शांतिसेना के सदस्य जिन विशिष्ट कार्यक्रमों में काम कर सकते हैं, उनमें से कुछ हैं प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों में अध्यापन, मलेरिया-उन्मूलन के विश्वव्यापी कार्यक्रम में भाग लेना, सांवेजनिक स्वास्थ्य तथा सफाई की परियोजनाएं चलाना तथा इसका प्रशिक्षण देना, स्कूल-निर्माण तथा अन्य कार्यक्रमों के द्वारा गांवों के विकास में सहायता देना, स्थानीय किसानों को आधुनिक उपकरण तथा उत्पादन-विधियां अपनाने में सहायता करके गांवों में कृषि-उत्पादकता बढ़ाना। इनमें अध्यापन-प्रशिक्षण पर मुख्यरूप से जोर दिया

जाएगा।

शांतिसेना केवल युवकों अथवा कालेजों के ग्रेजुएटों तक ही सीमित न होगी। जो भी अमरीकी इस काम को करने योग्य होंगे, इस प्रयास में उनके सम्मिलित होने का स्वागत है। किन्तु निस्संदेह इस शांतिसेना में प्रमुखतः वे युवक ही लिए जाएंगे जो अपना शिक्षा-पाठ्यक्रम पूरा कर चुके होंगे।

स्वतंत्र समाज में उसके सबसे बड़े साधन गैर-सरकारी संगठनों एवं संस्थाओं की शक्ति तथा विविधता होती है, इसलिए शांतिसेना के अधिकांश कार्यक्रमों को ये ही चलाएंगी, हां वित्तीय रूप से संघीय सरकार उनकी सहायता करती रहेगी।

शांतिसेना के सदस्य विकासशील राष्ट्रों को निम्न माध्यमों से सुलभ हो सकेंगे :

1. अंतर्राष्ट्रीय सहायता कार्यक्रम चलानेवाली गैर-सरकारी स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से,
2. कालेजों तथा विश्वविद्यालयों के विदेश-स्थित कार्यक्रमों के द्वारा,
3. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहायता-कार्यक्रमों द्वारा,
4. संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार के सहायता-कार्यक्रमों द्वारा,
5. ऐसे नये कार्यक्रमों द्वारा जिनको शांतिसेना स्वयं सीधे चलाएगी।

हर हालत में शांतिसेना के सदस्य—पुरुष एवं महिलाएं—उन्हीं देशों को भेजे जाएंगे, जहां इनकी वास्तव में आवश्यकता तथा मांग होगी।

शांतिसेना में सेवा-काल की अवधि परियोजना तथा देश के अनुसार कम या अधिक हो सकती है, किन्तु सामान्यतः दो-तीन वर्ष की होगी। शांतिसेना के सदस्यों को कड़ी मशक्कत करनी होगी तथा विकासशील राष्ट्रों के लोगों के बीच पिछड़ी हुई स्थितियों में काम करना होगा। शांतिसेना में भरती होने का अर्थ होगा बहुत बड़ा वित्तीय त्याग। इन्हें कोई वेतन नहीं मिलेगा। इसके बदले उन्हें भत्ता दिया जाएगा जो उनकी बुनियादी आवश्यकताएं पूरी करने तथा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए ही पर्याप्त होगा। यह आवश्यक होगा कि शांतिसेना के सदस्य उन लोगों के बीच सादगी तथा शालीनता के साथ रहेंगे जिनकी सहायता करने वे जाएंगे। अपना विदेशी कार्य पूरा कर चुकने पर शांतिसेना के सदस्य को विदेश में की गई सेवा के हिसाब से थोड़ा-बड़ा धन पर्यायक वेतन के रूप में दिया जाएगा ताकि संयुक्त राज्य अमरीका में वापस आने पर वे प्रथम कुछ मज्जाहों में अपना निर्वाह कर सकें।

यद्यपि यह अमरीकी शांतिसेना होगी, किन्तु संसार के विधान की समस्या कोई एक अमरीकी समस्या ही नहीं है। हम आशा करें कि अन्य राष्ट्र भी अपनी जनता की भावना, शक्तियों तथा कुशलता

को शांतिसेना के किसी रूप में संगठित करेंगे और इस प्रकार हमारा अपना प्रयास सभी मानव-प्राणियों के कल्याण-कार्य बढ़ाने तथा राष्ट्रों के बीच सद्भाव बढ़ाने के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में एक कदम-मात्र सिद्ध हो।

दो वर्ष बाद राष्ट्र के स्वाधीनता दिवस पर श्री कैनेडी ने रिपोर्ट प्रस्तुत की :

शां

तिसेना उस क्रान्ति की भावना का आदर्श उपस्थित करती है जिसके शुभारंभ का समारोह मनाने आज हम एकत्र हुए हैं।

वह क्रान्ति केवल अमरीकी स्वाधीनता तथा स्वतंत्रता के लिए ही एक क्रान्ति नहीं थी, यह ऐसी क्रान्ति है जो भौगोलिक सीमाओं, जाति अथवा संस्कृति से नहीं बंधी है जिसकी कल्पना जैफरसन के मन में उद्भूत हुई थी और जिसकी उद्घोषणा लिंकन ने की थी। यह तो मानव की राजनीतिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता का एक आन्दोलन था।

आज दो शताब्दियों बाद तथा उद्गम-स्थान से हजारों मील की दूरी पर शांतिसेना के पुरुष तथा स्त्रियां उस क्रान्ति की व्यापकता की पुनः पुष्टि कर रही हैं। चाहे वे दक्षिण अमरीका की सामुदायिक विकास-योजनाओं अथवा भारत में पंचायतराज-कार्यक्रम के रूप में अभिव्यक्त हुई हों, किन्तु जनता का स्वतंत्र रहने, अपना शासन स्वयं करने तथा औद्योगिक एवं प्रजातांत्रिक क्रान्तियों के फलों का भागीदार बनने का दृढ़ संकल्प उन सर्वाधिक प्राणवान शक्तियों में है जो संसार में काम कर रही हैं। इस क्रान्ति में शांतिसेना के स्वयं-सेवक उसी प्रकार की भावना तथा अदम्य साहस से प्रेरित होकर काम कर रहे हैं जिस प्रकार की भावना व साहस से 21 वर्षीय लफायत तथा उसीके समान उसके युवा साथियों ने हमारी अपनी क्रान्ति में स्वयंसेवक के रूप में भाग लिया था।

दो साल से भी कम समय में ही उनकी सफलताएं प्रभावशाली सिद्ध हुई हैं। सियरालियोन, इथोपिया तथा न्यासालैण्ड में माध्यमिक स्कूलों में जितने प्रशिक्षित अध्यापक हैं, उनके एक-तिहाई शांतिसेना के स्वयंसेवक हैं, इन्होंने पाकिस्तान में करीब साढ़े सात लाख डालर की चावल की फसल की रक्षा की है, इन्होंने 25,000 बोलिवियाईयों के टीके लगाए हैं, ये फिलीपीन के चार सौ स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। भारत के पंजाब राज्य में इन्होंने फलता-फूलता कुक्कुटपालन उद्योग स्थापित किया है, कोस्टारिका के गांव के हर माध्यमिक स्कूल में ये पढ़ा रहे हैं और ब्रिटिश होण्डुरास के वस्तुतः हर

माध्यमिक स्कूल में ये पढ़ा रहे हैं तथा टांगानिका में इन्होंने खेत से बाजार तक माल ले जानेवाली सड़कों का जाल बनाया है।

ये तो केवल छुटपुट उदाहरण हैं। संसार-भर में इन स्वयंसेवकों ने सड़कों का सर्वेक्षण किया है, छात्रों तथा अध्यापकों को पढ़ाया है, स्कूल बनाए हैं, जंगल लगाए हैं, कुएं खोदे हैं तथा स्थानीय उद्योग-धन्धे शुरू किए हैं। अपने अवकाश के समय में इन्होंने प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएं चलाई हैं, खेल-कद की टीमें बनाई हैं तथा संगीत-क्लबों से लेकर वादविवाद-दल सरीखे अनेक कार्यक्रम चलाए हैं।

ये सफलताएं यों तो महत्त्वपूर्ण हैं लेकिन शांतिसेना के स्वयं-सेवकों द्वारा स्थापित किए जा रहे मानव-सम्बन्धों की तुलना में कहीं कम महत्त्वपूर्ण हैं। ये मानव-सम्बन्ध लोगों के बीच सुखद तथा शांतिपूर्ण समझ बनाए रखने के लिए विद्यमान रहने चाहिए। संयुक्त राज्य अमरीका तथा कुछ अन्य भाग्यवान राष्ट्र विश्वव्यापी निघनता के सागर में समृद्धि के द्वीप हैं। हमारी सम्बलता ने हमें संसार की बहुसंख्यक निर्धन जनता से बार-बार अलग कर दिया है। यह आवश्यक है कि हम यह प्रदर्शित करें कि हम कुछ भाग्यवान राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के विकास तथा प्रगति के प्रयासों में सहायता देने के अपने दायित्व के प्रति भली-भांति सजग हैं।

लार्ड ट्वीड्सम्यू ने लिखा था : “अमरीकियों के लिए सामान्य मानवता-प्रधान भावना आंतरिक तथा चिर सहज भावना है, यह कोई स्कूली उपदेश अथवा बड़प्पन का नारा-मात्र नहीं है।” ऐसे पुरुषों एवं महिलाओं को चुनकर तथा प्रशिक्षण देकर जिनमें यह सहज भावना वास्तव में भरी हुई है, शांतिसेना अमरीका की एक खास किस्म की तस्वीर मिटाने तथा लाखों व्यक्तियों को सर्वप्रथम अमरीकियों के व्यक्तिगत सम्पर्क में लाने में सफल हुई है। जर्मका के विकास-मंत्रों ने लिखा : “जब शांतिसेना मेरे देश में आई, तो उसके स्वयंसेवक अपने साथ एक ताजी हवा लाए। वे आए और आकर जनता के साथ मिले-जुले। उन्होंने लोगों के कंधे से कंधा भिड़ाकर काम किया। उन्होंने दूरियां कम कीं और बाधाओं को समाप्त किया। और चूंकि उन्होंने यह कर दिखाया, इससे हमारे अपने लोगों के लिए भी समझने-बूझने का मार्ग प्रशस्त हो गया।...”

यह मात्र संयोग नहीं है कि शांतिसेना के स्वयंसेवकों की इतनी प्रशंसा हुई है। न ही यह कोई आकस्मिक घटना है कि इनका, ‘इथोपियन हैरल्ड’ के कथनानुसार, “हादिक स्वागत हुआ है।” इनका उत्साहपूर्वक स्वागत इसलिए हुआ है क्योंकि ये एक स्वतन्त्र तथा प्रजातंत्री समाज की सर्वोत्तम परम्पराओं के प्रतीक हैं और इस समाज को अपना अंतिम लक्ष्य बनाने की आकांक्षा रखते हैं।

कम्युनिस्ट-प्रणाली कभी भी मनुष्य को अभीष्ट स्वाधीनता प्रदान नहीं कर सकती। संसार के नवोदित राष्ट्रों की जनता इस बात को भली भांति जानती है। स्वतन्त्र समाज की स्थापना की उनकी आकांक्षा को शांतिसेना के स्वयंसेवकों की उपस्थिति से बल मिलता

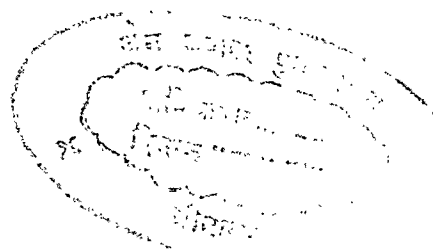
है क्योंकि ये स्वयंसेवक वहाँ की स्थानीय जनता के दायित्वों को हड़पने नहीं, वरन् प्रोत्साहित करने तथा स्थानीय संस्कृति की विशिष्टताओं तथा परम्पराओं का दमन करने नहीं, वरन् उनका सम्मान करने आए हैं। जर्मन विद्वान फिलिप शाफ ने लिखा है: “अमरीका के विषय में सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि वहाँ विविधताओं के बावजूद उच्चतर एकता की भावना है।” विभिन्न जातियों तथा विभिन्न धर्मों के स्वयंसेवक एक ही देश से आए होते हैं, इसलिए वे ऐसे स्वतंत्र समाज की स्थापना की आशा बंधाते हैं, जहाँ प्रत्येक अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सजग होते हुए सभी के कल्याण का सम्मान करेगा।

शांतिसेना का विचार अन्य राष्ट्रों में भी फैल चुका है। पिछले सप्ताह मैं, पश्चिमी जर्मनी के शांतिसेना-कार्यक्रम के औपचारिक उद्घाटन में उपस्थित हुआ था। ढाई सौ युवकों एवं युवतियों का पहला दल अगले वर्ष सेवा के लिए तैयार हो जाएगा और अन्ततः इस कार्यक्रम के अधीन हजार से अधिक जर्मन तैयार किए जाएंगे जो संसार के विभिन्न भागों में काम करेंगे। यूरोप के तीन अन्य देशों—

नीदरलैण्ड्स, डन्मार्क और नार्वे—ने भी इसी तरह के कार्यक्रम आरम्भ किए हैं। इन प्रयासों को अन्तर्राष्ट्रीय शांतिसेना सचिवालय ने प्रेरणा तथा सहायता दी है जिसकी स्थापना प्यूरटोरिको में हुए अन्तर्राष्ट्रीय मध्यवर्गीय जनशक्ति सम्मेलन में की गई थी।...

अ

गले वर्ष बढ़नेवाले स्वयंसेवकों में से तीन हजार तो दक्षिण अमरीका के देशों में तथा एक हजार अफ्रीका में काम करेंगे। इन दोनों ही क्षेत्रों में संयुक्त राज्य अमरीका को ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध हुआ है। दक्षिण अमरीका के देशों में शांतिसेना कुछ ही वर्षों के अन्दर अन्तः-अमरीकी साझेदारी के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय लिख सकेगी तथा पूरे समाज द्वारा प्रजातांत्रिक कार्रवाई करने की संभावनाओं में कमी की ज़बर्दस्त समस्या का समाधान करने में भी प्रमुखतः प्रवृत्त होगी। लाखों-करोड़ों अफ्रीकी विद्यार्थियों को शिक्षा देने का अवसर हमारे इतिहास में पहले कभी नहीं उपस्थित हुआ था।...





‘बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति’

श्री कॅनेडी ने संयुक्त राज्य अमरीका की शक्ति को अधिकाधिक स्वतन्त्रता तथा व्यवस्था वाले विश्व की सेवा में लगाने के लिए किस प्रकार मोड़ा तथा प्रेरित किया, इसका एक अन्य उदाहरण है प्रगति के लिए मंत्री। अपने उद्घाटन-भाषण में उन्होंने पश्चिमी गोलार्द्ध के राष्ट्रों के प्रति एक विशेष प्रतिज्ञा ली कि वे संयुक्त राज्य अमरीका के “अच्छे शब्दों को, प्रगति के लिए मंत्री के रूप में, अच्छे कामों में परिणत करेंगे जिससे स्वतंत्र लोगों तथा स्वतंत्र सरकारों को निर्धनता की जंजीरें तोड़ फेंकने में सहायता दी जा सके।” आपने यह प्रस्ताव 13 मार्च, 1961 को अमरीकी गणराज्यों के राजनयिक प्रतिनिधियों को ‘व्हाइट हाउस’ में जो भोज दिया था, उसमें औपचारिक रूप से प्रस्तुत किया था।

हमारा काम समस्त विश्व को यह दिखाना है कि आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय की मनुष्य की अपूर्त आकांक्षाओं की पूर्ति प्रजातांत्रिक पद्धतियों के अनुरूप स्वतंत्रतापूर्वक काम करने से हो सकती है। अगर हम अपने गोलार्द्ध में अपनी जनता के लिए ऐसा कर दिखाते हैं तो भी हमें महान मैक्सीकन देशभक्त बेनिटो जुआरेज

की यह भविष्यवाणी पूरी करनी है कि “प्रजातंत्र भावी मानवता की चरम गति है।”

...इसलिए मैंने इस गोलार्द्ध के सभी लोगों को प्रगति के लिए इस नई मंत्री—एलियान्ज़ा पाराएल प्रोग्रेसो—में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया है। यह एक विशाल सहकारी प्रयास है जो विशालता तथा सदुद्देश्यता में अपना सानी नहीं रखता जिसका लक्ष्य अमरीकी लोगों की घर, काम तथा भूमि, स्वास्थ्य तथा स्कूल की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी करना है।

...मेरा प्रस्ताव है कि अमरीकी गणराज्य दोनों अमरीकाओं के लिए एक विशाल नई दस वर्षीय योजना आरम्भ करे। यह योजना ऐसी हो कि बीसवीं सदी का यह सातवां दशक ऐतिहासिक दशक बन जाए।...

यहां एक बात स्पष्ट कर दूं कि स्वयं अमरीकी राष्ट्रों के दृढ़ निश्चय के साथ किए गए प्रयत्न ही इस प्रयास को सफल बना सकेंगे। वे, केवल वे ही, अपने साधन संचय कर सकते हैं, अपनी जनता की शक्तियों को जुटा सकते हैं और अपनी समाज-व्यवस्था में परिवर्तन कर सकते हैं जिससे सभी, न कि चन्द सौभाग्यशाली, विकास के सुफलों को चख सकें। अगर ये प्रयत्न किए गए तो बाहरी सहायता भी प्रगति के लिए महत्वपूर्ण प्रेरणा प्रदान कर सकेगी। इसके बिना बाहर की कितनी ही बड़ी सहायता मिले, जनता का कल्याण नहीं हो सकेगा।

इनकी भूख आत्मा को
भारी चोट पहुंचाती है।’

...अगर हमारी मैत्री सफल होती है, तो प्रत्येक दक्षिण अमरीकी योजना ऐसी हो, जिसमें लक्ष्य तथा प्राथमिकताएं निर्धारित की गई हों, जिनसे मुद्रा-सम्बन्धी स्थिरता आए, महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों के लिए तंत्र की स्थापना हो, गैर-सरकारी गतिविधि तथा पहल करने की भावना को प्रोत्साहन मिले तथा अधिकतम राष्ट्रीय प्रयास संभव हो। ये योजनाएं हमारे विकास-प्रयास की नींव होंगी तथा बाहरी साधनों के उपयोग का आधार होंगी।

...हमें आर्थिक एकीकरण के सभी प्रयासों का समर्थन करना चाहिए जोकि अधिक बड़े बाजारों तथा अधिकाधिक प्रतियोगिता के अवसरों की दिशा में असली कदम होगा। दक्षिण अमरीका की अर्थ-व्यवस्थाओं का टुकड़ों में बंटा रहना औद्योगिक प्रगति के लिए बहुत बड़ी बाधा है। मध्य अमरीकी साभा बाजार तथा दक्षिण अमरीका के स्वतंत्र व्यापार-क्षेत्र सखी योजनाएं इन बाधाओं को दूर करने में सहायक हो सकती हैं।

...हम तत्काल 'शांति के लिए खाद्यान्न' का आपत्कालीन कार्यक्रम बढ़ा सकते हैं जिससे बार-बार सूखा पड़नेवाले इलाकों के लिए अन्नागार बनाए जा सकें, बच्चों को स्कूलों में दोपहर का खाना देने में सहायता दी जा सके तथा ग्राम-सुधार के लिए खाने को अन्न दिया जा सके, क्योंकि भूखे व्यक्ति तथा स्त्रियां आर्थिक विचार-विमर्श अथवा कूटनीतिक बैठकों की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। उनकी आवश्यकता तात्कालिक है तथा उनकी भूख का उनके लोगों की आत्मा पर बड़ा कुप्रभाव पड़ता है।

...इस गोलाद्ध के सभी देशों को विज्ञान के दिन दूने बढ़नेवाले चमत्कारों में भागीदार बनने दिया जाए। ये चमत्कार ऐसे हैं कि वे मानव के कल्पनालोक पर छा गए हैं, उसकी मेधाशक्ति को उन्होंने चुनौती दी है तथा तीव्र प्रगति के उपकरण प्रदान किए हैं। मैं दक्षिण अमरीका के वैज्ञानिकों को चिकित्सा, कृषि, भौतिकी एवं खगोल-विज्ञान तथा अपक्षारीकरण के क्षेत्रों में नई परियोजनाओं पर काम करने के लिए और इन तथा अन्य क्षेत्रों के लिए आंचलिक प्रयोग-शालाओं की योजनाएं बनाने तथा अमरीकी विश्वविद्यालयों एवं प्रयोगशालाओं के मध्य सहयोग को सुदृढ़ बनाने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

विज्ञान के अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के अपने कार्यक्रम को बढ़ाकर हम दक्षिण अमरीकी प्रशिक्षकों को भी प्रशिक्षण देना चाहते हैं जिससे अन्य अमरीकी देशों में इस प्रकार के कार्यक्रम स्थापित करने में सहायता मिले और भौतिकी, रसायनशास्त्र तथा गणित-शास्त्र के शिक्षण की जो नई क्रांतिकारी वस्तुएं सुलभ हैं वे उन्हें भी प्राप्त हो सकें और सभी राष्ट्रों के युवकों को विज्ञान की प्रगति में अपने श्रेष्ठ कौशल का योगदान करने का अवसर मिले।

...हमें उन लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था में तेजी से विस्तार करना चाहिए जिन्हें तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्थाओं का

काम संभालना है। इसका अर्थ होगा टैक्नीकल ट्रेनिंग के कार्यक्रमों का विस्तार, जिसके लिए, जहां आवश्यकता हो, शांतिसेना के स्वयं-सेवकों की सेवाएं सुलभ होंगी। इसका अर्थ दक्षिण अमरीका के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा गवेषणा-संस्थानों को सहायता देना भी है।

...हम दक्षिण अमरीका के अपने मित्रों को संयुक्त राज्य अमरीका के जीवन तथा संस्कृति को समृद्ध करने में योगदान देने को आमंत्रित करते हैं। हमें आवश्यकता है कि आपके साहित्य, तथा इतिहास और परंपराओं की शिक्षा देनेवाले अध्यापक हमारे यहां आए और हमारे युवकों को आपके विश्वविद्यालयों में पढ़ने, आपके संगीत, आपकी कला तथा आपके महान दार्शनिकों के विचार जानने-समझने का अवसर मिले।

...हम अमरीकी महाद्वीपों की क्रांति को पूर्ण करने तथा इस गोलाद्ध को ऐसा बनाने का काम पूर्ण करना चाहते हैं जहां सभी व्यक्तियों को उपयुक्त जीवनस्तर प्राप्त हो तथा सभी सम्मान तथा स्वतंत्रता के साथ रह सकें।...

इस राजनीतिक स्वाधीनता के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन भी आने चाहिए। क्योंकि जब तक आवश्यक सामाजिक सुधार, जिनमें भूमि तथा कर-सुधार भी सम्मिलित हैं, स्वतंत्रता के साथ न किए गए, जब तक हम अपने सभी लोगों के लिए अवसरों का विस्तार नहीं करते, जब तक विशाल अमरीकी जनता वृद्धिमान समृद्धि में भागीदार नहीं बनती, तब तक हमारी मैत्री, हमारी क्रांति, हमारे स्वप्न और हमारी स्वतंत्रता निष्फल ही रहेगी। लेकिन हम ये सामाजिक परिवर्तन स्वतंत्र व्यक्ति की भांति करना चाहते हैं, जार्ज वाशिंगटन और जैफरसन, बोलिवर तथा सान मार्टिन एवं मार्टि की भावना के अनुरूप परिवर्तन करना चाहते हैं, ऐसा परिवर्तन नहीं चाहते जिससे व्यक्ति अत्याचार के जुए के नीचे दब जाए जिसे कि हमने डेढ़ सदी पहले उतार फेंका था। हमारा आदर्श सदैव की भांति 'प्रगति हां, अत्याचार नहीं' ही रहेगा।

और 17 अगस्त, 1963 को श्री कैंनेडी राजनयिक प्रतिनिधियों के समक्ष यह रिपोर्ट प्रस्तुत कर सके:

प्रगति के लिए मैत्री की इस दूसरी वर्षगांठ पर मैं इस अल्प अवधि में की गई प्रगति से बड़ा हर्षित हुआ हूँ। दक्षिण अमरीका के देशों में एक शांतिपूर्ण क्रांति आ रही है जिससे इस गोलाद्ध में हमारे करोड़ों अमरीकी भाइयों को अच्छा जीवन आने में सहायता मिलती है।

पहले दो वर्षों में हुई प्रगति तो शुरुआत-मात्र है लेकिन यह बहुत ही शानदार है। लगभग एक लाख चालीस हजार नये मकान बना दिए गए हैं, गंदी बस्तियां साफ करने की परियोजनाएं शुरू की गई हैं, आठ हजार दो सौ नई कक्षाओं की इमारतें बन गई हैं, सात सौ से अधिक नई जल-प्रणालियां बना दी गई हैं, जहां पानी में गन्दगी के कारण बीमारियां व्यापक रूप से फैलने का खतरा था, अनेक देशों में भूमि-सुधार तथा कर-सुधार के कानून बनाए गए हैं, एक लाख साठ हजार से अधिक कृषि-ऋण दिए गए हैं तथा चालीस लाख से ऊपर स्कूल-पुस्तकें वितरित की गई हैं, दो साप्ताहिक बाजार करारों को नई प्रेरणा मिल रही है, विश्व के बाजार में कॉफी के भाव स्थिर करने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाया गया है, 'शांति के लिए खाद्य' कार्यक्रम के अधीन अठारह देशों में नब्बे लाख से अधिक बच्चों को खाना दिया जा रहा है तथा सड़क-निर्माण-कार्य, खास-कर कुछ कृषि-क्षेत्रों में, तेजी के साथ चल रहे हैं।

...आरम्भ के दो वर्ष तो शुरुआत-मात्र हैं। लेकिन मेरी यह आशा है कि मेरे देश के लोग तथा इस गोलार्द्ध के अन्य देशों के लोग इस महाद्वीप को, इस गोलार्द्ध को, यहां के रहनेवाले हम सब लोगों के लिए गौरव का स्रोत तथा समस्त विश्व के लिए प्रेरणा-स्रोत बनाने के इस महान अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास के लिए मिलकर काम करते रहेंगे।...



'नई जल-प्रणालियों का निर्माण किया गया है।'

‘अपने आसपास के विश्व के स्वरूप में परिवर्तन’

“अंज्ञावात में आप स्थिर नहीं रह सकते। और परिवर्तन का अंज्ञावात समूचे विश्व में चल रहा है।” इन शब्दों में जॉन केंनेडी ने 15 सितम्बर, 1960 को पैरामस, न्यूजर्सी में दिए एक भाषण में सूत्ररूप में अपनी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मूलभूत दर्शन बताया था। अपने इसी दर्शन को उन्होंने यूरोप, मध्यपूर्व, अफ्रीका, एशिया तथा दक्षिण अमरीका में समान रूप से लागू किया, क्योंकि इन सभी क्षेत्रों में परिवर्तन का अंज्ञावात वह रहा था।

‘फारेन अफेयर्स’ नामक पत्रिका में अक्टूबर, 1957 के अंक में उन्होंने इसी बात को इस प्रकार लिखा था :

आज की अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर दुहरे तनाव पड़ रहे हैं—एक तो नवोदित राज्यों द्वारा अपने राजनीतिक अस्तित्व की खोज तथा दूसरे विश्व के पुराने राज्यों द्वारा एकता की खोज।...हमारे सामने काम यह है कि हम राष्ट्रीय आत्मनिर्णय की उचित भावना, जो गुटबन्दी से दूर रहनेवाले राष्ट्रों में व्याप्त है, तथा एकता की ओर गुरुत्वाकर्षणपूर्ण उस खिंचाव के बीच वास्तविकतापूर्ण संतुलन स्थापित करें जो आजकल के राष्ट्रों की दैनिकालाञ्जीकल तथा आर्थिक अन्योन्याधिता के फलस्वरूप पैदा होता है। राजनीतिक

भावी पीढ़ी के लिए :

‘ऐसा विश्व जिसमें कानून का शासन हो
और स्वतंत्र निर्णय करने की स्वाधीनता’



5. पारस्परिक निर्भरता

प्राक्षेपिकी की यह बहुत कठिन कसरत है। संसार के विभिन्न भाग राजनीतिक स्वाधीनता के प्रक्षेप-पथ के अनेक विरोधी बिन्दुओं पर स्थित है। प्रजातांत्रिक स्वशासन तथा विशाल राष्ट्रीय विलयन की भी कुछ पूर्व शर्तें होती हैं—स्वशासन करने की क्षमता तथा सम्मिलित हित। ये चीजें फौजी भय अथवा आदर्शात्मक आवेगों से पैदा नहीं की जा सकतीं।

राष्ट्रपति के रूप में श्री कॅनेडी ने इस वास्तविकतापूर्ण संतुलन की स्थापना के लिए नाटकीय कदम उठाए जिसके लिए एक प्राणवान, समृद्ध राष्ट्र-समुदाय के लिए आपने 'महान मोर्चा' बनाया था। आपने यूरोप में अमरीकी साझेदारी का प्रस्ताव रखा जिसका एकमात्र उद्देश्य अधिकाधिक अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के द्वारा संसार के विकासशील राष्ट्रों में से गरीबी समाप्त करना है। आपने संयुक्त राज्य अमरीका के स्वाधीनता घोषणा दिवस 4 जुलाई, 1962 का दिन पारस्परिक निर्भरता की विश्वव्यापी घोषणा करने के लिए ठीक ही चुना। उस दिन फिलेडेल्फिया के स्वाधीनता हाल में, जहां 'स्वाधीनता घोषणापत्र' स्वीकार किया गया था, भाषण करते हुए आपने राष्ट्रव्यापी रेडियो टेलीविज़न दर्शकों के समक्ष कहा :

“...186 वर्ष बाद वह घोषणापत्र आज भी एक क्रांतिकारी दस्तावेज़ है। आज भी उसे पढ़ते समय आह्वान का विगुल कानों में गूँजने लगता है। ...उसके निर्माणकर्ताओं की भली भाँति पता था कि इसके कितने ऊँचे विश्वव्यापी फलितार्थ होंगे। जार्ज वाशिंगटन ने घोषणा की थी कि संसार में कहीं भी स्वाधीनता तथा स्वशासन की स्थापना उन्हींके शब्दों में कहें तो, “अंततः उस परीक्षण के परिणाम पर निर्भर है, जो अमरीकी जनता के हाथों चल रहा है।”

उनकी यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई है। गत 186 वर्ष से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के इस आधारभूत सिद्धान्त ने समूचे विश्व को हिला दिया है और आज यह सर्वत्र विश्व की सर्वाधिक बलवती शक्ति है। ऐसे भी लोग हैं जो बंजर जमीन में किसी तरह अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, जिन्होंने कभी स्वतन्त्र समाज की बात सुनी भी न थी लेकिन वे स्वाधीनता की भावना के आकांक्षी हैं। ऐसे भी जनसमुदाय हैं जो अशिक्षा व अस्वास्थ्य की ज़बरदस्त समस्याओं से जूझ रहे हैं तथा जिनके पास स्वतन्त्र चुनाव कराने की व्यवस्था

नहीं है। लेकिन वे भी राष्ट्रीय स्वाधीनता का दामन कसकर पकड़े रखने के लिए कृतसंकल्प हैं। जो देश पूर्व एवं पश्चिम के बीच किसी संघर्ष में पड़ना नहीं चाहते या पड़ने की स्थिति में नहीं हैं, वे भी अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता बनाए रखने के लिए खम ठोककर खड़े हैं।

आज विश्व को बाँटनेवाली कोई समस्या है तो वह स्वाधीनता है, बर्लिन, लाओस या वियतनाम की स्वतन्त्रता, लौह-आवरण के पीछे स्वाधीनता की कामना तथा उन नवोदित राष्ट्रों द्वारा स्वाधीनता की ओर उन्मुख होना जिनकी परेशानियों से दूसरे लोग लाभ उठाना चाहते हैं।

स्वतन्त्रता का सिद्धान्त उतना ही प्राचीन है, जितना स्वयं मानव और उसका आविष्कार इस सभा-भवन में नहीं हुआ था। लेकिन इस सभा-भवन में ही इस सिद्धान्त ने अमली जामा पहना था। थामस जैफरसन के शब्दों में तभीको वह अमरवाणी सुन पड़ी थी कि “जिस ईश्वर ने हमें जीवन दिया है, उसीने इसके साथ-साथ हमें स्वाधीनता भी दी।” और आज यह राष्ट्र जो क्रांति के बीच जनमा, स्वच्छंदता के बीच पोषित हुआ, तथा स्वतन्त्रता के बीच फला-फूला, स्वाधीनता के विश्वव्यापी आन्दोलन का नेतृत्व छोड़कर उसे ऐसे किसी राष्ट्र या ऐसे समाज के हाथों सौंपने को तैयार नहीं जो योजनापूर्वक मानव-दमन का सिद्धान्त लेकर चल रहा हो।

आज स्वाधीनता का घोषणापत्र जिस प्रकार मान्य एवं वरेण्य है, उसी प्रकार इस सभा-भवन के दूसरे ऐतिहासिक दस्तावेज़ संयुक्त राज्य अमरीका के संविधान का सम्मान करना उपयुक्त रहेगा। क्योंकि इसमें न केवल स्वाधीनता वरन् पारस्परिक निर्भरता पर, एक की वैयक्तिक स्वाधीनता पर नहीं वरन् सभीकी अविभाज्य स्वतन्त्रता पर बल दिया गया है।

पुराने औपनिवेशिक जगत् के अधिकांश भाग में स्वाधीनता का संघर्ष सफल समाप्ति की ओर अग्रसर है। लौह-आवरण के पीछे रखे गए इलाकों में भी 'स्वाधीनता की बीमारी' अब फैलती जा रही है। पुराने जमाने के साम्राज्य समाप्त हो जाने पर आज विश्व की मुश्किल से दो प्रतिशत जनता रह गई है जिसे सरकारी तौर पर 'पराधीन' कहा जा सकता है। अमरीका के स्वतन्त्रता के घोषणापत्र से प्रेरित हुए स्वाधीनता के प्रयास ज्यों-ज्यों सफलता की चरमसीमा तक बढ़ते जा रहे हैं, पारस्परिक निर्भरता का एक नया महान प्रयास हमारे आसपास की दुनिया को बदलता जा रहा है। इस नये प्रयास की भावना वही है जिस भावना ने अमरीकी संविधान का सृजन किया था।

वह भावना आज अंध महासागर के पार बहुत स्पष्टता के साथ दिखाई पड़ती है। पश्चिमी यूरोप के जो राष्ट्र तेरह उपनिवेशों के बीच विद्यमान संघर्षों से भी अधिक कटु झगड़ों के कारण एक लम्बे अरसे से विभक्त थे, आज मिलकर एक हो रहे हैं और हमारे पुरखों

की तरह विचार-वैभिन्य के बाद भी स्वाधीनता तथा मिलकर शक्ति बढ़ाने की दिशा में अग्रसर हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका इस विशाल नये उद्यम की आशा तथा प्रशंसा की दृष्टि से देखता है। हम शक्तिशाली एवं संगठित यूरोप को अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं बरन् अपना साथी समझते हैं। इसको प्रगति करने में सहायता देना हमारी विदेश नीति का गत सत्रह वर्षों से मुख्य उद्देश्य रहा है। हमारा विश्वास है कि संगठित यूरोप सम्मिलित रक्षा-व्यवस्था में अधिक महत्त्व की भूमिका अदा कर सकेगा, निर्धन राष्ट्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति में अधिक उदारता से भाग ले सकेगा, संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य देशों से मिलकर व्यापार-प्रतिबंध कम करने, वाणिज्य, वस्तुओं तथा मुद्रा की समस्याओं को हल करने तथा आर्थिक, राजनीति एवं कूटनीति के सभी क्षेत्रों में समन्वित नीतियों का विकास करने में सहायक हो सकेगा। इस प्रकार का यूरोप एक ऐसा भागीदार सिद्ध हो सकता है जिसके साथ हम स्वतन्त्र राष्ट्र-समुदाय की रक्षा तथा निर्माता के सभी महान तथा दायित्वपूर्ण कार्यों में समानता के आधार पर व्यवहार कर सकते हैं।

इस समय इस साझेदारी के निर्माण के प्रति अपनी उच्च आदर-भावना प्रकट करने के अलावा कुछ और कह सकना समय से पहले की बात होगी। इस सिलसिले में हमारे यूरोपीय मित्रों को अधिक-पूर्णता वाले संघ बनाने की दशा में प्रवृत्त होना चाहिए जिससे आगे चलकर अमरीका एवं यूरोप की यह साझेदारी संभव हो सके।

कोई भी नई महान मूर्ति रातोंरात नहीं बन जाती।।।।

लेकिन मैं आज इस समय इस स्वाधीनता दिवस पर यह अवश्य कहना चाहूंगा कि संयुक्त राज्य अमरीका पारस्परिक निर्माण की घोषणा करने के लिए तैयार है, हम संयुक्त यूरोप के साथ एक ठोस अटलांटिक साझेदारी बनाने के उपायों पर विचार करने के लिए तैयार हैं। यूरोप में पनप रहे नये संघ तथा 175 वर्ष पहले स्थापित अमरीकी संघ के बीच यह साझेदारी दोनों ही के लिए लाभप्रद होगी।

यह सब कुछ एक वर्ष के अन्दर ही प्राप्त नहीं हो जाएगा, किन्तु सारा विश्व समझ ले कि यह हमारा उद्देश्य है।

संयुक्त राज्य अमरीका का संविधान स्वीकार करने का अनुरोध करते हुए अलैग्ज़ेंडर हैमिल्टन ने अपने न्यूयार्कवासी वंधुओं से कहा था कि वे "समूचे महाद्वीप की दृष्टि से सोचें।" आज अमरीकियों को अन्तर्महाद्वीपीय दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए।

अपने-आप अपनी तरफ से ही कार्रवाई करके हम संसार-भर में न्याय-व्यवस्था स्थापित नहीं कर सकते, हम विश्व में आंतरिक शांति बनाए रख नहीं सकते या उसकी सम्मिलित रक्षा-व्यवस्था नहीं कर सकते या सार्वजनिक कल्याण नहीं कर सकते अथवा स्वतंत्रता की शुभाकांक्षाएं अपने ही तथा अपनी समृद्धि के लिए ही प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रों के साथ मिलकर हम

यह सब ही नहीं, और कुछ भी कर सकते हैं। हम अपने विश्वव्यापी व्यापार तथा भुगतान-व्यवस्था को उच्चतम सम्भव स्तर पर संतुलित कर सकते हैं। हम ऐसी प्रतिरोधक शक्ति अर्जित कर सकते हैं जो किसी भी आक्रमण को रोकने के लिए पर्याप्त सामर्थ्यवान हो। और अन्ततः हम ऐसी विश्व-व्यवस्था बना सकते हैं जिसमें न्याय-व्यवस्था तथा स्वतन्त्र विकल्प प्रधान हों, युद्ध तथा दमन नहीं।

जिस अटलांटिक साझेदारी की बात मैंने कही है, वह केवल अंतर्मुखी ही नहीं होगी, अपने ही कल्याण तथा प्रगति में नहीं उलझी रहेगी। वह बहिर्मुखी होगी जिससे हम अन्य समस्त राष्ट्रों की सामूहिक चिन्ता के विषय का सामना करने में सहयोगी बन सकें। यह उन समस्त स्वतन्त्र राष्ट्रों के संघ का अंकुर सिद्ध हो सकती है जो आज स्वतन्त्र हैं तथा जो प्रयत्नशील हैं कि एक दिन तो हम भी स्वतन्त्र होंगे।।।।

विकास-पथ पर अग्रसर राष्ट्रों को अन्तर्राष्ट्रीय सहायता बढ़ाने की आवश्यकता का प्रथम विस्तृत विश्लेषण राष्ट्रपति ने अपने उस संदेश में किया जो उन्होंने कांग्रेस को 22 मार्च, 1961 को दिया था।

बी

सवीं सदी के सातवें दशक में स्वतन्त्र उद्योग-प्रधान राष्ट्रों को एक ऐतिहासिक अवसर सुलभ हुआ है जब वे कम विकसित देशों की आधे से अधिक जनता को स्वचालित आर्थिक विकास की अवस्था में पहुंचाने के लिए बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता दे सकते हैं, जबकि शेष राष्ट्र उस दिन के नजदीक आते जाएंगे जब उन्हें भी किसी प्रकार की बाहरी सहायता की आवश्यकता न होगी।।।।

हम इतिहास के एक बहुत ही विशेष युग में रह रहे हैं।।।। दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, मध्यपूर्व तथा एशिया ऐसे संघर्ष में पड़े हुए हैं, जिसमें उन्हें अपनी स्वाधीनता की बात खम ठोककर करनी है और पुरानी जीवन-पद्धति त्यागकर नई अपनानी है। इन नये राष्ट्रों को ऋण के रूप में सहायता तथा तकनीकी मदद की इसी प्रकार आवश्यकता है, जिस प्रकार औद्योगीकरण तथा नियमित विकास के युग में चलते समय उत्तरी गोलार्द्ध के हम लोगों ने एक-दूसरे की पूंजी तथा तकनीकी ज्ञान का लाभ उठाया था।

लेकिन हमारे युग में नये राष्ट्रों को सहायता की जरूरत एक विशेष कारण से है। किसी अपवाद के बिना उनपर कम्युनिस्ट दबाव बढ़ रहा है। कुछ देशों में तो एकदम सीधा तथा सैनिक दबाव बढ़ रहा है। अन्य देशों में उसने व्यापक विध्वंसात्मक कार्रवाइयों का रूप धारण कर लिया है जिसका उद्देश्य उन राष्ट्रों में स्थापित हुई नई और अक्सर कमजोर आधुनिक जीवन-पद्धतियों को रंग करना

5. पारस्परिक निर्भरता

तथा नष्ट करना होता है।

किन्तु उन्नीस सौ साठ के बाद के दशक में हमारी वैदेशिक सहायता का आधारभूत उद्देश्य नकारात्मक रूप में साम्यवाद से लड़ना ही नहीं। इसका मूलभूत लक्ष्य एक ऐतिहासिक प्रदर्शन किए जाने में सहायता करना है कि बीसवीं सदी में उन्नीसवीं सदी की भांति भूमण्डल के दक्षिणी गोलार्द्ध में भी उत्तरी गोलार्द्ध की भांति राजनीतिक प्रजातन्त्र और आर्थिक विकास दोनों साथ-साथ हो सकते हैं।

संक्षेप में, हमें उत्तरदायित्वों को ही पूरा नहीं करना है, वरन् जो महान अवसर उपलब्ध हुए हैं, उनका लाभ उठाना है। मेरा निश्चित मत है कि हम स्वतन्त्र उद्योग-प्रधान राष्ट्र एक सच्चे संयुक्त तथा प्रमुख प्रयास की देहली पर हैं, जिसके अनुसार दीर्घकालीन आधार पर कम विकसित देशों की सहायता कर सकते हैं। इन अल्प विकसित देशों में से कुछ देश तो पर्याप्त आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक शक्ति प्राप्त करनेवाले हैं जब वे आत्मप्रेरित विकास के द्वारा स्थायी रूप से अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। 1960 के बाद का यह दशक अत्यन्त गम्भीरतापूर्ण 'विकास दशक' बन सकता है तथा बनना भी चाहिए जिसमें चलकर अनेक अल्पविकसित आत्मप्रेरित विकास-युग में प्रवेश कर सकते हैं—वह एक ऐसा युग बन सकता है जिसमें स्वतन्त्र, स्थिरता वाले तथा आत्मनिर्भर राष्ट्र विश्व में तनाव तथा असुरक्षा की भावना कम कर सकते हैं।

यह लक्ष्य प्राप्त करना हमारी सामर्थ्य के अन्दर है, बशर्ते कि अन्य उद्योगप्रधान राष्ट्र भी सहायता पानेवाले राष्ट्रों के साथ मिलकर सम्मिलित रूप से स्वीकार्य मानदण्ड, दीर्घकालीन लक्ष्य-तथा इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सम्मिलित प्रयास करना तय कर लें जिसमें प्रत्येक राष्ट्र का योगदान अन्य राष्ट्रों के योगदान के आधार पर तथा प्रत्येक अल्पविकसित राष्ट्र की ठीक-ठीक आवश्यकताओं के आधार पर निर्धारित किया गया हो। हमारा काम उसके व्यापक अर्थ में विश्व के उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्द्धों के बीच एक नई साझेदारी स्थापित करना है जिसमें सभी स्वतन्त्र राष्ट्र योगदान कर सकते हैं जिसमें प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र को अपने साधनों के अनुपात में दायित्व उठाना चाहिए।

राष्ट्रपति के अनुरोध पर कांग्रेस ने एक नई अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी स्थापित करने की अनुमति दे दी जिससे स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका के अलग-अलग और प्रायः उलझन वाले सहायता-कार्यक्रमों को मिलाकर एक व्यवस्थित रूप दिया जा सके। कांग्रेस ने धन की स्वीकृति भी

दी ताकि विकास दशक का श्रीगणेश करना सम्भव हो सके।

उसी वर्ष सितम्बर में श्री कैंनेडी ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को सुझाव दिया कि बीसवीं सदी का सातवां दशक अधिकृत रूप से संयुक्त राष्ट्रीय विकास दशक घोषित कर दिया जाए ताकि "सभी राष्ट्र...वस्तुतः तथा कानूनी दृष्टि से स्वतन्त्र तथा समान स्तर के राष्ट्र बन सकें।" तीन महीने बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा ने उनके इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया।

‘आर्थिक

स्वाधीनता का

अंचल’

राष्ट्रपति जॉन कैंनेडी ने 25 जनवरी, 1962 को कांग्रेस को दिए एक सन्देश में कहा: "हमारी विदेश नीति की सफलता बहुत हद तक हमारे वैदेशिक व्यापार पर निर्भर है और पश्चिम की राजनीतिक एकता उतने ही अंशों तक पश्चिमी आर्थिक एकता बनाए रखने पर निर्भर है।" उस वर्ष कांग्रेस ने उनका नया व्यापार-विस्तार अधिनियम स्वीकार कर लिया, जिसके अनुसार संयुक्त राज्य अमरीका को 'स्वतन्त्र विश्व के देशों में विकास तथा एकता बढ़ाने की एक प्राणवन्त शक्ति के रूप में' विश्व-व्यापार बढ़ाने की अनुमति दी गई थी।

राष्ट्रपति ने अनुभव किया कि अमरीकी व्यापार-कार्यक्रम 'उस महान आयोजन' की आधारशिला है। कांग्रेस को दिए अपने एक सन्देश में उन्होंने कहा:

ते

जी से बदल रही विश्व की अर्थव्यवस्था की चुनौतियों का सामना करने तथा अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक नई अमरीकी व्यापारिक पहल की आवश्यकता है।...बुनियादी तौर पर नये तथा जबरदस्त परिवर्तनों के कारण हमारी परम्परागत व्यापार-नीति पुरानी पड़ गई है:

—यूरोपीय साम्राज्य बाजार बन जाने से अटलांटिक संधि वाले देशों की अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन आने का आधार बन गया है। स्वतन्त्र विश्व का करीब-करीब नव्वे प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन (यदि ब्रिटेन तथा अन्य देशों की भी साम्राज्य बाजार में शामिल होने की वार्ता सफल हो जाती है) शीघ्र ही दो बड़े-बड़े बाजारों—संयुक्त राज्य अमरीका तथा विस्तृत यूरोपीय आर्थिक समुदाय—में केन्द्रित हो जाएगा। बहुसंख्यक छोटे-छोटे स्वतन्त्र देशों के साथ हर वस्तु का तटकर घटाने की वार्ता करने के लिए उपयुक्त व्यापार-नीति, हमारे लिए तथा कनाडा, जापान, दक्षिण अमरीका तथा हमारे अन्य व्यापारिक सहयोगियों के लिए, उस बाजार में, जो हमारे अपने बाजार के समान ही बड़ा है, वखूबी प्रवेश सुलभ करने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमारी तरफ से बातचीत करनेवाले एक स्वर से तो बोल सकते हैं, लेकिन आंतरिक मतभेदों के कारण प्रत्येक वस्तु के बारे में बातचीत करना असम्भव है।

—हाल के वर्षों में कम्युनिस्टों का सहायता एवं व्यापारिक आक्रमण अधिक खुलकर सामने आ गया है। विश्व के अल्पविकसित क्षेत्रों के इकतालीस गैर-कम्युनिस्ट देशों के साथ सोवियत रूस के गुट का व्यापार हाल के वर्षों में तिगुना हो गया है और सोवियत गुट के व्यापार-प्रतिनिधि-दल प्रत्येक महाद्वीप के अन्दर सक्रिय हैं और वे स्वतन्त्र विश्व में घुसना चाहते हैं, उसे घेरना तथा विभक्त करना चाहते हैं।

—जापान तथा विकासशील राष्ट्रों की नये बाजारों की आवश्यकता इतनी बढ़ गई है जितनी पहले कभी नहीं बढ़ी थी। इसका एक कारण जहां यूरोपीय आर्थिक समुदाय द्वारा बाहरी माल पर लगाए तटकरों का सम्भावित प्रभाव है, वहां अपने कच्चे माल तथा हलके तैयार माल के लिए नये बाजार देखने की आवश्यकता भी है।

—अटलांटिक महासागर के इस पार से उस पार के देशों के बीच अधिक मुक्त रूप से व्यापार होने पर दोनों तरफ के दो विशाल बाजार एक-दूसरे को शक्ति प्रदान करेंगे तथा अपने साधन मिलाकर... ऐसे अनेक उद्यम हाथ में लेंगे जिनकी स्वतन्त्र देशों की सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यकता है।...

इस प्रकार स्वतन्त्र निर्णय करने की उत्कृष्टता सिद्ध करने के प्रयास में अपरिमित लाभ होगा।... हम स्वतन्त्र विश्व के उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के पसन्द के नये मार्ग तथा नये अवसर खोलेंगे। जो लोग संसार के देशों से कहते फिरते हैं कि आर्थिक प्रगति और स्वतन्त्र समाज साथ-साथ नहीं चल सकते, उनको मुंहतोड़ उत्तर देते हुए हम लोगों को, जो एक अरसे से खुले बाजार तथा स्वतन्त्र प्रतियोगितापूर्ण उद्योग-धंधे चलाने किसी भी बाजार में प्रतियोगिता करके अपना माल बेच सकने तथा बदलते जमाने के साथ-साथ चलने के लिए तैयार रहने के बारे में गर्वोक्ति करते आए हैं, मार्शल योजना के बाद सबसे बड़ा अवसर मिलेगा, जब हम स्वतन्त्र निर्णय प्रणाली

की शक्ति का प्रदर्शन कर सकेंगे।...

किन्तु संसार के विकासशील राष्ट्रों तथा अन्य मित्रों की सहायता करने के हमारे प्रयास स्वतन्त्र समाज की शक्ति तथा लाभों के प्रदर्शन से कहीं अधिक दृढ़ आधार पर निर्भर होंगे। अगर उनकी अर्थव्यवस्था का विस्तार होना है, अगर उनके नये उद्योगों को सफल होना है, अगर उन्हें हमारी सहायता के रूप में मिलनेवाले धन के स्थान की पूर्ति करने के लिए स्वयं विदेशी मुद्रा कमाना है, तो इन राष्ट्रों को अपने कच्चे मालों तथा नये निमित्त मालों के लिए नये बाजार ढटोलने ही होंगे। हमें यह निश्चित तय कर लेना चाहिए कि हम यूरोपीय आर्थिक समुदाय के साथ जो भी व्यवस्था करें, वह इस तरह से बनाई जाए कि तीसरे अन्य देशों के विरुद्ध उसको भेदभाव-पूर्ण रूप में लागू न किया जा सके। लेकिन इससे भी अधिक महत्व की बात यह है कि संयुक्त राज्य अमरीका और यूरोप की संसार के अन्य अल्पविकसित देशों के प्रति एक संयुक्त जिम्मेवारी है और इस दृष्टि से हमें उनकी उचित आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।... इस प्रकार स्वतन्त्र विश्व का नेतृत्व अपने हाथ से बनाए रखने के हमारे प्रयास अन्तिम विश्लेषण करने पर इस महान उद्देश्य में हमारे सफल होने न होने पर निर्भर हैं। आर्थिक रूप से अपने को अलग रखना और राजनीतिक रूप से नेतागिरी, दोनों बातें साथ-साथ कभी नहीं चल सकतीं।... अगर हमें अपना नेतृत्व कायम रखना है तो पहल भी हमीं-को करनी होगी। जो क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, वे इस बात के लिए प्रतीक्षा न करेंगे कि हम अपना इस या उस पार निश्चय कर लें। संयुक्त राज्य अमरीका ने स्वतन्त्र जगत् के आर्थिक स्वरूप में जबर्दस्त परिवर्तन को प्रोत्साहन दिया है जिससे स्वतन्त्रता की शक्तियों को बल मिले। लेकिन हम स्वयं एक जगह जमे नहीं रह सकते। अगर हमें नेतृत्व की वागडोर अपने हाथ में रखनी है तो हमें कार्रवाई करनी पड़ेगी। हमें बदलते विश्व की अनिवार्य आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी अर्थव्यवस्था को ढालना होगा और एक बार फिर अपने नेतृत्व को कसकर जमाना होगा।...

उसके बाद 4 मई को श्री कैनेडी नेन्यू ओर्लीन्स, लूइयाना में इसी विषय पर यों विचार प्रकट किए थे :

हम एक गम्भीर विभाजक बिन्दु पर पहुंच चुके हैं। हमें या तो व्यापार करना चाहिए या धीरे-धीरे मिट जाना होगा।... व्यापार का समूचा स्वरूप बदल रहा है और हमें भी उसके साथ अवश्य बदलना चाहिए।

5. पारस्परिक निर्भरता

पश्चिमी यूरोप के देशों को मिलाकर एक महान व्यापारिक गुट बनानेवाला साभा बाजार हमारी अपनी अर्थव्यवस्था के लिए नई आशा तथा खतरे दोनों साथ लिए हुए है। जापान ने भी एक व्यापारिक राष्ट्र के रूप में अपनी शक्ति पुनः प्राप्त कर ली है, एशिया तथा अफ्रीका के लगभग पचास नये राष्ट्र अपने लिए नये बाजार खोज रहे हैं, दक्षिण अमरीका के हमारे मित्रों को अपनी पूँजी का विस्तार करने के लिए व्यापार करने की आवश्यकता है, और कम्युनिस्ट गुट के देशों ने भी व्यापार-शस्त्रों का एक विशाल नया शस्त्रागार ही बना लिया है जिसे हमारे खिलाफ प्रयोग किया जा सकता है तथा जहाँ भी हम खाली स्थान छोड़ें, जव भी अमरीकी नेतृत्व में ज़रा भी परिवर्तन आए, वे उसे हथियाने तथा कमी की पूर्ति करने के लिए तैयार हैं। और हमारा इरादा उनको रास्ता देने का नहीं है। नया व्यापार अधिनियम हमारी विदेश नीति को सुदृढ़ बना सकता है और इसमें से एक केन्द्रबिन्दु है दक्षिण अमरीका। प्रगति के लिए मैत्री का उद्देश्य अपने दक्षिण अमरीका के इन पड़ोसियों की सहायता करना है। वह प्रयास जारी रहना चाहिए तथा जारी रहेगा भी। लेकिन अकेली वैदेशिक सहायता यह काम नहीं कर सकती। भविष्य में आगे चलकर हमारे बन्धुगण राज्यों को स्वयं ऐसे साधन प्राप्त करने होंगे कि वे अपने विकास-कार्य के लिए स्वयं धन जुटा सकें। उन्हें विदेशी बाजारों में अपना अधिक से अधिक माल बेचना ही चाहिए तथा अवश्यक विदेशी मुद्रा कमाना चाहिए जिससे वे अपने देश का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए आवश्यक मशीनें आदि की खरीद कर सकें। व्यापार-विस्तार अधिनियम इसी दृष्टि से बनाया गया है कि इस महान बाजार को विश्व-समुदाय का अंग रखा जा सके, क्योंकि संयुक्त राज्य अमरीका की सुरक्षा हमारे बन्धुगण राज्यों की भलाई पर निर्भर है।

और हमें जापान के लिए भी चिन्ता है जिसने अपनी स्वतन्त्र समाज-व्यवस्था बनाए रखी है। क्योंकि हम संसार के सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों की साभेदारी स्थापित करने की दिशा में बढ़ रहे हैं, यह साभेदारी ऐसी होगी कि जिसके हाथ में स्वतन्त्र दिश्व की नब्बे प्रतिशत औद्योगिक उत्पादक शक्ति होगी तथा जिनका एक-दूसरे को मिलाकर सबसे बड़ा बाजार होगा, इतना बड़ा जितना विश्व में कभी देखने में नहीं आया।

अगले वर्ष राष्ट्रपति विश्वव्यापी आर्थिक सहयोग का संदेश यूरोप लेकर गए। फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में 25 जून, 1963 को भाषण करते हुए आपने कहा :

“आर्थिक एकता” बहुत आवश्यक है। यह न केवल यूरोप के राष्ट्रों के लिए आवश्यक है, वरन् विशाल अटलांटिक सागर के दोनों तटों पर स्थित राष्ट्रों के लिए भी है। वास्तव में समस्त स्वतन्त्र जगत् के बीच आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। अफ्रीका, एशिया तथा दक्षिण अमरीका के देशों के लिए अपने बाजार खोलकर, अपनी पूँजी तथा तकनीकी कौशल का योगदान करके तथा आधार-भूत मूल्यों को स्थिर करके हम उन्हें स्वाधीनता तथा विकास के अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए आश्वस्त करने में सहायक हो सकते हैं। यह अटलांटिक देशों का दायित्व है। क्योंकि स्वयं अटलांटिक देशों ने इन लोगों के जागरण में सहायता पहुंचाई है। हमारे व्यापारियों ने खनिज पदार्थों, तेल, रबड़ तथा कॉफी की खोज में उन देशों की भूमि को छाना है। अब हमें चाहिए कि हम उन लोगों को बीसवीं सदी का पूर्ण भागीदार बनने में सहायता करें जिससे गरीब और अमीर के बीच का अन्तर मिट जाए।

‘द्रुतगति से बदलती विश्व-अर्थव्यवस्था’

‘स्वाधीनता

अविभाज्य है’

निकिता ख्रुश्चोव ने कहा था : "मैं उनको एक ऐसे राज-नीतिज्ञ के रूप में स्मरण करता हूँ जिसके विचार उदार थे, और जो आज विश्व को विभाजित करनेवाली अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का वार्ता के द्वारा हल खोजने का रास्ता निकालने के लिए प्रयत्नशील थे।" लेकिन श्री ख्रुश्चोव के हृदय में स्वर्गीय राष्ट्रपति के प्रति यह आदरभाव सहज ही में नहीं आया था। एक के बाद दूसरे संकट के समय सोवियत प्रधानमंत्री ने नये अमरीकी नेता को परखा था, उसकी कमजोरियाँ टटोली थीं, मौका लगते ही दवाने की कोशिश की थी और कभी-कभी झमेले में भी डालकर भ्रमित करने का प्रयास भी किया था। और आखिर 1962 में क्यूबा-संकट के समय उन्होंने उस व्यक्ति तथा उसके राष्ट्र के सही दम-खम को समझ लिया था।

कांगो में : श्री कैंनेडी को राष्ट्रपति का पद ग्रहण किए अभी तीन सप्ताह ही हुए थे जब उन्होंने सोवियत संघ को पहली चेतावनी देना आवश्यक समझा। पाशविक गृहयुद्ध में फंसा कांगो एक प्रकार से अव्यवस्था के कगार तक पहुँच गया था। वहाँ शांति स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ की सेना भेजी गई थी, किन्तु मास्को से इस बात के चिन्तापूर्ण संकेत मिले थे कि सोवियत संघ योजनाबद्ध तरीके से इसमें हस्तक्षेप कर सकता है। 15 फरवरी, 1961 को एक पत्रकार-सम्मेलन में राष्ट्रपति ने रूसियों को चेतावनी दी :

मैं

...कांगो गणराज्य के आंतरिक मामलों में एकतरफा हस्तक्षेप का जो खतरा प्रतीत होता है, उससे बहुत अधिक चिन्तित हूँ। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि कोई सरकार ऐसा खतरनाक तथा गैर-जिम्मेदाराना कदम उठाने की भी योजना बना सकती है।

...मैं यह बताना बहुत महत्वपूर्ण समझता हूँ कि ऐसी स्थिति आने पर संयुक्त राज्य अमरीका की स्थिति के बारे में किसी प्रकार की गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। संयुक्त राज्य अमरीका ने कांगों में संयुक्त राष्ट्रसंघ की उपस्थिति का समर्थन किया है तथा आगे भी करता रहेगा। संयुक्त राज्य अमरीका मानता है कि कांगों की ओर से बोलने का कानूनी अधिकार उस सरकार को ही है जो उस राज्य

के प्रधान राष्ट्रपति कसाबुबू की अध्यक्षता में बनी है, जिसे संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में उसके सदस्यों के बहुमत द्वारा स्थान प्रदान किया गया है।...उस विभक्त देश के अन्य भागों में कथित सरकारों के रूप में पृथक्तावादी कांगोई गुटों को मान्यता देने से केवल गुथी और उलझेगी तथा कांगों की स्वतंत्रता तथा एकता स्थापित करने का काम और कठिन हो जाएगा।

कांगों में स्थायित्व तथा सुव्यवस्था की स्थिति पुनः स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्रसंघ यदि एकमात्र नहीं तो कम से कम सर्वोत्तम संभावना उपस्थित करता है।...कांगों में संयुक्त राष्ट्रसंघ की उपस्थिति से ही अफ्रीका में शांति बनाए रखी जा सकती है। मैं इसे संयुक्त राज्य अमरीका तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के सभी सदस्यों का यह कर्तव्य समझता हूँ कि वे कांगों में किसी सरकार द्वारा एकतरफा हस्तक्षेप करने के प्रत्येक प्रयास का विरोध करके संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणापत्र की रक्षा करें।

इसके बाद कांगों में सोवियत रूस ने हस्तक्षेप नहीं किया।

बर्लिन : इस बीच पश्चिमी बर्लिन के विरुद्ध, सोवियत रूस का दबाव फिर बढ़ जाने से यूरोप में युद्ध की आशंका फिर बढ़ गई। इसी पृष्ठभूमि में श्री कैंनेडी और सोवियत प्रधानमंत्री वियना में तीन-चार जून, 1961 को मिले जिसे सरकारी तौर पर राज्यों के राष्ट्राध्यक्षों के बीच सामान्य विचार-विनिमय की संज्ञा दी गई, लेकिन जिसे समाचार-पत्रों में बर्लिन के ऊपर 'आमना-सामना' कहा गया। वास्तव में यह वार्ता दोनों रूप में सत्य सिद्ध हुई। बर्लिन तथा अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर आपसी विचारों का आदान-प्रदान हुआ, लेकिन श्री ख्रुश्चोव श्री कैंनेडी के कूटनीतिक शस्त्रागार की कमजोरी खोज रहे थे।

एक अवसर ऐसा आया जब सोवियत नेता ने संकेत दिया कि वे पूर्वी जर्मनी के साथ पृथक् शांति-संधि कर लेंगे जिससे वहाँ के कम्युनिस्टों को बर्लिन में जाने के पश्चिमी मित्रराष्ट्रों के रास्ते का नियंत्रण करने तथा इस प्रकार पश्चिमी बर्लिन का गला घोट देने का 'अधिकार' मिल जाएगा। "अगर यह सत्य है," श्री कैंनेडी ने साफ-साफ कहा, "तो इस बार की शरद् ऋतु बहुत ही ठंडी हो जाएगी।"

6. संकट का समय

दो दिन बांद राष्ट्रपति ने वियना-वार्ता का विवरण अमरीकी जनता के समक्ष निम्न शब्दों में प्रस्तुत किया :

“...में अब आप लोगों को बता दूँ कि ये दो दिन बहुत ही समझ-दारीपूर्ण रहे। किसी भी पक्ष ने कुछ भी अशोभन नहीं किया, न किसीने गुस्सा दिखाया, न धमकियाँ या चुनौतियाँ दी गईं, न तो किसीने कोई लाभ उठाया, न किसी प्रकार की रियायत दी या ली, न कोई मुख्य निर्णय किया गया, न करने की योजना बनाई गई और इस वार्ता में न तो कोई खास प्रगति हुई और न ऐसा दर्शाया ही गया।”

28 जून को श्री कैंनेडी ने अत्यधिक स्पष्टता के साथ कहा :

‘वर्लिन-संकट’ सोवियत रूस ने पैदा किया है। “कोई भी इस खतरे की गंभीरता को समझे बिना नहीं रह सकता।” इससे पश्चिमी विश्व की शांति तथा सुरक्षा खतरे में है। “खतरा यह है कि एकसत्ताधारी सरकार, जिसके कामों पर आम जनता विचार नहीं कर सकती, कहीं प्रजातांत्रिक समाजों की, जहाँ तक महत्वपूर्ण हितों का संबंध है, दृढ़ इच्छा तथा एकता को उचित से कम न आँके।

25 जुलाई को राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम भाषण में अमरीका की स्थिति भली भाँति स्पष्ट की :

“...आपको स्मरण होगा, वर्लिन में उन्होंने (श्री स्ट्रुश्चोव ने) केवल कलम चलाकर ही एक तो पश्चिमी वर्लिन में हमारे कानूनी अधिकार को और दूसरे इस शहर के बीस लाख स्वतंत्र व्यक्तियों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करने की हमारी क्षमता को समाप्त करने का इरादा किया। वह हम होने नहीं दे सकते थे। “वर्लिन पूर्वी जर्मनी का एक भाग नहीं है, वरन् एक पृथक् क्षेत्र है जो मित्रराष्ट्रों के नियंत्रण में है। “पश्चिमी वर्लिन में हमारी उपस्थिति तथा वहाँ जाने के हमारे रास्ते को सोवियत सरकार के किसी कदम से समाप्त नहीं होने दिया जा सकता। ‘नाटो’ की ढाल बहुत पहले ही पश्चिमी वर्लिन की रक्षा करने के लिए बढ़ा दी गई थी और हमने वचन दिया

था कि उस शहर में किया गया आक्रमण हम सबपर किया गया आक्रमण समझा जाएगा।

क्योंकि पश्चिमी वर्लिन “स्वाधीनता के प्रदर्शन-प्रकोष्ठ से भी अधिक कम्युनिस्ट-सागर में स्वतंत्रता के एक द्वीप, एक प्रतीक के रूप में है। यह स्वतंत्र जगत् के साथ एक संपर्क-कड़ी से भी अधिक लौह-आवरण के पीछे आशा की प्रकाश-किरण तथा शरणाधियों के लिए वच निकलने का स्थान है।

पश्चिमी वर्लिन यही सब कुछ नहीं है। इससे भी अधिक यह अब, पहले की अपेक्षा कहीं अधिक पश्चिमी राष्ट्रों के साहस का एक परीक्षण-स्थल बन गया है, एक ऐसा केन्द्रबिन्दु जहाँ 1945 से हमारे पवित्र दायित्वों तथा सोवियत रूस की आकांक्षाओं की बुनियादी टक्कर होती है।”

मैंने लोगों को प्रायः यह कहते सुना है कि सैनिक दृष्टि से पश्चिमी वर्लिन की रक्षा करना संभव नहीं है। ऐसी ही स्थिति व्रैस्टोम्ने की थी और वास्तव में ऐसी ही अवस्था स्टालिनग्राद की थी। अगर लोग, बहादुर लोग चाहें तो किसी भी खतरनाक स्थिति को संभाला जा सकता है।

हम लड़ना नहीं चाहते, लेकिन हम पहले लड़ें तो हैं। पहले भी कुछ लोगों ने यह भ्रम मन में पालने की गलती की थी कि पश्चिमी देश इतने स्वार्थी, इतने नरम तथा इतने मतभेदग्रस्त हैं कि वे अन्य भागों में स्वाधीनता पर हुए आक्रमण को रोक न सकेंगे। पश्चिमी वर्लिन के भगड़े पर युद्ध छेड़ने की धमकी देनेवाले लोगों को प्राचीन दार्शनिक के ये शब्द याद रखने चाहिए : “जो व्यक्ति दूसरों को भय दिखाता है, वह स्वयं भी भययुक्त नहीं हो सकता।”

वर्लिन को युद्ध का अखाड़ा कहने के कम्युनिस्ट-प्रयासों से विश्व को धोखा नहीं दिया जा सकता। आज वर्लिन में शांति है। संसार में उत्पात तथा तनाव पैदा करने का केन्द्र मास्को है, वर्लिन नहीं। और अगर युद्ध छिड़ेगा तो वह वर्लिन से नहीं, मास्को से शुरू होगा। क्योंकि शांति तथा युद्ध में से एक को चुनने का काम मुख्यतः उनका है, हमारा नहीं।”

संक्षेप में, यद्यपि हम अपने हितों की रक्षा करने के लिए भली प्रकार तैयार हैं, तथापि वार्ता, औपचारिक या अनौपचारिक बैठकों से शांति की खोज करने के लिए भी तैयार हैं।

अगस्त मास के मध्य से एक नया मनहूस संकेत सामने आया जब पूर्वी जर्मनी के कम्युनिस्टों ने वर्लिन के पश्चिमी तथा सोवियत अंचलों के बीच दीवार बनाना शुरू किया। शहर में जब तनाव बराबर बढ़ रहा था, तो श्री कैंनेडी ने उपराष्ट्रपति लिण्डन जॉनसन को अपने व्यक्तिगत प्रति-

निधि के रूप में बर्लिन भेजा। 19 अगस्त को श्री जॉनसन ने पश्चिमी बर्लिन की प्रतिनिधि सभा के सामने बोलते हुए घोषणा की: "मैं राष्ट्रपति कैंनेडी के आदेश पर बर्लिन आया हूँ। वे तथा मैं आप लोगों को यह बताना चाहते हैं कि पश्चिमी बर्लिन की स्वाधीनता तथा बर्लिन में पश्चिमी राष्ट्रों के प्रवेश के अधिकार की रक्षा के लिए उन्होंने जो वचन दिया था, उसपर वे दृढ़ हैं। इस नगर के अस्तित्व की रक्षा तथा इसके रचनात्मक भविष्य के लिए हम अमरीकियों ने, व्यवहारतः वही प्रतिज्ञा की है जो हमारे पुरखों ने संयुक्त राज्य अमरीका की स्थापना करते समय (स्वाधीनता के घोषणापत्र में) की थी: "...हमारा जीवन, हमारा भाग्य, तथा हमारा पवित्र-सम्मान।" "

6 अक्टूबर को श्री कैंनेडी ने सोवियत विदेशमंत्री आन्द्रे ग्रोमिको के समक्ष बड़ी दृढ़ता के साथ अमरीकी स्थिति स्पष्ट की। 17 अक्टूबर तक श्री ख्रुश्चोव ने निश्चय कर लिया था कि "जर्मन शांति-संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए एक अन्तिम तारीख निर्धारित करना आखिरकार" इतना महत्वपूर्ण नहीं है।

1963 में राष्ट्रपति कुख्यात 'दीवार' स्वयं देखने तथा पश्चिमी बर्लिन की स्वाधीनता की रक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के दायित्व का पुनराख्यान करने स्वयं बर्लिन गए। 26 जून को उन्होंने पश्चिमी बर्लिन के सिटी हॉल में जो भाषण किया, वह उनके सर्वोत्तम भाषणों में से एक था।

दो

हजार वर्ष पहले सर्वाधिक गर्वपूर्ण उक्ति होती थी कि 'मैं रोम का नागरिक हूँ।' आज स्वाधीनता के इस युग में सर्वाधिक गर्वपूर्ण उक्ति है, 'मैं एक बर्लिनवासी हूँ'।

संसार में बहुत-से व्यक्ति हैं जो वास्तव में समझते नहीं या ऐसा कहते हैं कि स्वतन्त्र विश्व तथा कम्युनिस्टों के बीच मतभेद की बात क्या है। उन्हें बर्लिन आकर अपनी आंखों देखना चाहिए।

कुछ लोग हैं, जो कहते हैं कि साम्यवाद भविष्य की लहर है। उन्हें भी बर्लिन आना चाहिए। यूरोप तथा अन्यत्र कुछ अन्य लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम कम्युनिस्टों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं। वे भी बर्लिन आएँ। और चंद आदमी ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि यह सच है कि साम्यवाद एक खराब प्रणाली है, लेकिन यह हमें आर्थिक प्रगति करने देता है। वे भी आकर खुद देख लें।

स्वतन्त्रता में अनेक कठिनाइयाँ हैं और प्रजातन्त्र सर्वांगपूर्ण

प्रणाली नहीं है, लेकिन हमें कभी अपने आदमियों को बांध रखने के लिए या हमें छोड़कर जाने से रोकने के लिए दीवार नहीं खड़ी करनी पड़ी। मैं अपने देशवासियों की ओर से यह कहना चाहता हूँ कि "उन्हें इस बात का अत्यधिक गर्व है कि वे गत अठारह वर्षों की कहानी में, दूर से ही सही, आपके साथ हिस्सा बंटानेवाले रहे हैं। मैं ऐसे किसी कस्बे, किसी नगर को नहीं जानता जो अठारह वर्षों से धिरा हुआ हो और फिर भी पश्चिमी बर्लिन की भांति प्राणवान तथा जोरदार ढंग से, आशाओं एवं दृढ़ निश्चय के साथ जीवित हो। यद्यपि यह दीवार साम्यवाद-प्रणाली की विफलता का अत्यधिक स्पष्ट एवं जाहिरा प्रदर्शन है जिसे सारा संसार देख सकता है, तथापि हमें इससे कतई संतोष नहीं है, क्योंकि, जैसा आपके मेयर ने कहा, यह न केवल इतिहास के प्रति अपराध है, वरन् परिवारों को अलग करना, पति-पत्नियों तथा भाई-बहनों और जो लोग मिलकर रहना चाहते हैं, उन्हें बांटकर रखना मानवता के प्रति भी अपराध है।

जो बात इस नगर के बारे में सत्य है वही जर्मनी के बारे में भी सत्य है—यूरोप में वास्तविक एवं स्थायी शांति तब तक कभी स्थापित नहीं हो सकती जब तक हर चार जर्मनों में से एक का, स्वतन्त्र व्यक्तियों का बुनियादी अधिकार—यानी स्वतन्त्र निर्णय का अधिकार छिना हुआ है। शांति तथा सद्भाव के अठारह वर्षों में जर्मनों की यह पीढ़ी स्वतन्त्र रहने का अधिकार, जिसमें अपने परिवार तथा अपने राष्ट्र के सभी लोगों के प्रति सद्भाव रखते हुए स्थायी शांति के साथ एक करने का अधिकार भी शामिल है, प्राप्त करने में सफल हो सकी है। आप लोग स्वाधीनता के संरक्षित द्वीप में रहते हैं, लेकिन आपका जीवन तो समग्र राष्ट्र के मुख्य जीवन का ही अंग है।

इसलिए मैं अन्त में कहना चाहूँगा कि आप आज के खतरों से आगे दृष्टि उठाकर कल की आशाओं की ओर भी देखें, इस बर्लिन शहर या आपके देश की स्वतन्त्रता की ओर ही नहीं, वरन् उससे भी आगे सर्वत्र स्वाधीनता की प्रगति की ओर। इस दीवार से भी आगे न्यायपूर्ण शांति का दिन, अपने या हमारे से भी आगे समस्त मानवता की तरफ देखें। स्वाधीनता अविभाज्य है। और जब एक व्यक्ति गुलाम हो जाता है तो सभी स्वतन्त्र नहीं रहते। जब सभी स्वतंत्र हो जाएंगे तभी हम उस दिन की ओर देख सकते हैं, जब यह शहर, यह देश तथा यूरोप का महान महाद्वीप मिलकर एक शांतिपूर्ण तथा आशापूर्ण विश्व का अंग बन सकेंगे। अन्त में जब वह दिन आएगा और वह दिन आएगा अवश्य, तब बर्लिन के लोगों को इस बात का सौम्य सन्तोष होगा कि वे लगभग दो दशकों तक इस मोर्चे की अग्रिम पंक्ति पर थे।

सभी स्वतन्त्र व्यक्ति, चाहे वे कहीं रहते हों, बर्लिन के नागरिक हैं और इसलिए स्वतन्त्र व्यक्ति की भांति मैं सगर्व यह कहने में अभिमान अनुभव करता हूँ कि 'मैं बर्लिनवासी हूँ।'

6. संकट का समय

लाओस : 1961 में लाओस को कम्युनिस्ट गुरिल्ला आक्रमण से भारी खतरा पैदा हो गया था। इन गुरिल्लों को उत्तरी वियतनाम से सामान मिलता था तथा वहीं से उनका संचालन होता था। बड़े पैमाने पर सोवियत विमान कम्युनिस्ट पथेलाओ सेनाओं को शस्त्रास्त्र सीधे भेज रहे थे, इस घटना के कारण राष्ट्रपति को 23 मार्च के दिन आयोजित एक पत्रकार-सम्मेलन में चेतावनी देनी पड़ी।

मुझे खेद के साथ यह कहना पड़ता है कि सोवियत विमान जाहिरा तौर पर बड़े पैमाने पर सीधे सामान युद्धक्षेत्र में पहुंचा रहे हैं... जिसका उद्देश्य सैनिक कार्रवाई के द्वारा लाओस की सर्वसम्मत तटस्थता विनष्ट कर देना है।... हम दृढ़ता तथा किसी मानसिक गोप-नता के बिना तटस्थ एवं स्वतन्त्र लाओस के लक्ष्य का समर्थन करते हैं जो किसी बाहरी शक्ति या शक्तिगुट के साथ बंधा न हो, जो किसी-के लिए खतरा न हो तथा किसी भी प्रकार की पराधीनता से जकड़ा न हो।... अगर इस समस्या का शांतिपूर्ण हल होना है, तो कम्युनिस्टों को बाहरी आक्रमण रोकना चाहिए। अगर ये हमले नहीं रुके तो जो वास्तविक तटस्थ लाओस का समर्थन करते हैं, उन्हें अपने दृष्टिकोण पर नये सिरे से विचार करना होगा। इस आवश्यक दृष्टिकोण के स्वरूप पर निश्चय ही सावधानीपूर्वक विचार होगा, यहां वाशिंगटन में ही नहीं, वरन्... दक्षिणपूर्व एशिया संधि संगठन (सीएटो) में।

उसी वर्ष जून मास में वियना में राष्ट्रपति कैंनेडी ने प्रधानमंत्री ख्रुश्चोव से बातचीत की। दोनों नेता इस बात पर सहमत हो गए कि लाओस एक स्वतंत्र तथा तटस्थ राष्ट्र होना चाहिए। चौदह राष्ट्रों के जेनेवा सम्मेलन में एक युद्धविराम किया गया, जिसे अगले वर्ष के आरंभ में पथेलाओ ने तोड़ दिया। स्थिति बिगड़ती देख राष्ट्रपति ने 15 मई, 1962 को पांच हजार अमरीकी सैनिक थाईलैण्ड भेजने का आदेश दिया। इस कदम का स्पष्टीकरण करते हुए आपने एक वक्तव्य दिया :

थाईलैण्ड को अमरीकी सेनाएं भेजना वांछनीय समझा गया, क्योंकि कम्युनिस्ट सेनाओं ने लाओस में हाल में आक्रमण किए हैं तथा थाईलैण्ड की सीमाओं की तरफ कम्युनिस्टों के फौजी दस्ते वाद

में बढ़े हैं। थाईलैण्ड के लिए उपस्थित खतरा संयुक्त राज्य अमरीका के लिए घोर चिन्ता का विषय है।... लाओस में हमारी नीति यही रहेगी कि... वहां प्रभावकारी युद्धविराम पुनः स्थापित रहे तथा राष्ट्रीय संधि स्थापित करने के लिए फौरन बातचीत शुरू की जाए।

लाओस में जून मास में मिली-जुली सरकार स्थापित होने तथा 23 जुलाई को जेनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय करारों पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद, जिनमें लाओस की स्वाधीनता तथा तटस्थता की गारंटी दी गई थी, अमरीकी सेनाएं थाईलैण्ड से वापस बुला ली गई।

क्यूबा : जनवरी, 1959 में क्यूबा में सरकारी सत्ता फीडल कास्त्रो के हाथ में आई। उन्होंने साम्यवाद से अपना किसी प्रकार का सम्बन्ध होने से इन्कार किया और क्यूबा की जनता को राजनीतिक स्वाधीनता तथा सामा-जिक न्याय प्रदान करने का वचन दिया, लेकिन जैसे-जैसे महीने गुजरते गए कास्त्रो द्वारा अपनी जनता के साथ किए अधिकाधिक पाशविक व्यवहार के अनुदिन बढ़ते प्रमाणों को देखकर अमरीकी जनता अधिक से अधिक बेचैन होती गई। ज्यों-ज्यों कास्त्रो ने मास्को तथा पीपिंग, दोनों से घनिष्ठ राजनीतिक, आर्थिक तथा सैनिक सम्बन्ध स्थापित किए, त्यों-त्यों संयुक्त राज्य अमरीका ने पहले तो आइज़नहावर के राष्ट्रपति-काल में, तथा बाद में श्री कैंनेडी के कार्यकाल में—क्यूबा के निर्वासितों को सहायता दी, जिससे वे अपनी मातृभूमि में स्वाधीनता-स्थापना के स्वप्न को साकार कर सकें। 19 अप्रैल, 1961 को क्यूबा पर निर्वासितों द्वारा किए आक्रमण की पराजय का समा-चार मिला। अगले ही दिन श्री कैंनेडी ने वाशिंगटन में अमरीकी समाचारपत्र संवादक सोसाइटी के समक्ष कहा :

हमारे देश सरीखे महान प्रजातंत्र का राष्ट्रपति होने तथा आपके सरीखे महान पत्रों के सम्पादक के रूप में हम सबका जनता के प्रति एक सम्मिलित दायित्व है : वह दायित्व है, जनता के समक्ष तथ्य प्रस्तुत करना, तथ्यों को स्पष्टता के साथ तथा उनके फलताथ्यों के साथ

प्रस्तुत करना। अपने दिमाग में इस दायित्व का ध्यान रखकर ही मैंने गत चौबीस घंटों में यह निश्चय किया कि इस समय आप लोगों के साथ क्यूबा की हाल की घटनाओं पर संक्षेप में बातचीत करूँ।

उस दुर्दिनग्रस्त द्वीप में, स्वाधीनता के लिए संघर्ष के अन्य अंचलों की भांति समाचार अच्छे होने के स्थान पर और भी खराब हो गए हैं। मैं पहले ही इस बात पर जोर दे चुका हूँ कि क्यूबा का संघर्ष क्यूबा के एक तानाशाह के विरुद्ध क्यूबा के देशभक्तों का संघर्ष है। यद्यपि हमसे अपनी सहानुभूति छिपाने की आशा नहीं की जा सकती, तथापि हमने बार-बार यह स्पष्ट कर दिया था कि इस देश की सेनाएं किसी भी हालत में हस्तक्षेप नहीं करेंगी।

हमारे ऊपर या हमारे किसी मित्रराष्ट्र पर बाहर से जब तक आक्रमण न हो, तब तक एकतरफा अमरीकी हस्तक्षेप हमारी परम्पराओं तथा हमारे अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों के प्रतिकूल होता। लेकिन सभी कोई यह अच्छी तरह समझ लें कि हमारा संयम ऐसा नहीं है कि कभी समाप्त ही न हो। अगर कभी ऐसा प्रतीत हो कि हस्तक्षेप न करने का अन्त अमरीकी कार्रवाई न करने का वहाना बन गया है या उसके लिए पर्दा सिद्ध हो रहा है और अगर इस गोलाध्वंश के राष्ट्रवाहरी कम्युनिस्ट घुसपैठ को रोकने के अपने दायित्व पूरे करने में विफल रहे, तो मैं यह भली भांति स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यह सरकार अपने मूलभूत दायित्वों को, जो हमारे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हैं, पूरा करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाएगी।

अगर वह समय कभी आए तो हम उन लोगों द्वारा 'हस्तक्षेप' पर भाषण नहीं सुनना चाहते जिनके चरित्र पर सदा-सदा के लिए बुडापेस्ट की खूनी सड़कों के अमिट धब्बे पड़े हुए हैं और न हम उस परिणाम की आशा करते हैं या उसे स्वीकार करेंगे, जो क्यूबा के बहादुर शरणार्थियों के इस छोटे दल को विदित ही था कि वे एक जुआ खेल रहे हैं। हालांकि वे अपने द्वीप की आजादी पुनः हासिल करने हेतु भारी दिक्कतों के बाद भी अपने साहसिक प्रयास जारी रखने के लिए कृतसंकल्प थे।...

राष्ट्रपति की इस चेतावनी के बाद भी, सोवियत यूनियन तथा क्यूबा एक गुप्त योजनानुसार चले ताकि कैरिवियन सागर का यह द्वीप पूरी तरह कम्युनिस्ट पिछलग्गू राष्ट्र बन जाए, एक ऐसा पिछलग्गू जिसके पास आधुनिकतम प्रक्षेपणास्त्र व जैट बमवर्षक सोवियत टैक्नीशियनों सहित तैयार थे। इस कार्य-अभियान की पूरी-पूरी खबरें मिलने पर श्री कैंनेडी ने 16 अक्टूबर, 1962 को पूरी तरह हवाई जांच-पड़ताल का आदेश दे दिया। इससे इस बात की पुष्टि

हो गई कि क्यूबा में प्रक्षेपणास्त्रों का भारी संग्रह हो रहा है। संयुक्त राज्य अमरीका की उच्चतम कौंसिलों में बहुत गम्भीर विचार-विवेचन हुआ : सरकार क्या रास्ता अप नाए ? अपने प्रशासन का सर्वाधिक गंभीर संकट जॉन एफ० कैंनेडी के सामने आया।

18 अक्टूबर को राष्ट्रपति, ग्रोमिको से मिले। श्री कैंनेडी ने उनसे हुई वार्ता में क्यूबा में प्रक्षेपणास्त्र अड्डे का सीधा उल्लेख नहीं किया लेकिन उन्होंने सोवियत विदेश-मंत्री के सामने 13 सितम्बर को पत्रकार-सम्मेलन में राष्ट्रपति द्वारा दिया यह वक्तव्य अवश्य पढ़कर सुनाया :

अगर क्यूबा में कभी भी कम्युनिस्टों का शस्त्रभंडार इतना हो जाए कि वह किसी प्रकार भी हमारी सुरक्षा के लिए खतरा या बाधक बन जाए या क्यूबा कभी भी सोवियत संघ के आक्रमण का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया, उस अवस्था में यह देश अपनी सुरक्षा तथा अपने मित्रराष्ट्रों की सुरक्षा के लिए वह सब कार्रवाई करेगा जो उसे करनी चाहिए। हम ऐसी किसी घटना के प्रति सतत जागरूक रहेंगे तथा उसका सामना करने के लिए पूरी तरह सक्षम रहेंगे।

सोवियत मंत्री ने उत्तर दिया कि क्यूबा में जो भी शस्त्रास्त्र हैं वे सर्वथा अपनी रक्षा के लिए हैं। राष्ट्रपति ने अधिक कुछ नहीं कहा लेकिन वे जानते थे कि कार्रवाई करने की आवश्यकता बहुत ही तात्कालिक है। 22 अक्टूबर को व्हाइट हाउस के एक प्रवक्ता ने राष्ट्र को बताया कि उस दिन शाम को श्री कैंनेडी सर्वाधिक महत्व के प्रश्न पर भाषण करेंगे। जब शाम को उन्होंने अपने कार्यकाल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषण शुरू किया तो करोड़ों अमरीकी अपने-अपने रेडियो तथा टेलीविजन सैटों पर उसे सुनने के लिए झुके हुए थे।

...इस सरकार ने अपने वचन के अनुसार क्यूबा द्वीप में सोवियत सैनिक तैयारी पर कड़ी निगरानी रखी है। पिछले सप्ताह में इस बात के अचूक प्रमाण देखने में आए हैं कि उस बन्दी द्वीप में बहुत-से आक्रामक प्रक्षेपणास्त्र-केन्द्र इस समय बनाए जा रहे हैं।

6. संकट का समय

इन अड्डों की स्थापना का उद्देश्य पश्चिमी गोलार्द्ध पर चोट करने के लिए परमाणु-प्रहार की शक्ति प्राप्त करने के अलावा कुछ और नहीं हो सकता।

गत मंगलवार (16 अक्तूबर) को प्रातः 9 बजे जब इस आशय की पक्की प्रारम्भिक सूचना मिली तो मैंने सर्वेक्षण एवं निगरानी करनेवाले दस्तों को काम तेज करने का आदेश दिया। इसके फलस्वरूप प्रारम्भिक सूचना की पुष्टि होने तथा प्राप्त प्रमाणों को तोलने और अपनी भावी कार्रवाई के विषय में निश्चय कर लेने के बाद मेरी सरकार यह आवश्यक समझती है कि आप लोगों को इस सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक बताया जाए।

इन प्रक्षेपणास्त्र-अड्डों पर दो प्रकार की तैयारी है। इनमें से कुछ अड्डों पर मध्यम दूरी तक मार करनेवाले प्रक्षेपणास्त्र हैं जो एक हजार समुद्री मील (1850 किलोमीटर) तक परमाणु अस्त्र फेंक सकते हैं। संक्षेप में कहें तो इनमें से प्रत्येक प्रक्षेपणास्त्र वाशिंगटन, डी० सी०, पनामा नहर, केपकैनैवरल (अब केप कैनेडी), मैक्सिको शहर या संयुक्त राज्य अमरीका के दक्षिणी भाग, मध्य अमरीका या कैरीबियन सागर के किसी अन्तः शहर पर प्रहार कर सकता है।

अन्य अड्डे अभी बनकर तैयार नहीं हुए हैं जो इस प्रकार के बनाए जा रहे हैं कि उनसे मध्यम दूरी के अड्डों की अपेक्षा दूनी दूरी तक मार की जा सके और इस प्रकार इन अड्डों से पश्चिमी गोलार्द्ध के सभी प्रमुख शहरों पर, हडसन की खाड़ी पर, कनाडा से लेकर दक्षिण में लीमा, पेरू तक पर प्रहार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ऐसे जैट बमवर्षक पेटियों से निकाले तथा क्यूबा में संयोजित किए जा रहे हैं जो परमाणु अस्त्र ले जाकर कहीं भी गिरा सकते हैं। इनके लिए आवश्यक हवाई अड्डे भी तैयार किए जा रहे हैं।

क्यूबा को इस तेजी के साथ महत्वपूर्ण सामरिक अड्डा बनाए जाने, वहां बड़ी संख्या में दूर तक मार करनेवाले, आकस्मिक रूप से सामूहिक विनाश के शस्त्रास्त्रों के होने के कारण उत्तरी व दक्षिण अमरीका की शांति तथा सुरक्षा को स्पष्ट खतरा उपस्थित हो गया है। यह कार्रवाई सोवियत प्रवक्ताओं के द्वारा सार्वजनिक तौर पर तथा वैसे बार-बार दिए इन आश्वासनों के प्रतिकूल है कि क्यूबा में शस्त्रास्त्र-संग्रह सर्वथा रक्षात्मक दृष्टि से ही किया जाएगा और सोवियत संघ को किसी अन्य राष्ट्र की भूमि पर सामरिक महत्त्व के ये प्रक्षेपणास्त्र रखने की न तो आवश्यकता है और न ऐसी इच्छा।

इस तमाम धंधे का आकार इतना बड़ा है, कि उसीसे यह स्पष्ट हो जाता है कि इसकी योजना कुछ महीनों से बनाई गई है। फिर भी गत मास ही, जब मैंने पृथ्वी से पृथ्वी पर चलाए जानेवाले प्रक्षेपणास्त्रों तथा विमान-विध्वंसक प्रक्षेपणास्त्रों का अन्तर स्पष्ट कर दिया तो सोवियत सरकार ने 11 सितम्बर को सार्वजनिक रूप से,

उन्हींके शब्दों में, कहा कि "क्यूबा को जो शस्त्रास्त्र तथा सैनिक सामग्री भेजी गई है, वह विशुद्ध रक्षात्मक है।" यही नहीं, सोवियत सरकार ने कहा : "सोवियत सरकार को अपने शस्त्रास्त्र... किसी भी प्रतिशोधात्मक कार्रवाई के लिए किसी अन्य देश की भूमि, उदाहरणतः क्यूबा में भेजने की आवश्यकता नहीं है।" मैं फिर सोवियत सरकार के शब्दों को उद्धृत करूंगा, जिनमें उन्होंने कहा था कि "सोवियत संघ के पास इन परमाणु अस्त्रों के ले जाने के लिए इतने शक्तिशाली राकेट हैं कि उसे सोवियत संघ की सीमाओं से बाहर किसी भी स्थान की खोज करने की आवश्यकता ही नहीं है।" ये वक्तव्य सर्वथा झूठे थे।

गत गुरुवार को ही, जब मेरे हाथ में इस आक्रामक अड्डे को तेजी से खड़ा करने के प्रमाण आ चुके थे, सोवियत विदेशमंत्री ने ग्रोमिको मुझे बताया कि उनकी सरकार ने उन्हें एक बार फिर स्पष्ट करने के लिए निर्देश दिया है और उनकी सरकार ऐसा कह भी चुकी है कि, क्यूबा को सोवियत सहायता, उन्हींके शब्दों में "क्यूबा की रक्षात्मक क्षमता बनाने के ही एकमात्र उद्देश्य से दी जा रही है," और फिर उन्हींके शब्दों में, "सोवियत विशेषज्ञ क्यूबा के राष्ट्रजनों को रक्षात्मक उपकरणों के उपयोग का जो प्रशिक्षण दे रहे हैं, वह भी किसी रूप में आक्रामक नहीं है और अगर वह इसके विपरीत कभी हुआ," श्री ग्रोमिको ने आगे कहा, "तो सोवियत सरकार वैसी सहायता कभी नहीं देगी।" उनका यह कथन भी सत्य नहीं था।

न तो संयुक्त राज्य अमरीका और न विश्व का राष्ट्र-समुदाय किसी भी राष्ट्र द्वारा, चाहे वह राष्ट्र बड़ा हो चाहे छोटा, इस प्रकार जान-बूझकर भांसा देने तथा आक्रामक खतरा उपस्थित करने को सहन करेगा। अब हम उस विश्व में नहीं रहते जब शस्त्रास्त्रों से वास्तव में प्रहार ही उस राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अधिकतम खतरा उपस्थित करता है। अब परमाणु शस्त्रास्त्र इतने विध्वंसक हैं तथा प्रक्षेपणास्त्र इतनी तेजी से काम करनेवाले होते हैं कि उनके उपयोग की संभावना बढ़ने या उनका स्थान बदलने के साथ ही शांति को निश्चित खतरा उपस्थित हो सकता है।

इस तथ्य को समझते हुए सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका ने खतरनाक परमाणु शस्त्रास्त्रों को बड़ी सावधानी से रखा हुआ है तथा कभी भी यथास्थिति को बदलने नहीं दिया है जिससे यह निश्चित है कि अति गम्भीर चुनौती जब तक न मिले, तब तक इनका उपयोग न होगा। हमारे अपने खतरनाक प्रक्षेपणास्त्र गुप्त रूप से या धोखा देकर किसी अन्य राष्ट्र की भूमि पर नहीं भेजे गए हैं और द्वितीय महायुद्ध के बाद से सोवियत रूस से भिन्न हमारा इतिहास यह रहा है कि किसी राष्ट्र को अपने काबू में रखने या उसे जीतने अथवा अपनी प्रणाली कहीं की जनता पर लादने की हमारी इच्छा कभी नहीं रही है। फिर भी अमरीकी नागरिक सोवियत रूस के अन्दर अथवा पनडुब्बियों में स्थापित रूसी प्रक्षेपणास्त्रों की बात सुनने के

अभ्यस्त हो चुके हैं।

इस दृष्टि से क्यूबा में प्रक्षेपणास्त्रों का होना पहले से विद्यमान स्पष्ट खतरे को और बढ़ाता है, हालांकि इस प्रसंग में ध्यान रखने की बात यह है कि दक्षिण अमरीका के राष्ट्रों को कभी भी संभावित परमाणु-खतरा उपस्थित नहीं हुआ था।

लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका तथा पश्चिमी गोलार्द्ध के देशों के साथ विशेष तथा ऐतिहासिक सम्बन्ध रखने के लिए विख्यात देश के अन्दर गुप्तरूप से, तेजी के साथ कम्युनिस्ट प्रक्षेपणास्त्रों का असाधारण रूप से बड़ा संग्रह सोवियत रूस के आशवासनों तथा अमरीकियों और इस गोलार्द्ध की नीति के प्रतिकूल है। सोवियत प्रदेश से बाहर पहली बार खतरनाक हथियार रखने का यह आकस्मिक एवं अति गंभीर निर्णय जान-बूझकर भड़कानेवाला है और यथास्थिति में अनुचित परिवर्तन है जिसे, अगर हमारे साहस एवं हमारी बात पर मित्रों या शत्रुओं को विश्वास कराना है तो, यह देश कभी स्वीकार नहीं कर सकता।

बीसवीं सदी के चौथे दशक ने हमें एक स्पष्ट पाठ सिखा दिया है, और वह पाठ यह है कि अगर आक्रामक व्यवहार को बिना रोके अथवा बिना चुनौती दिए छोड़ दिया जाए तो अंततः उसका परिणाम युद्ध होता है। यह राष्ट्र युद्ध का विरोधी है। हम अपने वचन के सच्चे हैं। अतः हमारा एकमात्र उद्देश्य यह होना चाहिए कि इन प्रक्षेपणास्त्रों को इस या किसी अन्य देश के विरुद्ध प्रयोग किए जाने से रोकना तथा पश्चिमी गोलार्द्ध से इन्हें हटवाना या नष्ट कर देना।

हमारी नीति धैर्य तथा विवेक की रही जो एक शांतिप्रिय एवं शक्तिशाली राष्ट्र को शोभा देता है तथा जिससे विश्व-भर में मैत्री स्थापित होती है। हम अपने मुख्य उद्देश्यों से केवल भड़कावे में आकर या किसीके उन्मादपूर्ण कार्यों से बहककर अपना रास्ता न बदलने के लिए कृतसंकल्प हैं। लेकिन अब आगे कार्रवाई करने की आवश्यकता है और इस दिशा में काम किया जा रहा है और ये कार्रवाइयां तो केवल शुरुआत होंगी। हम न तो बिना सोचे-समझे और न अनावश्यक रूप से विश्वव्यापी परमाणु-युद्ध का खतरा उठाएंगे जिसमें विजय का फल केवल मुट्ठी-भर राख ही होगा, लेकिन अगर उस खतरे का सामना करना आवश्यक हो ही गया तो हम उससे कदम भी पीछे न हटाएंगे।

इसलिए अपनी खुद की तथा समूचे पश्चिमी गोलार्द्ध की सुरक्षा के लिए तथा संविधान में मुझे सौंपे गए अधिकार, जिसके प्रति कांग्रेस के प्रस्ताव में सहमति प्रकट की गई है, का उपयोग करते हुए मैंने निम्नलिखित आरंभिक कदम फौरन उठाने के निर्देश दिए हैं:

...इस आक्रामक शस्त्र-भंडार को न बनने देने हेतु क्यूबा को जहाजों द्वारा आक्रामक सैनिक सामग्री का भेजना एकदम रोकने के लिए प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। किसी भी देश का जहाज जो क्यूबा जा रहा हो, उसमें अगर आक्रमण में प्रयोग हो सकनेवाले शस्त्रास्त्र

होंगे तो उसे क्यूबा न जाने दिया जाएगा, वापस जाने पर विवश किया जाएगा। अगर आवश्यक होगा तो यह प्रतिबंध अन्य प्रकार के माल तथा अन्य प्रकार के वाहकों पर भी लागू कर दिया जाएगा। लेकिन इस समय हम जीवन-निर्वाह की आवश्यक वस्तुएं क्यूबा जाना नहीं रोक रहे, जैसा कि सोवियत रूस ने 1948 में बर्लिन के घेरे के समय किया था।

...मैंने क्यूबा तथा उसकी सैनिक तैयारी पर कड़ी तथा और अधिक निगरानी रखे जाने के आदेश दे दिए हैं। ओ० ए० एस० (अमरीकी राज्य संगठन) के विदेशमंत्रियों ने 3 अक्टूबर की विज्ञप्ति में इस गोलार्द्ध के इस प्रकार के मामलों पर गोपनीयता बरतना स्वीकार न किया था। अगर ये आक्रामक सैनिक तैयारियां जारी रहीं और इस प्रकार गोलार्द्ध को खतरा बढ़ गया तो और कदम उठाना औचित्यपूर्ण हो जाएगा। मैंने सेनाओं को किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहने को कह दिया है और मुझे विश्वास है कि क्यूबा की जनता तथा वहां काम कर रहे सोवियत टैक्नीशियनों की भलाई की दृष्टि से, इस खतरे को बनाए रखने से उत्पन्न होनेवाले दुष्परिणामों को समझा जाएगा।

...इस राष्ट्र की यह नीति होगी कि क्यूबा से पश्चिमी गोलार्द्ध के किसी भी राष्ट्र के विरुद्ध परमाण्विक मिसाइल का छोड़ा जाना स्वयं अमरीका पर सोवियत संघ का आक्रमण माना जाएगा, और सोवियत संघ को उसकी जवाबी कार्रवाई भुगतनी पड़ेगी।

आज रात अमरीकी राज्य संगठन के परामर्शपक्ष की एक आवश्यक बैठक हम बुला रहे हैं ताकि इस गोलार्द्ध की रक्षा के लिए उपस्थित इस खतरे पर विचार किया जा सके। ...विश्व-भर में अपने अन्य मित्रराष्ट्रों को भी सावधान कर दिया गया है।

...संयुक्त राष्ट्रसंघ घोषणापत्र के अधीन हम आज रात सुरक्षा-परिषद् की आपत्कालीन बैठक अविलम्ब बुलाने के लिए कह रहे हैं ताकि विश्व-शांति के लिए सोवियत रूस के इस नये खतरे के विरुद्ध कार्रवाई की जा सके। हमारा प्रस्ताव यह होगा कि संयुक्त राष्ट्र के प्रेक्षकों की देखरेख में सभी आक्रमणकारी हथियारों को फौरन समाप्त कर दिया जाए या वापस ले जाया जाए, तभी क्यूबा पर लागू हमारा प्रतिबन्ध हटाया जाएगा।

...मैं प्रधानमंत्री स्त्रुश्चोव से अनुरोध करता हूं कि वे विश्व-शांति तथा हमारे दोनों देशों के बीच स्थायी सम्बन्ध के लिए उपस्थित किए इस गुरुगम्भीर, बेसमझे-बूझे तथा उत्तेजक खतरे को रोकें तथा समाप्त करें। मैं उनसे यह अनुरोध भी करता हूं कि वे विश्व को अपने अधीन करने के इस मार्ग का अनुसरण करना बन्द कर दें तथा घातक शस्त्रास्त्र-दौड़ रोकने एवं मानव के इतिहास की धारा बदलने के ऐतिहासिक प्रयास में हमारे साथ मिल जाएं। इस समय उनको यह मौका है कि वे विश्व को विनाश के कगार से वापस ले आए। ऐसा वे अपनी सरकार के इस वचन का पालन करके कर

6. संकट का समय

सकते हैं कि उसे अपने देश के भूभाग से बाहर कहीं भी प्रक्षेपणास्त्र लगाने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा वे क्यूबा से इन हथियारों को वापस लेकर, ऐसी कोई कार्रवाई न करके जिससे वर्तमान संकट फैले या गुरुता बढ़े और फिर शांतिपूर्ण तथा स्थायी समाधानों की खोज में हमारा साथ देकर कर सकते हैं।***

अन्त में, मैं क्यूबा के दास बने लोगों से कुछ शब्द कहना चाहता हूँ, जिनके लिए इस भाषण को विशेष रेडियो सुविधाओं द्वारा उस ओर प्रेषित किया जा रहा है। मैं आपके मित्र के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बोल रहा हूँ जिसे आपकी पितृभूमि से आपके अपूर्व स्नेह का पता है तथा जो सभी के लिए स्वतंत्रता तथा न्याय प्राप्त करने की आपकी तरह ही आकांक्षा रखता है। मैंने तथा अमरीकी जनता ने अत्यन्त दुःख के साथ देखा है कि किस प्रकार आपकी राष्ट्रीय क्रांति को धोखा दिया गया है तथा किस प्रकार आपकी पितृभूमि विदेशी बन्धनों में जकड़ दी गई है। अब आपके नेता वे क्यूबाई नेता नहीं हैं जो क्यूबा के आदर्शों से अनुप्राणित हों। वे तो उस अन्तर्राष्ट्रीय पड्यंत्र की कठपुतली तथा एजेण्ट बन गए हैं जिसने क्यूबा को उत्तरी-दक्षिणी अमरीका के आपके मित्रों तथा पड़ोसियों का दुश्मन बना दिया है तथा जिसने क्यूबा को पहला ऐसा लैटिन अमरीकी देश बना दिया है, जो परमाणु-युद्ध का लक्ष्य बनेगा—क्यूबा ऐसा प्रथम लैटिन अमरीकी देश बन गया है जिसकी भूमि पर ये शस्त्रास्त्र आ गए हैं।

ये नये हथियार आपकी भलाई के लिए नहीं हैं। इनसे आपकी शांति या हित नहीं होगा। इनसे उनको खतरा ही पैदा होगा। लेकिन यह देश नहीं चाहता कि आपको कण्ट उठाने पड़ें और न ही आपके ऊपर कोई प्रणाली लादना चाहता है। हम जानते हैं कि आपके जीवन तथा आपकी भूमि को वे लोग बंधक की तरह प्रयोग कर रहे हैं जिन्होंने आपकी स्वाधीनता छीन ली है।

...फिलहाल हमने जो मार्ग चुना है, वह बहुत संकटपूर्ण है जैसे-कि सभी मार्ग हुआ करते हैं; लेकिन यह मार्ग एक राष्ट्र के रूप में हमारे चरित्र तथा साहस और विश्व-भर में हमारे दायित्वों के अनुरूप है। स्वाधीनता की सदैव ऊँची कीमत देनी होती है—लेकिन अमरीकियों ने सदैव यह कीमत चुकाई है।***

अमरीका ने 24 अक्टूबर, 1962 को घेराबन्दी लागू की थी। संयुक्त राष्ट्रसंघ से हुई बातचीत तथा सोवियत और अमरीकी नेताओं के बीच लम्बे पत्र-व्यवहार के पश्चात्

चार दिन बाद श्री ख्रुश्चोव ने घोषणा की कि मैंने आदेश दे दिया है कि क्यूबा से सोवियत प्रक्षेपणास्त्र वापस मंगा लिए जाएं तथा उस द्वीप पर स्थित सभी आक्रामक अड्डे संयुक्त राष्ट्रसंघ की देख-रेख में तोड़ दिए जाएं। राष्ट्रपति ने इसपर फौरन उत्तर दिया था : “यह एक सच्चे नेता के सरीखा निर्णय है।”

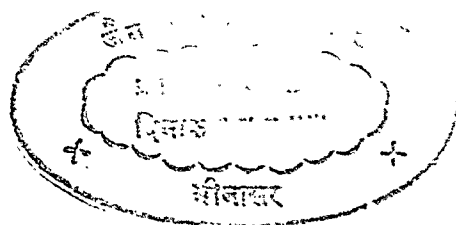
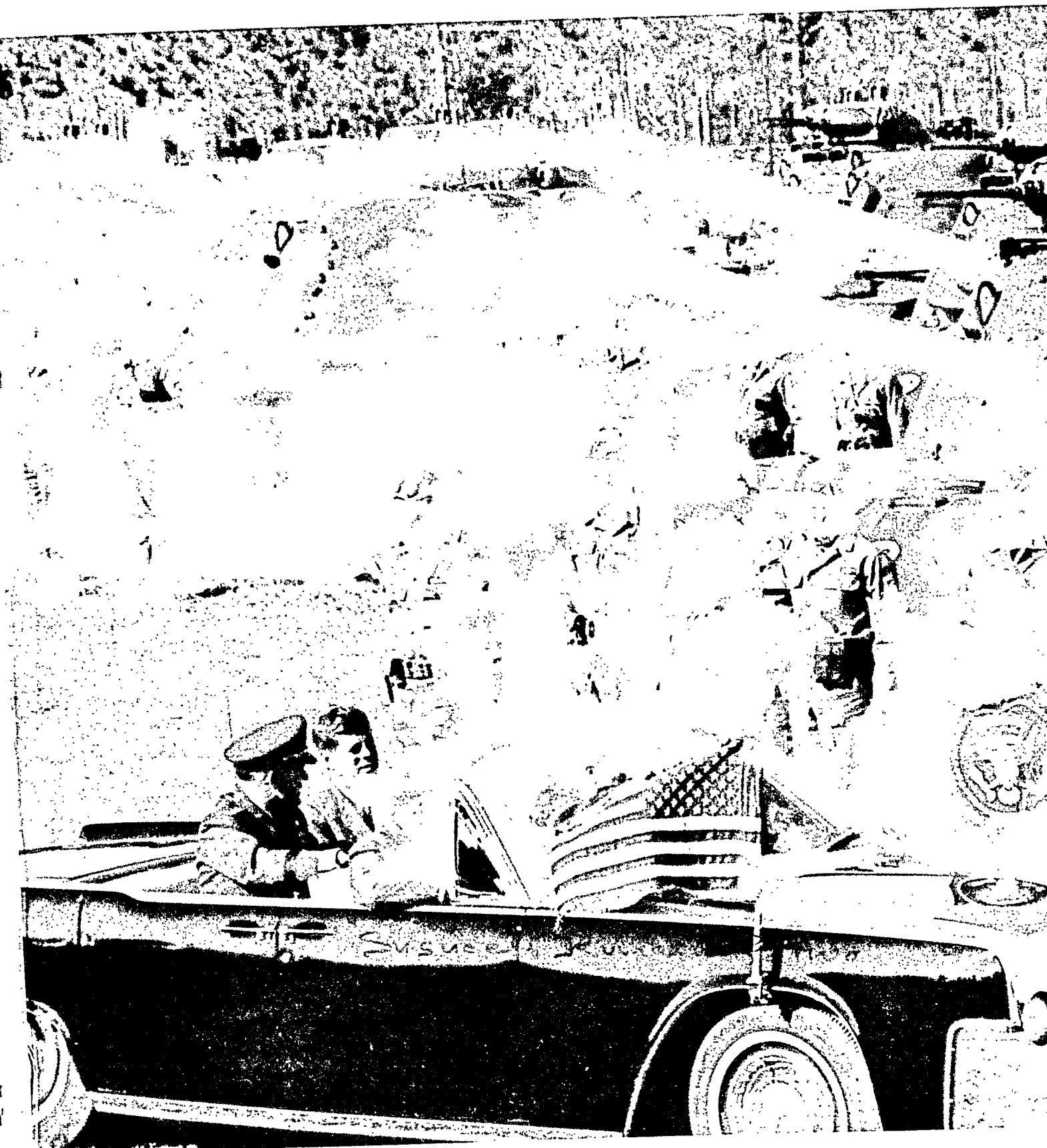
इस प्रकार वह संकट समाप्त हो गया। उसके बाद 14 जनवरी को श्री कॅनेडी कांग्रेस से कह सके : “हालांकि थोड़ा-बहुत खतरा अभी बना हुआ है, किन्तु भयंकर संकटपूर्ण खतरा फिलहाल क्यूबा से हटा दिया गया है।”

ऐसे संकट के अवसरों पर उनके शब्दों का क्या प्रभाव होगा, इस बारे में स्वयं राष्ट्रपति क्या अनुभव करते थे? नवम्बर के उस दुःखद दिन डल्लास, टैक्सास में बोलने के लिए आपने जो भाषण तैयार किया था उसमें लिखा था :

मैं

अनुभव करता हूँ कि यह राष्ट्र विश्व के मामलों में आनेवाले परिवर्तन के क्षणों में उन भाषणों के साथ एकाकार हो जाता है जो उन गम्भीर अवसरों पर दिए जाते हैं। इस प्रशासन में समय-समय पर विशिष्ट चेतावनियाँ देना आवश्यक हो जाता कि हम शक्तिबल से कम्युनिस्टों द्वारा लाओस को जीता जाना, या कांगों में हस्तक्षेप या पश्चिमी बर्लिन को हड़पा जाना या क्यूबा में आक्रामक प्रक्षेपणास्त्र बने रहना चुपचाप देखते नहीं रह सकते। लेकिन यद्यपि हमारे लक्ष्य इन तथा ऐसी ही अन्य बातों में अस्थायी रूप से प्राप्त कर लिए गए हैं, तथापि स्वाधीनता की सफल रक्षा इन अवसरों पर प्रयुक्त दृढ़ शब्दों के कारण नहीं, वरन् उस शक्ति के कारण सम्भव हुई है जो अपने इन सिद्धान्तों की खातिर हमने प्रयोग करने के लिए तैयार रखी थी जिनकी रक्षा के लिए हम सदैव सन्नद्ध थे।

‘जिस शक्ति का प्रयोग करने के लिए हम तैयार हैं।’



‘कार्रवाई करने का समय आ गया है’



अपनी तकलीफें दूर करवाने के लिए जाते हुए

संयुक्त राष्ट्रसंघ के महामन्त्री ऊ थां ने कहा था : "मैं देख रहा हूँ कि कुछ लोग श्री कॅनेडी को युवा लिंकन के रूप में देखने लगे हैं।" टांगानीका के जुलियस के० नैरेरे उन अनेक विश्वनेताओं में थे जो जॉन फिट्जरेल्ड कॅनेडी को सौ साल पहले के अमरीका के महान मुक्तिदाता की श्रेणी में बिठाने लगे थे। नये अफ्रीकी राष्ट्र के उस राष्ट्रपति ने कहा था : "वे निष्ठापूर्वक लिंकन के चरण-चिह्नों पर चले।" संयुक्त राज्य अमरीका तथा बाहरी जगत् में सभी व्यक्तियों को न्याय दिलाने का मार्ग सच्चे अमरीकियों द्वारा अपनाया जाना ही उनका स्थायी स्मारक होगा।" संयुक्त राज्य अमरीका में लिण्डन जॉनसन ने घोषणा की : "हमने अब्राहम लिंकन तथा जॉन कॅनेडी को तो समाधिस्थ कर दिया है, लेकिन हम उनके स्वप्नों तथा आदर्शों को दफन न होने देंगे। वे हमारे आज के स्वप्न तथा हमारे आज के आदर्श हैं।"

अमरीकी नीग्रो लोगों को समान अधिकार देने का लिंकन का स्वप्नादर्श बहुत-से समुदायों में खासकर दक्षिण में उस समय भी अपूर्ण पड़ा था जब जॉन कॅनेडी राष्ट्रपति पद के लिए अपनी पार्टी के उम्मीदवार चुने गए थे। उन्होंने नागरिक-अधिकारों के इस संघर्ष को अपना संघर्ष मान लिया। मर्सीड, कैलीफोर्निया में, चुनाव-आंदोलन के दौरान 9 सितम्बर, 1960 को किए अपने भाषणमें आपने कहा था :

अ

ब्राह्म लिंकन ने 1860 के चुनावों में कहा था : "संसार में भगवान है और वह अन्याय से घृणा करता है। मैं देख रहा हूँ कि एक तूफान आ रहा है और अगर उस प्रभु ने उसमें मेरे लिए कोई स्थान तथा कोई भूमिका निर्धारित कर दी है, तो उसका निर्वाह करने के लिए मैं तैयार हूँ।" वह भगवान आज भी है और वह अन्याय से घृणा भी करता है, और हम देख रहे हैं कि एक तूफान आ रहा है। लेकिन मैं समझता हूँ कि उसमें हम सबके लिए स्थान तथा एक भूमिका निर्धारित है और मैं समझता हूँ कि हम उसके लिए तैयार हैं।

उसी दिन लौस एंजेलेस में उम्मीदवार कॅनेडी ने विश्वासपूर्वक कहा था :

एक नैतिक नेता के रूप में अगले राष्ट्रपति को उन महान नैतिक समस्याओं की व्याख्या करने की अपनी भूमिका निभानी चाहिए जो मानव-अधिकारों के हमारे धर्मयुद्ध का आधार है। उसे अपने पद की महान नैतिक एवं शैक्षिक शक्ति का उपयोग... प्रत्येक अमरीकी द्वारा अपने अधिकारों की मांग के समर्थन में करना चाहिए।... क्योंकि अमरीकी राष्ट्रपति ही समस्त अमरीकी जनता के प्रवक्ता के रूप में तथा उस नैतिक आवश्यकता के प्रतीक के रूप में जिसपर कोई भी स्वतंत्र समाज आधारित है, आवश्यक सहिष्णुता तथा एक-दूसरे की बात समझने का वातावरण पैदा कर सकता है।

श्री कॅनेडी ने जिस तूफान के आने की भविष्यवाणी की थी, वह उनके पद-ग्रहण करने के चंद महीनों के अन्दर ही नाटकीय प्रभाव लेकर उपस्थित हो गया। लेकिन जिस नैतिक नेतृत्व की बात उन्होंने पहले कही थी, उसका प्रभाव डालने के लिए वे पहले ही कदम बढ़ा चुके थे। 6 मार्च, 1961 को उन्होंने "एक शक्तिशाली व्यवस्था" स्थापित करने का आदेश दिया जिससे "सभी वर्णों तथा विश्वासों के माननेवाले अमरीकियों को" सरकार तथा सरकारी काम करनेवाले ठेकेदारों के यहां "नौकरी पाने का समान अधिकार" होगा। आपने राष्ट्रपति की समान-नौकरी-अधिकार-समिति स्थापित की थी जिसके अध्यक्ष श्री लिण्डन जॉनसन थे।

उपराष्ट्रपति के निर्देशन में नौकरी देनेवाली देश की प्रमुख कम्पनियों के साथ मिलकर "आगे बढ़ने की योजनाएं" बनाई गई थीं। 7 फरवरी, 1962 को व्हाइट हाउस के एक समारोह में श्री कॅनेडी ने श्री जॉनसन के प्रति "देश की महान सराहना" के उद्गार प्रकट किए और फर्मों के प्रधानों से कहा : "आप लोग स्वेच्छा से स्वयं को तथा अपनी कम्पनियों को एक जबर्दस्त सद्कार्य से जोड़ रहे हैं।"

उधर दक्षिण में, नीग्रो लोगों ने समान अधिकार के अपने संघर्ष के प्रति राष्ट्र का नहीं, विश्व-भर के लोगों का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित कर लिया। स्कूलों, बस-स्टेशनों तथा लंच काउंटरो पर वर्णभेद-विरोधी प्रदर्शनों ने नागरिक-अधिकारों के प्रश्नों को सबके सामने स्पष्ट रूप से उपस्थित कर दिया। समाचारपत्रों के शीर्षकों द्वारा बार-बार जनता

7. मानव-अधिकार

के द्वारा इन शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने के अधिकारों के प्रति संघीय सरकार का समर्थन व्यक्त किया—वह समर्थन जिसका आदेश राष्ट्रपति ने दिया था। दक्षिण में बार-बार नीग्रो लोगों के कानूनी अधिकारों को चुनौती दी गई और बार-बार राष्ट्रपति के भाई एटर्नी जनरल राबर्ट कैनेडी को इन अधिकारों का संवैधानिक आधार सुस्पष्ट करने के लिए कार्रवाई करनी पड़ी।

1962 के उत्तरार्द्ध में दक्षिण के आक्सफोर्ड, मिसी-सिपी नगर की ओर विश्व-भर की निगाहें जम गईं। वर्ण-भेद के समर्थकों ने संघीय न्यायालय के आदेश के अनुसार मिसीसिपी विश्वविद्यालय में नाम लिखानेवाले पहले नीग्रो जेम्स मैरेडिथ को कक्षा में जाने से रोकने का विफल प्रयास करते हुए उपद्रव शुरू कर दिए। तत्काल निर्णायक कदम उठाते हुए राष्ट्रपति ने अमरीकी मार्शलों को आदेश दिया कि वे युवक मैरेडिथ को साथ लेकर विश्वविद्यालय जाएं, वहां शांति तथा व्यवस्था स्थापित करें और मिसीसिपी की मिलिशिया को अपनी निजी कमान में लेकर उसको संघीय सरकार के अधीन ले आए। आपने कहा “अमरीकियों को सरकारी कानून से मतभेद रखने का अधिकार है, लेकिन उसका उल्लंघन करने का नहीं।”

पूर्ण समानता के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन की गति में तीव्रता लगातार आती गई। ऐसे ही वातावरण में श्री कैनेडी विमान द्वारा 9 जून, 1963 को होनोलुलू गए और नगर महापौरों के एक राष्ट्रीय सम्मेलन में चेतावनी दी कि “सांकेतिक कदम उठाने तथा कोरी बातें करने का जमाना लद गया और अधिकार-प्राप्ति का यह संघर्ष तो सफल होकर रहेगा।” आपने महापौरों से अनुरोध किया कि वे “सावधान रहें, धवराहट मन में न लाएं और एक शांतिपूर्ण क्रान्ति लाने के काम को जिससे...हमारा श्रेष्ठतम दायित्व पूरा हो सकेगा...एक रचनात्मक दिशा देने में मेरा साथ दें।”

दो दिन बाद वे राष्ट्रव्यापी रेडियो तथा टेलीविजन पर बोले। टस्कालूजा, अलबामा में दो नीग्रो छात्रों को, संघीय न्यायालय के आदेश का उल्लंघन करते हुए, अलबामा विश्वविद्यालय में दाखिल करने से रोक दिया गया। लेकिन राष्ट्रपति ने जब अलबामा की मिलिशिया को संघीय

अधिकार में ले लिया तो दो दिन बाद बिना किसी हिंसात्मक कार्रवाई की उन दोनों को विश्वविद्यालय में दाखिल कर लिया गया। अत्यन्त मर्मस्पर्शी शब्दों में श्री कैनेडी ने कहा :

सुभे आशा है कि प्रत्येक अमरीकी, चाहे वह कहीं रहता हो, इस तरह की तथा इससे सम्बन्धित घटनाओं को रोकेगा तथा इनके बारे में एवं इनसे सम्बद्ध घटनाओं के बारे में अपनी आत्मा को टटोलेगा। इस राष्ट्र की स्थापना विभिन्न राष्ट्रों के लोगों और विभिन्न आधारों पर की गई थी। इसकी स्थापना इस सिद्धान्त के आधार पर हुई थी कि सभी व्यक्ति समान पैदा हुए हैं और अगर एक भी व्यक्ति के अधिकारों पर आंच आती है तो प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार कम हो जाते हैं।...

असली प्रश्न यह है कि क्या सभी अमरीकियों को समान अधिकार तथा समान अवसर प्रदान करने हैं? क्या हम अपने अमरीकी भाइयों के साथ वैसा ही व्यवहार करने को तैयार हैं, जैसे व्यवहार की हम स्वयं आशा करते हैं। अगर एक अमरीकी, अपनी चमड़ी का रंग काला होने के कारण आम जनता के लिए खुले हुए रेस्तरां में खाना नहीं खा सकता, अगर वह सर्वोत्तम सुलभ पब्लिक स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ने के लिए नहीं भेज सकता, अगर वह अपना प्रतिनिधित्व करनेवाले सरकारी अधिकारी के चुनाव में मत देने का अधिकारी नहीं है, संक्षेप में, उसे वह पूर्ण तथा मुक्त जीवन जीने का अधिकार नहीं है जो हम सब जीना चाहते हैं, तो हममें से कितने व्यक्ति हैं जो अपनी त्वचा का रंग बदलवाकर उसके स्थान पर खड़ा होना पसंद करेंगे? उस समय हममें से कितने लोग धैर्य तथा विलम्ब की नेक सलाह सुनकर संतुष्ट हो सकेंगे?

राष्ट्रपति लिंकन ने जब दासों को मुक्त किया था, उसके बाद से सौ वर्ष बीत चुके हैं, फिर भी उनके उत्तराधिकारी, उनके प्रपौत्र पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं हैं। वे अब भी अन्याय के बन्धनों से मुक्त नहीं हैं। वे अब भी सामाजिक तथा आर्थिक दमन से मुक्त नहीं हैं तथा यह राष्ट्र भी, अपनी तमाम आशाओं तथा गर्ववित्तियों के बावजूद, तब तक पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं कहलाएगा, जब तक उसके सभी नागरिक स्वतन्त्रता का सुख भोग न करते हों।

हम संसार-भर में स्वतन्त्रता का प्रचार करते हैं और हम जब यह कहते हैं, तो सच्चे हृदय से कहते हैं, हम स्वदेश में पूरी स्वतन्त्रता रखने के पक्षपाती हैं, लेकिन क्या हम संसार से, और अधिक महत्वपूर्ण बात तो यह है कि क्या एक-दूसरे से यह कह सकते हैं कि यह देश नीग्रो लोगों को छोड़कर शेष स्वतन्त्र व्यक्तियों का देश है; हमारे देश में नीग्रो लोगों को छोड़कर दूसरे दर्जे के नागरिक नहीं हैं, और हमारे देश में किसी प्रकार का जातिभेद, श्रेणीभेद या वर्णभेद नहीं, केवल नीग्रो लोगों के लिए ही ऐसी बात है?

अब समय आ गया है कि यह राष्ट्र अपना वचन निभाए।...

घटनाक्रम ने...समानता के लिए आवाज इतनी बढ़ा दी है कि कोई भी नगर या राज्य या विधायिका विवेकपूर्ण अवस्था में इसकी उपेक्षा नहीं कर सकती।

निराशा तथा असंतोष की आग उत्तर तथा दक्षिण के प्रत्येक नगर में धधक रही है जहाँ कोई भी कानूनी आश्रय सुलभ नहीं है। अपनी मांग की पूर्ति सड़कों पर, प्रदर्शनों, परेडों तथा विरोधी जुलूसों द्वारा कराने की चेष्टा की जाती है, जिससे तनाव पैदा होता है, हिंसा का खतरा तथा प्राणों के जाने का अन्देश पैदा होता है।

अतः एक देश तथा एक जनसमुदाय के रूप में हमारे सामने नैतिक संकट आ उपस्थित हुआ है। इसका सामना दमनकारी पुलिस कार्रवाई द्वारा नहीं किया जा सकता। उसके निपटारे के लिए उसे सड़कों पर और अधिक प्रदर्शनों के हवाले नहीं किया जा सकता। इसे सांकेतिक कार्रवाइयों या वार्ता के द्वारा शांत नहीं किया जा सकता। अब समय आ गया है, जब हमें कांग्रेस में, अपने राज्य तथा स्थानीय विधान निकायों और सबसे अधिक अपने दैनिक जीवन में कदम उठाने होंगे।

अन्य लोगों पर दोषारोपण करना या यह कहना कि यह तो देश के एक भाग की समस्या है या जिसवस्तुस्थिति का हमें सामना करना पड़ रहा है, उसके लिए किसीकी निन्दा करना पर्याप्त नहीं है। हमारे सामने बहुत बड़ी चुनौती आ गई है और हमारा काम तथा हमारा दायित्व यह है कि उस क्रान्ति, उस परिवर्तन को सभीके लिए शांतिपूर्ण तथा रचनात्मक रूप दें।

जो लोग कुछ नहीं कर रहे हैं, वे लज्जा और हिंसा को आमंत्रित कर रहे हैं। जो साहसपूर्वक कार्रवाई कर रहे हैं, वे अधिकार एवं वास्तविकता को स्वीकार कर रहे हैं।

...अतः मैं कांग्रेस से ऐसा कानून बनाने का अनुरोध कर रहा हूँ जिसके अनुसार सभी अमरीकियों को होटलों, रेस्तरां, थियेटर, खुदरा स्टोरों तथा इसी तरह के अन्य स्थानों में आने-जाने तथा उनका उपयोग करने की वे सभी सुविधाएं सुलभ हों, जो सबके लिए सुलभ हैं।

मुझे यह एक प्राथमिक अधिकार प्रतीत होता है। यह अधिकार न देना जान-बूझकर असम्मान प्रकट करना है जो 1963 में किसी अमरीकी को सहन नहीं करना चाहिए था, किन्तु बहुतों को ऐसा करना पड़ रहा है।

पिछले कुछ अरसे से मैं व्यापारियों से मिलता रहा हूँ और उनसे अनुरोध करता रहा हूँ कि वे स्वेच्छा से अपने यहां इस तरह का भेदभाव समाप्त कर दें। इसकी उनके ऊपर जो प्रतिक्रिया हुई है, उससे मुझे प्रोत्साहन मिला है। गत दो सप्ताहों के अन्दर पचहत्तर से अधिक शहरों में इस तरह की सुविधाओं में वरता जानेवाला भेदभाव समाप्त कर दिया गया है। लेकिन बहुत-से लोग अकेले ही इस तरह का कदम उठाना नहीं चाहते। इसी कारण इस प्रकार का राष्ट्रव्यापी

कानून बनने की आवश्यकता है वशर्ते कि हम इस समस्या को सड़कों से हटाकर अदालतों तक लाना चाहते हों।

...यह एक देश है। यह देश एक देश इसलिए बन सका क्योंकि हम सब इसे एक बनाना चाहते थे और यहां आनेवाले सभी लोगों को अपनी प्रतिभा का विकास करने का समान अवसर सुलभ था। हम अपनी दस प्रतिशत जनता से यह नहीं कह सकते कि आप इस अधिकार का उपभोग नहीं कर सकते।

19 जून, 1963 को श्री कैंनेडी ने नागरिक अधिकार अधिनियम का प्रारूप कांग्रेस को भेजा जिसका उद्देश्य उन्हींके शब्दों में इस बात से आश्वस्त कर देना था कि नीग्रो लोगों को "प्रत्येक अमरीकी को वोट देने, स्कूल जाने, नौकरी हासिल करने तथा होटल आदि सार्वजनिक स्थान में खाना बिना किसी भेदभाव के परोसे जाने के अधिकार से वंचित नहीं किया जाएगा।"

दो महीने बाद, 28 अगस्त को विभिन्न जातियों तथा वर्णों के अमरीकियों ने मिलकर नागरिक-अधिकारों की मांग के लिए वाशिंगटन में अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। जार्ज वाशिंगटन के विशाल स्मारक के सामने दो लाख से ऊपर स्त्री-पुरुष तथा बच्चे एकत्र हुए तथा वहां से थोड़ी दूर पर ही स्थित लिंकन स्मारक तक स्वाधीनता, आशा तथा अमरीका के गीत गाते हुए गए। अनुशासित तथा बिना किसी अप्रिय घटना के आयोजित इस मार्च की प्रशंसा राष्ट्रपति ने इसे "अपने कष्ट-निवारण की मांग करनेवाला शांतिपूर्ण प्रदर्शन" कहकर की और यह अपने-आपमें प्रजातंत्र की विजय सिद्ध हुई—राष्ट्र की आत्मा का शांतिपूर्ण तथा शक्तिशाली प्रदर्शन।

इस मार्च के नेताओं से बात करते हुए श्री कैंनेडी ने घोषित किया :

जिस उत्साह तथा शांत गौरव के साथ हजारों आदमी देश के विभिन्न भागों से हमारी प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली में आस्था तथा विश्वास प्रकट करने के लिए एकत्र हुए थे, उससे कौन प्रभावित हुए बिना रह सकता है ! ...दो करोड़ नीग्रो लोगों के भाग्य-निर्णय की बात हुई है...लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे समस्त

7. मानव-अधिकार

मानवता लाभान्वित हुई है।

12 सितम्बर को श्री कैंनेडी ने राष्ट्र का ध्यान उस प्रगति की ओर आकृष्ट किया जो दक्षिण में प्रगतिशील दक्षिण अमरीकियों ने मौनभाव से किन्तु प्रभावशाली ढंग से की थी।

...गत दो सप्ताह में दक्षिण के एक सौ पचास नगरों के स्कूलों में भेदभाव समाप्त कर दिया गया है। इसमें कुछ कठिनाइयाँ आई होंगी किन्तु इन समुदायों की बहुसंख्यक जनता तथा सरकारी अफसरों के लिए बड़े श्रेय की बात है कि यह परिवर्तन बड़ी सूझबूझ तथा कानून के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए किया गया है। यह काम कुछ सरल न था। वर्णभेद की भावना का पोषण कई पीढ़ियों से होता आया है और बहुत-से नेताओं को अपने जनसमुदाय के सामाजिक दृष्टिकोणों के साथ-साथ अपने स्वयं के दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन लाना पड़ा है।...

20 सितम्बर को राष्ट्रपति ने नागरिक-अधिकारों के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्रसंघ में विचार-विमर्श किया। उस समय आपने यह स्पष्ट किया, जैसाकि वे पहले प्रायः करते रहे थे, कि यह समस्या ऐसी है जो संयुक्त राज्य अमरीका की सीमाओं से भी आगे निकल गई है।

...संयुक्त राष्ट्रसंघ घोषणापत्र के अधीन इस संस्था के सदस्यों पर मानव-अधिकार बढ़ाने तथा उनका समादर करने का उत्तरदायित्व है। अगर किसी बौद्ध पुजारी को पगोड़ा से निकाल दिया जाता है, अगर एक यहूदी पूजास्थल बन्द कर दिया जाता है, अगर एक प्रोटेस्टेंट चर्च अपना मिशन नहीं खोल सकता, या एक पादरी को बलात् छिपना पड़ता है या गिरजाघर में पूजा के लिए आई भीड़ पर बम-वर्षा की जाती है, तो उन अधिकारों का समादर नहीं होता। संयुक्त राज्य अमरीका संसार में कहीं भी, स्वयं अपने देश में भी—जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव या अत्याचार किए जाने का विरोधी है। इन भूलों को अपने देश में सुधारने के लिए हम प्रयास कर रहे हैं।

कानून बनाकर तथा प्रशासनिक कदम उठाकर, नैतिक तथा कानूनी बंधनों के द्वारा मेरी सरकार ने अपने राष्ट्र को उस भेदभाव से मुक्त करने का सकलपूर्ण प्रयास शुरू किया है जो शिक्षा, आवास, परिवहन, नौकरी पाने, सरकारी सेवाओं, आमोद-प्रमोद तथा उठने-

वैठने के सार्वजनिक स्थानों पर एक लम्बे अरसे से चला आ रहा है। और इसीलिए इस स्थान या अन्य किसी माध्यम से हम जातीय या धार्मिक अन्याय की निन्दा करने से नहीं भिन्नकते चाहे वह हमारे मित्र द्वारा किया जा रहा हो, चाहे शत्रु द्वारा।

...मुझे आशा है कि न केवल हमारा ही राष्ट्र, अपितु अन्य बहुजातीय समाजों में भी औचित्य तथा न्याय का यह मानदण्ड मान्य होगा। हम वर्णभेद तथा किसी भी रूप में मानव-अत्याचार के विरोधी हैं। हम काले अफ्रीकियों को अधिकार देने का समर्थन इसलिए नहीं करते कि श्वेत अफ्रीकियों को निकाल दिया जाए। हमारी चिन्ता तो यही है कि सभी व्यक्तियों को कानून के समक्ष समान सुरक्षा प्राप्त हो और चूँकि मानव-अधिकार अविभाज्य हैं, इसलिए यह संस्था भी उस समय आँखें मूंदे खड़ी नहीं रह सकती जब किसी सदस्य राष्ट्र द्वारा उन अधिकारों का दुरुपयोग या हनन किया जा रहा हो।

अपनी मृत्यु से चार दिन पहले मियामी बीच, फ्लोरिडा में जब श्री कैंनेडी ने दक्षिण अमरीका के प्रकाशकों के समक्ष भाषण किया तो मानव-अधिकारों का यह प्रश्न पुनः चर्चा का विषय बना।

भ

विषय के प्रति हम सबकी मिली-जुली आशा यही है कि...यह गोलाद्ध ऐसा बने जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को खाने को पर्याप्त मिले, काम करने का अवसर मिले, जिसमें प्रत्येक वच्चा पढ़ सके तथा प्रत्येक परिवार को रहने के लिए अच्छा शरणस्थल मिल सके। हमारी आशा है कि इस गोलाद्ध में प्रत्येक व्यक्ति...सामाजिक अन्याय से मुक्त हो, उसे खुली छूट हो कि वह अपनी प्रतिभा का जितना विकास कर सके करे। तब तक वास्तविक प्रगति नहीं हो सकती जब तक लाखों-करोड़ों के लिए अवसर के द्वार बन्द रहे तथा अन्य लोग अपने दायित्वों से मुंह मोड़े रहें। स्वयं हमारे देश में हमने कानून बनाया है तथा सघीय सरकार की शक्ति को संगठित किया है जिससे अमरीकी नीग्रो लोगों तथा अन्य अल्पसंख्यकों को अमरीकी समाज की सभी सुविधाओं का लाभ मिल सके। अन्य लोगों को भी ऐसे ही कदम भूमिहीन किसानों, सुविधाओं के अभाव में पड़े गंदी बस्ती के निवासियों तथा अत्याचार-पीड़ित इंडियनों के लिए उठाने चाहिए। सुविधाओं को छोड़ना सरल नहीं होता, लेकिन जब तक कुछ समूचे राष्ट्र के हितार्थ अपने हितों का त्याग नहीं करते, तब तक अपने समाज के वायदों तथा आधुनिकीकरण की बात करना अपने लाखों ही नागरिकों के साथ एक मजाक ही बना रहेगा।



सबके लिए बुनियादी शिक्षा पाने का अधिकार

‘आत्मा, ग्रहों की

खोज करें

“आओ, हम ग्रहों की खोज करें।” अपने उद्घाटन-भाषण में राष्ट्रपति कैंनेडी द्वारा दिया गया यह आमंत्रण दूरदृष्टा लोगों, सुदूर अंतरिक्ष में विद्यमान अज्ञात ग्रहों तक पहुंचने का स्वप्न देखनेवाले युवाओं तथा साहसिक कामों में जुटे सभी देशों के लोगों के लिए विशेष महत्त्व रखता था। लेकिन उनके शब्द साहसी लोगों के लिए आह्वान से भी अधिक थे, वे इस बात का संकेत थे कि कैंनेडी प्रशासन एक अन्य नई सीमा (न्यू फ्रंटियर) : बाह्य अंतरिक्ष पर मानव की विजय के कार्य को पूरी प्राथमिकता देना चाहता है।

इस सम्बन्ध में श्री कैंनेडी का उत्साह श्री लिण्डन जॉनसन को राष्ट्रीय विमान-विज्ञान एवं अंतरिक्ष परिषद् का अध्यक्ष शीघ्र ही नियुक्त करने से प्रकट था। 25 मई, 1961 को राष्ट्रपति कांग्रेस के समक्ष उपस्थित हुए और बताया कि संयुक्त राज्य अमरीका के समक्ष जो ‘असाधारण चुनौती’ आ उपस्थित हुई है उसका सामना कैसे करना है।

अ

ंतरिक्ष-अन्वेषण के क्षेत्र में हमने अब तक जो कुछ किया है, उसकी समीक्षा की गई है। उपराष्ट्रपति के परामर्श से, जो राष्ट्रीय अन्तरिक्ष परिषद् के प्रधान हैं, हमने इस बात की जांच की है कि कहां हम शक्तिशाली हैं कहां नहीं, कहां हम सफल हो सकते हैं और कहां नहीं, अब समय आ गया है जब हम अधिक लंबी छलांग लगाएं, महान नये अमरीकी प्रयास का समय तथा अंतरिक्ष-अनुसंधान की सफलता में इस राष्ट्र द्वारा निश्चित रूप से प्रमुख भूमिका अदा करने का समय आ गया है जो पृथ्वी पर हमारे भविष्य की कुंजी हो सकती है।

***मेरा विश्वास है कि इस राष्ट्र को इस दशक की समाप्ति से पहले ही चन्द्रमा तक एक व्यक्ति को भेजने तथा उसे सकुशल वापस लाने का लक्ष्य पूरा करने के लिए जुट जाना चाहिए। इस अवधि की अंतरिक्ष-सम्बन्धी कोई अन्य एक परियोजना मानवता के लिए इतनी प्रभावशाली या अंतरिक्ष-अन्वेषण की दीर्घकालीन दृष्टि से इतनी महत्वपूर्ण न होगी और न इतनी कठिन तथा व्ययसाध्य होगी, जितनी मानव भेजने की योजना है।

चन्द्रमा तक जा सकने वाले उपयुक्त नभयान के निर्माण-कार्य को हम तेज करना चाहते हैं। हम वैकल्पिक तरल एवं संघन ईंधन

8. अंतरिक्ष

उत्तेजक पदार्थ खोज निकालना चाहते हैं जो इस समय बनाए जा रहे पदार्थ से भी बड़ा हो और तब तक इस दिशा में चलते रहेंगे जब तक हमें पक्का निश्चय न हो जाए कि वह बढ़िया है। हम एक नया इंजन बनाने तथा बिना चालक के चलनेवाले नभयानों से अन्वेषण करने के लिए अधिक धन खर्च करना चाहते हैं, क्योंकि ये अन्वेषण एक दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं और इस बात को राष्ट्रों को नज़रंदाज नहीं करना चाहिए। यह बात है, उस व्यक्ति को जीवित रखने की, जो इस साहसपूर्ण पहली अंतरिक्ष-यात्रा पर जाएगा। लेकिन वास्तविक रूप से देखें तो अकेला एक व्यक्ति ही चन्द्रमा तक नहीं जाएगा वरन् अगर हम इस सम्बन्ध में अनुकूल निर्णय करें तो समूचा राष्ट्र ही जाएगा। क्योंकि उसे चन्द्रमा तक भेजने के लिए हम सबको प्रयास करने चाहिए।

1962 में राष्ट्रपति कैंनेडी ने कांग्रेस के समक्ष अपने उद्घाटन-संदेश में कहा था :

विगत वर्ष में हमने बाह्य अंतरिक्ष में एक महान नया प्रयास अपने हाथ में लिया है।

...यह प्रयास करने में हमारा उद्देश्य, जिसके अनुसार हमें आशा है कि हम अपने एक राष्ट्रज को चन्द्रमा तक भेज सकेंगे, विज्ञान, वाणिज्य तथा सहयोग की एक नई सीमा उपस्थित करना है, जिसका लक्ष्य लेकर संयुक्त राज्य अमरीका तथा स्वतंत्र जगत् चल रहा है।...

उसके बाद 12 सितम्बर को श्री कैंनेडी ने हौस्टन, टेक्सास, की राइस यूनीवर्सिटी के समक्ष 'अंतरिक्ष की चुनौती' विषय पर भाषण किया था :

...कोई भी राष्ट्र जो अन्य राष्ट्रों का नेता होने की आशा करता है, वह अंतरिक्ष-अन्वेषण की इस दौड़ में पीछे रहने की नहीं सोच सकता।

हमसे पहले की पीढ़ियों ने प्रयासपूर्वक देश को औद्योगिक क्रांति की पहली लहर में आगे ला खड़ा किया, आधुनिक आविष्कारों में सबसे आगे रहे, तथा परमाणु शक्ति के रूप में राष्ट्र को सर्वप्रथम रखा। और यह पीढ़ी आनेवाले अंतरिक्ष-युग में पीछे नहीं रहना

चाहती। हमारा उद्देश्य है कि हम उसके अंग रहें, यानी हम उसमें भी नेतृत्व करें।

आज संसार की आंखें अंतरिक्ष पर, चन्द्रमा पर तथा उससे भी आगे के नक्षत्रों पर लगी हैं। हमने प्रतिज्ञा की है कि हम उन नक्षत्रों पर विरोधी शक्तियों का विजयी ध्वज फहराता नहीं देखेंगे वरन् स्वाधीनता तथा शांति का झंडा लहराएंगे।

हमने प्रतिज्ञा की है कि हम अंतरिक्ष को सामूहिक विनाश के हथियारों से नहीं भरने देंगे, वरन् ज्ञान तथा समझदारी के उपकरणों से भरेंगे। किन्तु राष्ट्र की ये प्रतिज्ञाएं उसी अवस्था में पूरी होंगी जब इस क्षेत्र में यह राष्ट्र सबसे आगे रहे और इसीलिए हम इस दौड़ में सबसे आगे रहना चाहते हैं।

संक्षेप में, विज्ञान और उद्योग के क्षेत्र में हमारा नेतृत्व, शांति तथा सुरक्षा की हमारी आशाएं, स्वयं अपने तथा अन्य राष्ट्रों के प्रति हमारे दायित्व इन सभी दृष्टियों से यह आवश्यक है कि हम यह प्रयास करें, प्रकृति के इन रहस्यों का उद्घाटन करें, समस्त मानव-समाज के लिए इन समस्याओं को सुलझाएं तथा विश्व के प्रमुख अंतरिक्ष-अनुसंधानकर्ता राष्ट्र बनें।

हमने इस नये ज्ञान-सागर में यात्रा आरंभ की है, क्योंकि हमें नया ज्ञान प्राप्त करना है, नये अधिकार हासिल करने हैं। और हमें सभी लोगों की प्रगति के लिए इन्हें प्राप्त करना ही चाहिए।

क्योंकि परमाणु-विज्ञान की भांति अंतरिक्ष-विज्ञान एवं सभी टेक्नालाजी की अपनी नैतिक बुद्धि नहीं होती। तब अंतरिक्ष-विज्ञान कल्याणकारी शक्ति बनेगा या विनाशकारी, यह मनुष्य पर निर्भर होगा और अगर अमरीका अत्यन्त महत्त्व का स्थान हासिल कर ले, तभी हम यह निर्णय करनेवाले बन सकते हैं कि यह नया ज्ञान-सागर शांति-सागर बनेगा या युद्ध का नया आतंककारी अंचल।

मैं यह नहीं कहता कि हमें अंतरिक्ष के दुरुपयोग के विरुद्ध अरक्षित जाना चाहिए या हम अरक्षित जाएंगे जैसा कि भूमि या सागर के विरोधी उपयोग के समय हम अरक्षित न होंगे। लेकिन मैं यह अवश्य कहूंगा कि अंतरिक्ष का अन्वेषण तथा उसका नियमन युद्ध की ज्वाला भड़काए बिना या वे गलतियां दुहराए बिना भी किया जा सकता है जो मनुष्य ने हमारे भूमण्डल पर अपनी राजाशाओं का विस्तार करने के लिए की हैं।

अभी तक बाह्य अंतरिक्ष में कोई संघर्ष, कोई पक्षपात या कोई राष्ट्रीय संघर्ष नहीं हुआ है। उसकी बाधाएं हम सबका समान रूप से मार्ग अवरुद्ध किए खड़ी हैं। समस्त मानवता का सर्वोत्तम बुद्धि-वैभव लगाकर ही इसकी विजय हो सकेगी और इसके शांतिपूर्ण सह-योग का अवसर शायद फिर कभी नहीं आए।...

हमने चन्द्रमा तक जाने का फैसला किया है...क्योंकि इस लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयास में हम अपनी सर्वोत्तम शक्तियां तथा कुशलता लगा सकते हैं तथा उसकी आजमाइश कर सकते हैं, क्योंकि यह एक

ऐसी चुनौती है, जिसे स्वीकार करने को हम तैयार हैं और जिसे हम स्थगित करना नहीं चाहते तथा ऐसी चुनौती है जिसे हम जीतना चाहते हैं तथा अन्य भी इसे जीतने के इच्छुक हैं।

इन्हीं कारणों से मैं अंतरिक्ष-अन्वेषण के अपने प्रयासों को मंद सेतीव्र करने के गत वर्ष के निश्चय को उन परम महत्वपूर्ण निश्चयों में गिनता हूँ जो मेरे राष्ट्रपति-काल में किए जाएंगे।

विगत उन्नीस महीनों में कम से कम पैंतालीस उपग्रहों ने पृथ्वी की परिक्रमा की है। इनमें से कोई चालीस संयुक्त राज्य अमरीका में बनाए गए थे और वे सोवियत रूस द्वारा छोड़े गए उपग्रहों से कहीं अच्छे थे तथा उनसे कहीं अधिक जानकारी उन्होंने विश्व की जनता को दी है।...

हमें विफलताओं का भी मुंह देखना पड़ा, लेकिन अन्य लोगों को भी विफलताएं हुईं। भले ही वे उन्हें स्वीकार न करें और जनता को उसकी कम जानकारी हो।

निश्चित वस्तुस्थिति यह है कि किसी व्यक्ति को बैठकर उसे आकाश में भेजने में हम पीछे हैं और अभी कुछ समय तक रहेंगे। लेकिन हम इसमें भी पीछे नहीं रहना चाहते और इस दशक में हम कमी पूरी करके सबसे आगे निकल सकेंगे।

हमारे विश्व तथा उसकी स्थितियों के विषय में प्राप्त नई जानकारी; ज्ञान प्राप्त करने, मानचित्रांकन तथा निरीक्षण की नई तकनीकों तथा उद्योगों, चिकित्सा, घरों एवं स्कूलों के लिए नये उपकरणों एवं कम्प्यूटरों से हमारे विज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र समृद्ध होंगे। राइस सरीखे प्रशिक्षण संस्थान इस नये ज्ञानार्जन से लाभान्वित होंगे।...

अनेक वर्ष पहले महान ब्रिटिश अन्वेषक जार्ज मैलोरी से, जिन्होंने एवरेस्ट पर्वत पर ही मृत्यु का आलिंगन किया था, पूछा गया था कि आखिर आप उस पर्वत पर क्यों चढ़ना चाहते हैं? तो उनका उत्तर था: "क्योंकि वह चढ़ने के लिए वहां है।"

ठीक इसी प्रकार अंतरिक्ष भी है और हम भी उसपर चढ़कर रहेंगे। इसके अलावा चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह हैं तथा ज्ञानार्जन और शांति की नई आशाएं हैं। और इसीलिए जब हम अंतरिक्ष सागर में संवरण आरम्भ करते समय ईश्वर से इस सर्वाधिक बाधाओं भरे, खतरनाक तथा महानतम दुस्साहसपूर्ण कार्य की सफलता के लिए वरदान मांगते हैं जिसकी शुरुआत मानव ने अब से पूर्व कभी नहीं की थी।

अगले वर्ष टैक्सास में, अपनी मृत्यु से एक दिन पहले, श्री कॅनेडी ने सान एण्टोनियो में राष्ट्र का एयरो-स्पेस मैडीकल हेल्थ सेण्टर इस कार्य को समर्पित किया था।

मैं

यह नहीं समझता कि अंतरिक्ष पर हमारी विजय पूर्णता के आसपास भी पहुंची है, और मैं स्वीकार करता हूँ कि अब भी कुछ बातों में हम पीछे हैं, हम कम से कम एक बात में तो—बूस्टर के आकार में—अभी पीछे हैं। किन्तु मुझे आशा है कि इस वर्ष संयुक्त राज्य अमरीका इस क्षेत्र में भी आगे निकल जाएगा। और मैं इसीके लिए जुटा हूँ। हमें अभी काफी मंज़िल तय करनी है। सुदीर्घ तथा कठोर परिश्रम के अनेक सप्ताह, अनेक महीने तथा वर्ष आगे हैं। हमें विफलताएं, कुंठाएं तथा निराशाएं भी हाथ आएंगी। जैसा सदा होता रहा है, इस देश में भी यह दबाव दिया जाएगा कि हम इस क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तरह काम करें और कुछ कम परेशानी वाला काम करने का लालच भी सामने आएगा। लेकिन यहां यह अनुसंधान-कार्य चलता ही रहना चाहिए। अंतरिक्ष-विजय का काम जारी रहना ही चाहिए तथा हम आगे अवश्य निकलेंगे। इतना ही हम जानते हैं और इतना ही हम विश्वास तथा आस्था के साथ कह सकते हैं।

आयरलैण्ड के एक लेखक फ्रैंक ओ'कौनर ने अपनी एक पुस्तक में लिखा था कि किस प्रकार बचपन में वे और उनके मित्र देहाती इलाके में रास्ता खोजते गुज़रे और जब वे एक बगीचे की दीवार के पास पहुंचे तो देखा कि वह बहुत ऊंची है। उसे पार करने का प्रयास भी संदिग्ध था तथा उसके रहते अपनी यात्रा जारी रखना बहुत ही कठिन था। उन्होंने अपने हैट उतारे और उस दीवार की परली पार फेंक दिए और फिर उनके सामने हैटों के पीछे जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। इस राष्ट्र ने भी अन्तरिक्ष की दीवार के पार अपनी टोपी फेंक दी है और अब हमारे पास उसके पीछे जाने के अलावा कोई चारा नहीं है।

जिस दिन राष्ट्रपति ने सान एण्टोनियो में भाषण किया उसी दिन संयुक्त राष्ट्रसंघ में अमरीकी प्रतिनिधि दल ने घोषणा की कि सोवियत संघ के साथ उन कानूनी सिद्धान्तों के घोषणापत्र के बारे में समझौता हो गया है जिनके अनुसार अन्तरिक्ष का अन्वेषण तथा उपयोग किया जाएगा। श्री कॅनेडी गत तीन वर्षों से इस प्रकार का समझौता करने के लिए प्रयत्नशील थे। इस घोषणापत्र में कहा गया कि अंतरिक्ष तथा आकाशीय ग्रहादि किसी भी प्रकार की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं के साधन नहीं होंगे और निर्धारित कर दिया कि अन्तरिक्ष का अन्वेषण तथा उपयोग समस्त मानवता

8. अंतरिक्ष

की भलाई के लिए ही किया जाएगा।

इससे पूर्व, 17 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्रीय महासभा ने सोवियत सहमति से एक संकल्प पारित किया था, जिसमें सभी राष्ट्रों से अनुरोध किया गया था कि वे बाह्य अन्तरिक्ष को सामूहिक विनाश के शस्त्रास्त्रों से मुक्त रखें। यह भी श्री कैंनेडी का चिरकाल से एक लक्ष्य था जिसकी प्राप्ति के लिए उन्होंने 17 मार्च, 1962 को सोवियत प्रधानमन्त्री श्री ख्रुश्चोव को लिखा था :

अन्तरिक्ष का अन्वेषण एक विशाल तथा बहुविध कार्य है जिसमें पारस्परिक सहयोग की संभावनाएं बहुत अधिक हैं...

1. शायद ऋतु विज्ञान उपग्रहों की एक संयुक्त प्रणाली स्थापित करके अपने अंतरिक्ष-कार्यक्रम में हम मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। इस प्रणाली के द्वारा हम संसार-भर की ऋतु-सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जिसे कोई भी राष्ट्र तत्काल प्रयोग कर सकता है।...

2. ...मेरा प्रस्ताव है कि हममें से प्रत्येक देश एक रेडियो ट्रैकिंग स्टेशन चलाए जो अन्य लोगों को ट्रैकिंग सर्विस प्रदान कर सके और जिसमें उस उपकरण का प्रयोग किया जाए जो हम औरों को दे सकेंगे।...

3. मेरा प्रस्ताव है कि...हम अन्तरिक्ष में पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र का चित्रांकन करने में सहयोग करें, जिसमें दो उपग्रहों का प्रयोग किया जाए। इनमें से एक पृथ्वी की समीपवर्ती कक्षा में हो तथा दूसरा अधिक दूरवर्ती कक्षा में।...

4. उपग्रहों द्वारा परीक्षणात्मक संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में संयुक्त राज्य अमरीका ने अंतर्महाद्वीपीय प्रसारणों की सम्भावना जांचने तथा प्रदर्शित करने के लिए व्यवस्था करने की शुरुआत कर दी है। इस प्रकार के परीक्षण में भाग लेने के लिए उपयुक्त उपकरण अनेक देश बना रहे हैं। इस सहकारी प्रयास में सोवियत संघ के भी शामिल होने का स्वागत करता हूं।...

5. अन्तरिक्ष यान में मनुष्य भेजने, अन्तरिक्ष में उस व्यक्ति के जीवित रह सकने तथा उसे सकुशल पृथ्वी पर लाने के अपने मिले-जुले प्रयास के लिए मैं प्रस्ताव करता हूं कि हम अन्तरिक्षीय चिकित्सा के क्षेत्र में अपने ज्ञान का आदान-प्रदान करें तथा मिल-जुलकर प्रयास करें। इस क्षेत्र में विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों के सहयोग से भावी गवेषणा-कार्य आगे बढ़ाया जा सकता है।

विशिष्ट परियोजनाओं के अलावा हम और भी अधिक चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं के व्यापक सहयोग के लिए बातचीत करने को तैयार हैं जो बाह्य अंतरिक्ष के अन्वेषण के लिए हाथ में ली जानी चाहिए। ये काम इतने चुनौतीपूर्ण, इनका खर्च इतना अधिक तथा

अन्तरिक्ष-अन्वेषण में लगे बहादुर व्यक्तियों के लिए खतरा इतना गम्भीर है कि हमें लोगों को ईमानदारी के साथ इन कामों तथा इन खर्चों में सांझीदार बनने तथा इन खतरों को कम से कम करने की हर सम्भावना पर विचार करना चाहिए।... उदाहरण के तौर पर हम चन्द्रमा में मानवहीन यान भेजकर अनुसंधान करने में सहयोग कर सकते हैं या हम मंगल अथवा शुक्र ग्रह का विस्तारपूर्वक वैज्ञानिक अन्वेषण करने के लिए सिलसिलेवार कदम उठाने के बारे में आपस में खुलासा निश्चय कर सकते हैं। इसके साथ ही हम इस अन्वेषण-कार्यक्रम में मानव के बैठकर अन्तरिक्ष यान भेजने की सम्भावित उपयोगिता पर भी विचार कर सकते हैं। जब परीक्षण का एक उपयुक्त कार्यक्रम निर्धारित हो जाए तो हम आवश्यक परियोजनाओं की जिम्मेवारी आपस में बांट सकते हैं। इनसे प्राप्त समस्त जानकारी हम खुलकर एक-दूसरे को दे सकेंगे।...

संयुक्त राष्ट्रसंघ में 20 सितम्बर, 1963 को किए अपने अन्तिम भाषण में श्री कैंनेडी ने अन्तरिक्ष-अन्वेषण-कार्य में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की विशेष रूप से अपील की थी :

उस क्षेत्र में जिसमें संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत संघ विशेषरूप से सामर्थ्यवान हैं—अन्तरिक्ष-विद्या का क्षेत्र—उसमें अन्तरिक्ष के नियमन तथा अन्वेषण के और अधिक संयुक्त प्रयासों के लिए नये सहयोग की गुंजाइश है। उन सम्भावनाओं में मैं चन्द्रमा तक एक संयुक्त अभियान की सम्भावना भी जोड़ता हूं। अन्तरिक्ष में सार्वभौमता की कोई समस्या नहीं है।... इसलिए चन्द्रमा के लिए मानव की पहली उड़ान राष्ट्रीय प्रतियोगिता का विषय क्यों हो ? तब सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका इस प्रकार के अभियान के लिए अलग-अलग गवेषणा, निर्माण तथा खर्च क्यों करें ? हमें यह पता करना चाहिए कि क्या हमारे दोनों देशों—दरअसल संसार के सभी देशों—के वैज्ञानिक, तथा विमानविद्याविद् अन्तरिक्ष-विजय के लिए मिलकर प्रयास नहीं कर सकते, जिससे इस शताब्दी में ही किसी दिन चन्द्रमा तक एक व्यक्ति भेज सकें जो किसी एक राष्ट्र का प्रतिनिधि न हो वरन् समस्त देशों का प्रतिनिधित्व करनेवाला हो ?

‘हमारा विचार उपयुक्त चन्द्रयान के निर्माण की गति को तेज करना है।’



शरणार्थी-विरोधी गद्दत पर तैनात पूर्वी जर्मन सैनिक बर्लिन में कम्युनिज्म को पीछे छोड़कर

SE

‘एक

अनवरत संघर्ष

सामने है’

जर्मन चांसलर लुडविग एरहर्ड ने कहा था : “जॉन एफ० कैंनेडी का जीवन इस बात का प्रतीक था कि साम्य-वाद अजेय नहीं है। उन्होंने न केवल अमरीकी विश्व सैनिक शक्ति तथा तकनीकी सहायता को, वरन् उसके आदर्शों, उसके लक्ष्यों तथा नैतिक शक्ति की श्रेष्ठता को भी दासता की शक्तियों के खतरे के मुकाबले झोंक दिया था। उन्होंने स्वाधीनता की सीमाएं बढ़ाकर उसकी रक्षा की थी।” वे सोवियत रूस के साथ समझौते करने के लिए उत्सुक थे लेकिन इसके साथ ही वे स्वतंत्रता और सुरक्षा के प्रति-क्षण एक विश्वस्त पहरेदार बने रहे।”

प्रजातंत्र तथा साम्यवाद के बीच विद्यमान संघर्ष के बारे में श्री कैंनेडी की राय क्या है और राष्ट्रपति बनने पर वे उसकी ओर क्या रवैया अपनाएंगे, यह उनके राष्ट्र-पति बनने से काफी पहले ही प्रकट हो गया था। 16 अप्रैल, 1959 को, जब वे एक सेनेटर ही थे, भाषण करते हुए उन्होंने वाशिंगटन में कहा था :

सो

वियत शक्ति के साथ दीर्घकालीन तथा शक्तिशाली प्रति-योगिता से वचने की हम आशा नहीं कर सकते और यह प्रतियोगिता ऐसी होगी जिसमें हमें विचार-प्रधान भावना से काम लेना होगा, लेकिन भावना में हम कभी नहीं बह सकते।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए कंटोले तारों को लांघ रहा है।

9. दबाव बनाम स्वतंत्र निर्णय

आगामी दशक का कठोर तथा जटिल प्रश्न 'यह है कि क्या कोई स्वतन्त्र समाज—अपनी स्वतन्त्र निर्णयबुद्धि, अपने अवसरों के विस्तार तथा विविध विकल्पों को बनाए रखनेवाला समाज—कम्युनिस्ट-प्रणाली की दत्तचित्त होकर की जा रही प्रगतिका सामना कर सकता है।' मैं समझता हूँ कि हम ऐसा करके दिखा सकते हैं।

और राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में आपने 20 सितम्बर, 1960 को कहा था :

श्री ख्रुश्चोव कोई दुश्मन नहीं हैं। भले ही वे उसके प्रतीक हों, उनके कार्यों से उसे नाटकीयता मिलती हो। लेकिन वास्तविक शत्रु तो साम्यवादी प्रणाली है, जो समूचे विश्व को पददलित करने के लिए बिना रुके, बिना भुके तथा बिना बदले बढ़ रही है।

राष्ट्रपति के रूप में श्री कॅनेडी ने बार-बार 'दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, मध्यपूर्व और एशिया में आंतरिक तोड़फोड़ के तरह-तरह के धूर्ततापूर्ण अनवरत कम्युनिस्ट-प्रयासों के विरुद्ध' चेतावनी दी। 20 अप्रैल, 1961 को वाशिंगटन में किए एक भाषण में आपने घोषणा की :

...आज पहले की अपेक्षा कहीं अधिक स्पष्ट हो गया है कि हमें समस्त भूमण्डल के अन्दर एक ऐसे अनवरत संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है, जो सेनाओं के संघर्ष, यहां तक परमाणु युद्ध से भी आगे जानेवाला है। सेनाएं हैं और बहुत बड़ी-बड़ी सेनाएं हैं। परमाणु शस्त्रास्त्र भी हैं। लेकिन ये चीजें तो उस ढाल का काम करती हैं जिसके पीछे तोड़फोड़, घुसपैठ तथा अन्य बहुत-सी हरकतें लगातार चलती हैं, जिनके लिए एक-एक करके ऐसे विस्फोटक क्षेत्र ऐसी स्थितियों में चुने जाते हैं जब हमारा अपना सशस्त्र हस्तक्षेप सम्भव नहीं होता। इस आक्रमण की सबसे जोरदार चीज शक्ति होती है—शक्ति, अनुशासन तथा धोखाधड़ी। कण्टों से कराहते लोगों के वाजिव असंतोष का 'फायदा' उठाया जाता है। स्वशासन का वाजिव जाल फैलाया जाता है, लेकिन अगर कम्युनिस्ट एक बार सरकार हथिया लें तो फिर असंतोष की सारी बातों का दमन कर दिया जाता है, आत्मनिर्णय की बातें हवा में उड़ जाती हैं तथा आशापूर्ण शांति के वायदों में मुकर जाने हैं, जैसा क्यूबा में हुआ, और आतंक का राज्य छा जाता है।...

हम इस नये तथा अधिक गहरे संघर्ष की घणित असलियत से

आंखें नहीं फेर सकते। हम इन नई हिमाकतों, नये तरीकों को समझे बिना तथा इसे रोकने की तात्कालिक आवश्यकता को हृदयंगम किए बिना नहीं रह सकते, भले ही वह क्यूबा में हो अथवा दक्षिणी वियतनाम में। और हम यह समझे हुए बिना नहीं रह सकते कि यह संघर्ष बिना किसी होहुल्लड़ के हजारों गांवों, बाजारों में दिन-रात तथा विश्व-भर में हो रहा है।

क्यूबा का सन्देश, लाओस या एशिया तथा दक्षिण अमरीका में बढ़ती हुई कम्युनिस्ट आवाज का सन्देश सब एक ही है। प्रमाद-ग्रस्त, आत्मरत तथा शिथिल समाजों को इतिहास का मलबा आच्छादित किए ले रहा है। केवल शक्तिशाली, केवल उद्यमी, कृतसंकल्प, साहसी तथा दूरन्देश जो हमारे संघर्ष का असली स्वरूप समझते हैं, सम्भवतः बच सकेंगे। इस देश तथा इस प्रशामन के समक्ष इससे बड़ा कोई काम नहीं है। कोई अन्य चुनौती इतनी बड़ी नहीं है, जिसमें हम अपने समस्त प्रयास तथा शक्ति लगाएं। बहुत दिनों तक हम अपनी आंखें परम्परागत सैनिक आवश्यकताओं पर, सीमाएं पार करने के लिए तैयार सेनाओं तथा छोड़े जाने के लिए सन्नद्ध प्रक्षेपणास्त्रों पर लगाए जा रहे हैं। लेकिन अब यह सब पर्याप्त नहीं है।...हमारी मुरझा टुकड़े-टुकड़े करके, एक के बाद दूसरे देश में खोती जा सकती है और इसके लिए न तो एक भी प्रक्षेपणास्त्र चलाया जाएगा और न एक भी सीमा का उल्लंघन होगा।

हम इस पाठ से लाभ उठाना चाहेंगे। हम अपनी समस्त शक्तियों का अपने समस्त हथकण्डों तथा अपनी समाज-व्यवस्था के सभी अंगों का पुनर्निरीक्षण तथा पुनः मार्ग-निर्धारण करना चाहेंगे। हम इस संघर्ष का सामना करने के लिए अपने प्रयासों को और तीव्र करना चाहेंगे जो अनेक दृष्टियों से युद्ध से अधिक कठिन है तथा जिसमें अवसर निराशा हाथ लग सकती है।...

नव उपनिवेशवाद

1961 में संयुक्त राष्ट्रसंघ के समक्ष दिए भाषण में श्री कॅनेडी ने 'राष्ट्रों का उपनिवेशों के दर्जे से शांतिपूर्वक तथा तेजी के साथ निकलकर समानता की श्रेणी में आने' का पूर्ण समर्थन किया था। उस समय आपने विशेष रूप से कहा था :

...आत्मनिर्णय का ज्वार कम्युनिस्ट साम्राज्य तक नहीं पहुंचा है जहां की जनसंख्या उन देशों की जनसंख्या से अधिक है जिन्हें सरकारी तीर पर 'पराधीन' कहा जाता है। इन कम्युनिस्ट देशों में स्वतन्त्र निर्णय से नहीं, बरन् विदेशी सेनाओं की सहायता से सर-

कारें बनी हैं और उनकी व्यवस्था एक कट्टर विश्वास पर आधारित है, जिसमें स्वतन्त्र विचार-विमर्श, स्वतन्त्र चुनाव, स्वतन्त्र समाचार-पत्र, स्वतन्त्र पुस्तकें तथा स्वतन्त्र मजदूर संघ, इन सबका दमन किया जाता है और जो एक ऐसी दीवार खड़ी करती हैं जिनमें सत्य को अजनबी तथा अपने नागरिकों को बंदी बना दिया जाता है।

शांति के लिए खतरा

25 नवम्बर, 1961 को राष्ट्रपति के साथ निकिता ख्रुश्चोव के दामाद तथा सोवियत सरकार के सरकारी पत्र 'इज़वेस्तिया' के सम्पादक एलैक्से ऐद्जूबे ने भेंट की। इज़वेस्तिया में तीन दिन बाद प्रकाशित इस भेंट में श्री कैनेडी ने घोषणा की :

...सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका को शांति के साथ मिलकर रहना चाहिए।

...हमारे ख्याल से कठिनाई उस समय उपस्थित होती है जब सोवियत संघ सारी दुनिया को एक तरह से कम्युनिस्ट बनाने के प्रयास करता है। अगर सोवियत संघ केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करे, अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था करे तथा अन्य देशों को अपनी इच्छा के अनुसार—शांति से रहने—दे तो मेरा विश्वास है कि वे सारी समस्याएं जो आजकल इतना अधिक तनाव पैदा करती हैं, धीरे-धीरे मिटती चली जाएंगी। हम चाहते हैं कि सोवियत संघ की जनता शांति के साथ रहे और अपनी जनता के लिए भी हम यही चाहते हैं। मैं समझता हूं कि एक देश के बाद दूसरे देश में साम्यवादी प्रणाली फैलाने का प्रयास ही शांति के लिए एक बड़ा खतरा है।...

साम्यवादी जगत् में आंतरिक विग्रह

श्री कैनेडी ने तथाकथित एकजुट कम्युनिस्ट-प्रणाली के आंतरिक दबावों का सावधानी के साथ अध्ययन किया था। 6 जनवरी, 1962 को कोलम्बस, ओहियो में आपने 'साम्यवादी साम्राज्य के विघटन की शुरुआत' की चर्चा की और कहा कि अल्बानिया, कम्युनिस्ट चीन तथा अन्य देश सोवियत संघ से 'दूर होते' जा रहे हैं। 23 मार्च को वर्कले, कैलीफोर्निया में आपने विश्वासपूर्वक कहा :

...साम्यवादी नेताओं के सामने प्रत्येक कम्युनिस्ट देश की विषम आंतरिक समस्याएं—कृषि की विफलता, युवावर्ग तथा बुद्धि-जीवियों में बढ़ता असंतोष तथा तकनीकी एवं प्रबन्धक वर्ग के लोगों में अपनी पदमर्यादा तथा सुरक्षा के लिए मांग आदि ही नहीं हैं; अपितु उन्हें साम्यवादी जगत् के अन्दर ज्वरदस्त विग्रह का भी सामना करना पड़ रहा है। इस विग्रह ने साम्यवाद की वह मूर्ति खंडित कर दी है जिसमें उसे सभी सामाजिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष समाप्त करनेवाली विश्व-प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो अनेक वर्षों से कम्युनिस्टों की एक बहुत ही मूल्यवान धरोहर थी।...

1963 में कांग्रेस के उद्घाटन के समय दिए अपने भाषण में राष्ट्रपति ने विस्तार के साथ साम्यवाद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला था तथा 'नई सोवियत-चीनी परेशानियों' की नई घटनाओं के प्रति अन्य देशों की प्रतिक्रिया पर विशेष बल दिया था।

वि

कास-पथ पर अग्रसर तथा तटस्थ राष्ट्रों को...सोवियत संघ द्वारा क्यूबा को परमाणु प्रहार का अड्डा बनाने के गुप्त आक्रमण से बड़ा धक्का लगा था। भारत को हमने जो तत्काल सहायता दी तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के माध्यम से कांगो के एकीकरण का हमने जो समर्थन किया, निरस्त्रीकरण के लिए हमारी धर्मपूर्ण खोज तथा अपने उन नागरिकों तथा पर्यटकों के प्रति हमारे सद्व्यवहार से जिनकी चमड़ी गोरी नहीं है, ये राष्ट्र पुनः आश्चस्त हुए। और जैसे-जैसे पुराना उपनिवेशवाद समाप्त होता जा रहा है, वैसे-वैसे साम्यवादी शक्तियों का नव उपनिवेशवाद अधिकाधिक तेजी के साथ उभरता आ रहा है। वे अधिक स्पष्टता के साथ यह अनुभव कर रहे हैं कि आज विश्व में संघर्ष साम्यवाद बनाम पूंजीवाद का नहीं है, वरन् दमन बनाम स्वतन्त्रता के बीच है। वे मानते हैं कि आज विश्व-भर में स्वतन्त्रता की आकांक्षा समान है, चाहे वह पश्चिमी वर्ग की स्वाधीनता हो चाहे वियतनाम की। वे जानते हैं कि इस प्रकार स्वतन्त्रता समस्त साम्यवादी आकांक्षाओं के विपरीत पड़ती है, लेकिन हमारी अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप है। उनकी आवश्यकताओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण उदार तथा साधन-सम्पन्न है जबकि कम्युनिस्ट पुराने सिद्धान्तों तथा पुरानी लकीर के साथ ही चिपके हैं।

...साम्यवादी गुट के आंतरिक दबावों तथा तनावों के बढ़ने से हमें क्या राहत मिल सकती है? यहां हमें किसी प्रकार की आशा भी सावधानी के साथ करनी चाहिए। क्योंकि सोवियत रूस तथा

9. दबाव बनाम स्वतंत्र निर्णय

का भी साक्षी है कि कम्युनिस्ट जगत् की सीमाओं पर अवस्थित राष्ट्रों—ईरान, पाकिस्तान, भारत, वियतनाम तथा स्वतंत्र चीन को दी गई हमारी सैनिक तथा आर्थिक सहायता के कारण ही खतरे में पड़े इन लोगों को स्वतंत्र तथा स्वाधीन रहने में सक्षम बनाया अन्यथा वे आक्रामक साम्यवादी शक्ति के आक्रमण द्वारा पददलित हो गए होते अथवा घोर अव्यवस्था, गरीबी तथा निराशा के कारण परास्त हो गए होते।

सतर्कता : एक सतत आवश्यकता

19 अक्टूबर, 1963 को मेन विश्वविद्यालय में एक भाषण करते हुए राष्ट्रपति ने क्यूबा-संकट की छाया में अमरीकी सोवियत सम्बन्धों का विश्लेषण किया :

“अपनी सतर्कता में ढील आने देने के लिए हमारे पास कोई आधार नहीं है।

“यह सही है कि लम्बी यात्रा में हमने कुछ प्रगति की है। नये अवसर हमारे हाथ लगे हैं, जिन्हें हम योही नहीं गंवा सकते। हमने सोवियत रूस के साथ कुछ सीमित, लागू किए जा सकने योग्य करार किए हैं या व्यवस्थाएं की हैं जो दोनों पक्षों तथा विश्व के लिए लाभदायक होंगी। लेकिन वातावरण में या बलाघात में थोड़ा-सा परिवर्तन आने का अर्थ यह नहीं है कि उद्देश्य ही बदल गया है। श्री ख्रुश्चोव ने स्वयं कहा है कि सिद्धान्त के क्षेत्र में किसी प्रकार का सहअस्तित्व नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त तनाव तथा संघर्ष के प्रमुख क्षेत्र बर्लिन से लेकर क्यूबा और दक्षिणपूर्वी एशिया तक फैले हुए हैं। संयुक्त राज्य अमरीका तथा सोवियत संघ का विश्व,

उभकी स्वतंत्रता तथा उसके भविष्य के बारे में सर्वथा भिन्न दृष्टिकोण है। तथाकथित मुक्ति-संग्रामों तथा तोड़-फोड़ के बारे में भी हमारे सर्वथा भिन्न-भिन्न विचार हैं। जब तक ये मूलभूत मतभेद जारी रहते हैं, उन्हें न तो छिपाया ही जा सकता है और न छिपाना ही चाहिए, तब तक इनसे समझौते की संभावनाओं की सीमा निर्धारित रहेगी और इनके कारण आनेवाले महीनों और वर्षों में छोटे या बड़े संकट आने ही रहेंगे चाहे वे प्रत्यक्ष संघर्ष के क्षेत्रों—जर्मनी तथा कैरीबियन सागर में हों या उन क्षेत्रों में हों जहां हमारे नियंत्रण से बाहर की बातें हम दोनों को ही उलझा दें, जैसे अफ्रीका, एशिया तथा मध्यपूर्व।

“अमरीकी तथा मित्रराष्ट्रों की सोवियत संघ के प्रति नीति के सभी तत्त्व एक ही व्यापक लक्ष्य की ओर लगे हुए हैं कि सोवियत नेताओं को यह बात मनवा दी जाए कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आक्रमण खतरनाक है, अनिच्छुक देशों की जनता पर अपनी इच्छा या प्रणाली थोपना उनके लिए किसी काम का नहीं है तथा एक वास्तविक तथा व्यवहार्य शांति की स्थापना में सबके साथ होने से उनका तथा विश्व का लाभ होगा।

“हम हमेशा के लिए स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हम बातचीत करने के लिए भी तैयार हैं, बशर्ते कि बातचीत से लाभ होता हो और लड़ने के लिए भी तैयार हैं, बशर्ते कि लड़ना अनिवार्य ही हो जाए। हम संकल्प करते हैं कि हम अपने इतिहास के मालिक बनना चाहते हैं, उनके शिकार नहीं और अंधविश्वासों या भावनाओं के बशीभूत हुए बिना हम अपने भाग्य के स्वयं मालिक होना चाहते हैं। हमें अपनी आशाओं तथा गलतफहमियों का अन्तर समझना चाहिए। हमें सोवियत रूस के साथ उत्तरोत्तर कम खतरनाक सम्बन्धों की दिशा में लगातार प्रगति करने की आशा करनी चाहिए, लेकिन कम्युनिस्टों की पद्धतियों तथा कम्युनिस्ट-लक्ष्यों के प्रति किसी प्रकार की गलतफहमी में भी नहीं रहना चाहिए।”



10. राष्ट्रपति एक मानव के रूप में

**‘स्वतंत्रता के दायित्वों
का भार उठाने के लिए तैयार हैं’**

प्रथम महायुद्ध के दौरान अमरीका के सर्वोच्च प्रशासक वुड्रो विल्सन ने कहा था : “राष्ट्रपति के ऊपर जितना कार्यभार होता है, उतना संसार में किसीपर नहीं होता। किसी अन्य व्यक्ति का दिन उसके समान व्यस्त नहीं होता, इतने उत्तरदायित्वों से पूर्ण नहीं होता, जिसके लिए दिमाग तथा आत्मा दोनों पर भारी बोझ पड़ता है और जिसके लिए अक्षय क्षमता की आवश्यकता होती है।”

तब कोई भी व्यक्ति इतना भारी बोझ उठाने के लिए क्यों तैयार हो, सो भी उस युग में जबकि जटिलताएं श्री विल्सन की पीढ़ी की तुलना में कहीं अधिक हो गई हों ? ‘प्रोफाइल्स इन करेज’ नामक पुस्तक में, जो श्री कैंनेडी ने उस समय लिखी थी जब उन्होंने ‘व्हाइट हाउस’ का संभावित निवासी बनने के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचना भी शुरू नहीं किया था, इसकी मूलभूत प्रेरणा पर विचार किया है जो कोई निजी या राजनीतिक लाभ नहीं वरन् ‘राष्ट्र-हित’ ही होता है।

जॉन कैंनेडी ने केवल एक कारण से ही राष्ट्रपतित्व की कामना की थी कि राष्ट्रीय प्रगति, विश्व-शांति तथा स्थायित्व की दिशा में वे संयुक्त राज्य अमरीका के एक सेनेटर की अपेक्षा राष्ट्रपति के रूप में कहीं अधिक उपयोगी योगदान कर सकेंगे। चुनाव से पहले के भाषण में आपने बताया था :

मैं

इस पद की उम्मीदवारी इस आशा से नहीं कर रहा कि यह कोई आसान अथवा अवैतनिक कार्य है। मैं इसके लिए इस वास्ते खड़ा हुआ हूँ, क्योंकि घटनाक्रम ने जो शक्ति एवं उत्तरदायित्व राष्ट्रपति पर डाल दिए हैं, उनके कारण वह अमरीकी कार्यक्षमता का निर्माता बन गया है। सेनेटर की आवाज महत्वपूर्ण होती है। एक सेनेटर के रूप में मैं केवल मैसाचूसेट्स की ओर से ही बोल सकता हूँ, लेकिन राष्ट्रपति जब बोलता है तब संयुक्त राज्य अमरीका की ओर से ही नहीं, वरन् उन सब लोगों की ओर से बोलता है जो स्वतंत्र रहना चाहते हैं तथा स्वतंत्रता के दायित्वों का भार वहन करने के लिए प्रस्तुत हैं।

इसी उद्देश्य से श्री जॉन कैंनेडी राष्ट्रपति बनना चाहते थे। लेकिन किस प्रकार का राष्ट्रपति बनने का उनका

स्वप्न था, इसका रहस्य उन्होंने निर्वाचन आरंभ होने के साठ से भी कम घंटे पहले 5 नवम्बर, 1960 को न्यूयार्क में एक भाषण में खोला था :

य

दि मैं आगामी मंगलवार को सफल हो गया तो मैं सब बातों के अलावा एक ऐसे राष्ट्रपति के रूप में लोकवर्चित होना चाहता हूँ कि... जिसने न केवल युद्ध को टाला, वरन् शांति की स्थापना की, जिसके बारे में इतिहास कह सके कि उसने अपने कार्यकाल में ही नहीं, वरन् आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी शांति की आधारशिला रखी।... मैं ऐसा राष्ट्रपति कहलाना चाहता हूँ जिसने साम्यवादी ज्वार को रोका ही नहीं, वरन् स्वतंत्रता का भी प्रसार किया।...

मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे एक विशेष दृष्टिकोण वाला अथवा गैर-सरकारी हितों का रक्षक राष्ट्रपति समझें, मैं तो समस्त जनता का राष्ट्रपति कहाना चाहता हूँ।...

मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूँ जिसे सभी लोगों का विश्वास प्राप्त हो तथा जो सभी लोगों को अपना विश्वासभाजन बना सके, जो उनको बता सके कि वह क्या कर रहा है और हम कहां जा रहे हैं।...

मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूँ जो काम करने की जिम्मेदारी लेने को तैयार है और वे काम ठीक से न हो सकें तो उसकी बदनामी भेलने को तैयार है।...

मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूँ, जो प्रत्येक नागरिक के अधिकारों तथा उसके दायित्वों की स्वीकार करता है... एक ऐसा राष्ट्रपति जो जनता की गहरी चिन्ता करता है।

मैं उस दिन को अपना मानदण्ड रखकर चलने की कोशिश करना चाहता हूँ जब अब्राहम लिंकन ने अपने युद्धकालीन मंत्रिमण्डल की बैठक बुलाई थी तथा उनके सामने दास-मुक्ति की घोषणा का प्रारूप पढ़कर सुनाया था। वे लोग विभिन्न हितों तथा विचारों के मिले-जुले प्रतिनिधि थे, पर लिंकन जानते थे कि अंतिम उत्तरदायित्व मेरा ही है। उन्होंने कहा था : “आप लोगों को मैंने इसलिए बुलाया है कि मैंने जो कुछ लिखा है, उसे आप लोग सुन लें। मैं इसके मुख्य विषय के बारे में आपसे परामर्श नहीं चाहता, उसका निश्चय तो मैंने स्वयं कर लिया है।”

और बाद में जब वे अनेक घंटों तक औपचारिक रूप से हाथ मिलाने के समारोह के बाद उसपर हस्ताक्षर करने चले तो लिंकन ने कहा था : “अगर इतिहास में मेरा कोई नाम लेगा तो मेरे इस कानून की खातिर। मेरी समूची आत्मा इसमें समाई हुई है। जब मैं इस घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करूंगा तो उस समय अगर मेरा हाथ कांपा तो बाद में इस अभिलेख को देखनेवाले कहेंगे : ‘वह झिझका था।’”

10. राष्ट्रपति एक मानव के रूप में

लेकिन लिंकन का हाथ कांपा नहीं था। वे तनिक भी न झिझके थे। क्योंकि वह देश के सर्वोच्च अधिकारी ही नहीं, वरन् संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति भी थे। और अगर मैं आगामी मंगलवार को सफल हुआ तो मैं शब्द तथा पद की पूरी मर्यादा के साथ संयुक्त राज्य अमरीका का आगामी राष्ट्रपति बनना चाहूंगा।

राष्ट्रपति बनने के लिए श्री कैंनेडी ने बहुत ही श्रमसाध्य चुनाव-आंदोलन चलाया। छः करोड़ नब्बे लाख के रिकार्ड मतदान में यद्यपि उन्होंने रिचर्ड निक्सन को केवल एक लाख बीस हजार से कम मतों से ही पराजित किया, फिर भी उनकी यह विजय बहुत शानदार थी। 1956 में यद्यपि वे उप-राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक उम्मीदवार नामजद होते-होते रह गए थे, लेकिन वे उस समय अपने राज्य से बाहर बहुत ही कम विख्यात थे। 1959 में उन्होंने अपने दल का राष्ट्रपति का टिकट पाने के लिए प्रयास आरंभ किया था। लेकिन श्री निक्सन उस समय उपराष्ट्रपति के रूप में जाने-माने राष्ट्रीय नेता बन चुके थे। यही नहीं, उस समय श्री जॉन कैंनेडी ने तीन बाधाओं—युवावस्था, धनी होना तथा कैथोलिक धर्मावलंबी होना—को भी पार किया, जिसे कुछ लोग व्हाइट हाउस में पदार्पण करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए दुर्लभ मानते हैं।

सच्चाई यह थी कि तैंतालीस वर्षीय श्री कैंनेडी श्री निक्सन से केवल चार वर्ष छोटे थे और जार्ज वाशिंगटन से लेकर अब तक प्रायः सभी से पर्याप्त साधन-संपन्न व्यक्ति थे। महत्त्व की बात यह थी कि जैसे-जैसे चुनाव-आंदोलन जोर पड़कता गया, वैसे-वैसे यह अधिकाधिक स्पष्ट होता गया कि धर्म की समस्या चुनाव में कोई गंभीर मसला न थी जैसा कि शुरू में कहा गया था, हालांकि यह भी सच था कि उससे पहले बहुसंख्यक प्रोटैस्टेंट मतदाताओं ने कभी किसी कैथोलिक राष्ट्रपति का निर्वाचन नहीं किया था।

हौस्टन, टेक्सास में 12 सितम्बर, 1960 को जॉन कैंनेडी ने प्रोटैस्टेंट पादरियों की एक सभा में धर्म की समस्या का कसकर सामना किया जब उन्होंने कहा :

मैं

राष्ट्रपति पद के लिए कैथोलिक उम्मीदवार नहीं हूँ। मैं राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी का उम्मीदवार हूँ जिसका

धर्म संयोगवश कैथोलिक है।... राष्ट्रपति के रूप में मेरे सामने जो समस्याएं आएंगी, उनका मैं तदनुसार निर्णय करूंगा।... उस समय मेरी आत्मा राष्ट्रीय हित की दृष्टि से जो सर्वोत्तम बताएगी, उसे करूंगा तथा बाहरी धार्मिक दवावों या निर्वेशों की उस समय कतई परवाह न करूंगा।

राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने अपने वचन का पूर्ण निर्वाह किया और उनके चर्च तथा राष्ट्र ने इसके लिए उनका सम्मान किया। और अपने पूर्ववर्ती राष्ट्रपतियों की भांति उन्होंने अपनी धार्मिक आस्था से लगातार प्रेरणा ग्रहण की। जैसा कि उन्होंने 9 फरवरी, 1961 को वाशिंगटन में एक सभा में कहा :

कोई भी व्यक्ति जो इस पद पर आता है, जिसपर मैं अब आया हूँ, यह स्वीकारे बिना नहीं रह सकता कि किस प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका का प्रत्येक राष्ट्रपति ईश्वर के प्रति अपनी आस्था पर निर्भर करता है। “ईश्वर तुम्हारा साथ देगा। वह कभी तुम्हें धोखा न देगा और न तुम्हें भुलाएगा। भयभीत न हो और न घबराहट में पड़ो।” इस प्रकार के वचन जब राष्ट्रपति से कहे जाते हैं, जैसा कि आजकल हमसे कहा गया है, तो प्रत्येक राष्ट्रपति को बड़ी राहत मिलती है तथा साहस बढ़ता है।

यद्यपि हमारे राष्ट्रपतियों की धार्मिक पृष्ठभूमि अलग-अलग रही है, और प्रत्येक की धार्मिक आस्थाएं भी भिन्न रही हैं, तथापि हमारे प्रत्येक राष्ट्रपति ने अपने-अपने ढंग से ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट की है। जो बौद्धिक दृष्टि से सबसे शक्तिशाली थे, वे आत्मिक दृष्टि से भी शक्तिशाली रहे।...

राष्ट्रपति के रूप में चौंतीस महीनों के कार्यकाल में श्री कैंनेडी को स्वदेश एवं विदेशों में जो अभूतपूर्व लोकप्रियता मिली, शुरू के उनके पक्के समर्थकों या प्रशंसकों को भी उतनी लोकप्रियता मिलने की आशा न थी।

उद्घाटन-भाषण में उनकी इस अपीलने, कि “यह मत पूछो कि आपका देश आपके लिए क्या कर सकता है, वरन् यह पूछो कि आप अपने देश के लिए क्या कर सकते हैं” हर अमरीकी को झकझोर दिया था। युवकों तथा वयोवृद्धों की समस्याओं, सुविधाविहीन तथा अल्पसंख्यक जातियों के लिए समानरूप से उन्होंने जो चिन्ता व्यक्त की, उसने उनके

नये अनुयायी पैदा किए (जो उनका समर्थन छोड़नेवालों से कहीं अधिक थे)। संकट के अवसरों पर उनकी दृढ़ता तथा दूर-दूर देशों की जनता के कल्याणार्थ उनकी वास्तविक चिन्ता-भावना ने अन्य देशों के अगणित व्यक्तियों में इन्हें प्रिय बना दिया था।

पत्रकारों के साथ उनके सरल सम्बन्धों, परेशानी वाले पत्रकार-सम्मेलन में ले-दे की भावना से काम करने के लिए सदैव तैयार रहने और साथ ही अवसर के अनुकूल उपयुक्त शब्दों के प्रयोग की सहज भावना ने उनको ऐसा व्यक्ति बना दिया कि वे बीसवीं सदी के ऐसे व्यक्ति बन गए, जिनके शब्दों को सर्वाधिक उद्धृत किया जाता है।

1962 में, जब उन्होंने विदेशों से आए छात्रों से व्हाइट हाउस में कहा: “ओलिवर क्रौमवेल ने एक बार कहा था: ‘मेरे तमाम दागों तथा मस्सों सहित मेरा चित्र बनाओ।’ और हम चाहते हैं कि आप हमारे देश को इसी तरह देखें।” यह कहकर उन्होंने उस छात्रदल का दिल पूरी तरह जीत लिया। (आगामी वर्ष विदेशों के एक अति उत्साही छात्रदल ने उनको वस्तुतः घेर ही लिया था।)

जब उन्होंने कहा था कि ‘मुझे’ बच्चों की ही चिन्ता है, तो विश्व-भर के करोड़ों मां-बापों ने ठीक ही समझा था कि यह ममतालु पारिवारिक प्राणी युद्ध तथा परमाणु धूल गिरने के खतरे के विषय में क्या कुछ सोचता है।

थॉमस जैफरसन के बाद आप शायद सर्वाधिक सुसंस्कृत राष्ट्रपति थे। आपने राष्ट्रपति पद ग्रहण करने के अवसर पर राबर्ट फ्रास्ट को कविता-पाठ के लिए बुलाया था और उस छियासी वर्षीय कवि ने उस समय राजनीतिज्ञों के धंधों में कविता को भी स्थान देने के लिए आपका अभिनन्दन किया था। अपनी पत्नी के सहयोग से उन्होंने व्हाइट हाउस को कला तथा राजनीति का केन्द्रबिन्दु बना दिया था। अनेक देशों के कलाकार वहां अपनी कला का प्रदर्शन करने, वहां भोजन करने अथवा केवल राष्ट्रपति के परिवार से बातचीत करने गए थे। आपने वाशिंगटन में एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना का जोरदार समर्थन किया था और उस केन्द्र (जो अब कांग्रेस के एक

कानून के अनुसार कला-प्रतिपादन का जॉन एफ० कैनेडी केन्द्र के नाम से विख्यात है) में 29 नवम्बर, 1962 को भाषण करते हुए कहा था :

क

ला राष्ट्रीय सीमाएं नहीं जानती। प्रतिभा किसी भी समय सुगूरित हो सकती है और समूचा विश्व उसे सुने-समझेगा। दैनिक संघर्ष तथा संकट, आमने-सामने की नाटकीय खींचतान, तथा राजनीतिक संघर्ष की उथल-पुथल की बाढ़ में कवि, कलाकार तथा गायक सदियों की मौन साधना जारी रखता है, विभिन्न देशों के लोगों के बीच अनुभव के सेतु बांधता है, अपनी भावनाओं की सार्व-भौमता, आशाओं एवं निराशाओं का स्मरण कराता है और उन्हें याद दिलाता है कि मानव को एक करनेवाली शक्तियां उसे बांटनेवाली शक्तियों से कहीं अधिक गहरी पैठी हुई हैं।

इस प्रकार कला तथा कला को प्रोत्साहन देना विचारपूर्वक देखें तो राजनीतिक है, लेकिन यह संघर्ष का एक हथियार नहीं, वरन् यह समझने का साधन है कि मानव की आस्था को माननेवालों के बीच संघर्ष सर्वथा निरर्थक है। एस्चीलस तथा प्लेटो को आज भी याद किया जाता है, जबकि साम्राज्यवादी एथेन्स की विजयों को समाप्त हुए एक युग बीत गया। तेरहवीं शताब्दी के फ्लोरेंस की आकांक्षाएं धूल में भले मिल चुकी हों, लेकिन दांते जीवित हैं। गेटे आज भी जर्मनी की राजनीति को नीचे छोड़कर ऊपर उठा हुआ है। और मुझे निश्चय है कि सदियों की धूल हमारे नगरों के ऊपर से उतर जाएगी तो हमें युद्धक्षेत्रों या राजनीति की विजयों या पराजयों के लिए नहीं, वरन् मानव-आत्मा के लिए किए गए हमारे योगदान के लिए स्मरण किया जाएगा।”

जनवरी, 1963 में जब राबर्ट फ्रास्ट का निधन हुआ था तो जॉन कैनेडी ने कहा था : “उनकी मृत्यु से हम सबकी हानि हुई है।” 26 अक्टूबर, 1963 को मैसाच्युसेट्स के एम्हर्स्ट कालेज में आपने औपचारिक रूप से श्री फ्रास्ट को तथा सामान्य रूप से कला को अपनी आदर-सुमनांजलि अर्पित की थी।

ज

ब सत्तामद मानव को मदांधता की ओर अग्रसर करता है, तब कविता उसको उसकी सीमाओं का स्मरण कराती है। जब सत्ता मानव के चिन्तन का क्षेत्र संकुचित करती है, तब काव्य उसे शुद्ध करता है, क्योंकि कला उन आधारभूत मानव-सत्तियों की स्थापना

10. राष्ट्रपति एक मानव के रूप में

करती है जो हमारे निर्णयों की कसौटी का काम करते हैं।”

हमारे देश तथा हमारी सम्यता के भविष्य के लिए इससे अधिक महत्व की बात मैं और कुछ नहीं समझता कि कलाकारों को मान्यता प्रदान करके उपयुक्त स्थान दिया जाए। अगर कला के माध्यम से हम अपनी संस्कृति तथा अपने समाज की जड़ें सुदृढ़ करना चाहते हैं तो हमें अपने कलाकारों को कल्पनालोक में मुक्त विचरने के लिए स्वच्छन्द छोड़ना होगा।” प्रजातांत्रिक समाज में लेखक, रचनाकार तथा कलाकार का सर्वोच्च कर्तव्य अपनी आत्मा के प्रति सच्चा रहना है, फिर चाहे उसका प्रहारकेन्द्र कोई क्यों न हो। सत्य-पथ का आचरण करके कलाकार राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा करता है।”

राष्ट्रपति के पास तक पहुंचना तो लोक-विश्रुत हो गया था। गण्यमान व्यक्तियों से लेकर साधारण नागरिक तक उनसे सुगमता के साथ मिल सकते थे। भले ही मिलने-वाला व्यक्ति किसी राज्य या किसी देश का हो। न्यूयार्क की एक लेखिका व्हाइट हाउस में आम जनता के लिए खुले मार्ग में घूमते-घूमते उस समय आश्चर्यचकित तथा हर्षित हो गई जब स्वयं राष्ट्रपति से उसका सामना हो गया और वे उसको स्वयं अपने निजी कार्यालयों में ले गए।

जब वह यूरोप तथा दक्षिण अमरीका गए तो उनको देखने के लिए एकत्रित जनता उन्हें ‘जैक’ कहती थी। वे माग में, समयानुसार जितना अधिक से अधिक संभव होता, अधिक से अधिक स्त्री-पुरुषों से हाथ मिलाते जाते थे।

पश्चिमी बर्लिन में किसी भी अन्य जर्मनेतर नेता का इतना भव्य स्वागत नहीं हुआ जितना जॉन कैंनेडी का हुआ था। जून, 1963 को जब उन्होंने डेढ़ लाख की भारी भीड़ के समक्ष कहा था : “मैं बर्लिनवासी हूँ,” तो उपस्थित जर्मनों ने उनको सर्वथा अपना ही घोषित कर दिया था। जब वे आयरलैण्ड गए, जहां से उनके पूर्वज जाकर अमरीका बसे थे, तो उनका स्वागत उसी प्रकार किया गया था मानो कोई यशस्वी पुत्र स्वदेश वापस आया हो।

लेकिन अगर विश्व ने जॉन कैंनेडी को खोज निकाला था तो कैंनेडी-परिवार को भी पाया था। उनके भाई राबर्ट कैंनेडी का नाम, जो राष्ट्रपति के साथ नागरिक-अधिकार-संघर्ष में सबसे आगे रहे हैं, अनेक देशों के समाचारपत्रों के पाठकों को परिचित है और वहां इस अमरीकी एटर्नी

जनरल का नाम बहुत महत्व रखता है। समाचारपत्रों के सम्पादकों ने पाया कि उनके पाठक कैंनेडी के चुस्त चतुर वक्त्रों—कैरोलीन तथा जॉन फिट्जरेल्ड कैंनेडी, जूनियर के चित्रों की मांग कर रहे हैं। और युवती, गरिमामयी तथा आकर्षक जैकलीन कैंनेडी, अमरीका के राष्ट्रपतियों की पत्नी की भांति अमरीका की प्रथम महिला के रूप में ही विख्यात नहीं थीं, वरन् वे एक आदर्श अमरीकी महिला के रूप में मानी जाती थीं। संयुक्त राज्य अमरीका तथा संसार के अन्य अनेक देशों में महिलाओं ने उनके पहरावे के तरीके, बाल बनाने के ढंग तथा उनकी बातचीत के तरीके की नकल करनी शुरू कर दी थी।

इस सबको श्री कैंनेडी बड़ी दिलचस्पी तथा हास्य-पूर्ण दृष्टि से देखा करते थे। जब वे तथा उनकी पत्नी जून, 1961 में पेरिस गए तो उन्होंने पाया कि श्रीमती कैंनेडी बहुत अधिक लोकप्रिय हैं, इसपर उन्होंने पत्रकारों को दिए एक प्रीतिभोज में कहा :

अगर मैं अपना परिचय आपके समक्ष दूं तो कुछ अनुचित न होगा। मैं वह व्यक्ति हूँ जो जैकलीन कैंनेडी के साथ पेरिस आया हूँ।

और जब 1962 में अपनी भारत-पाकिस्तान-यात्रा के दौरान श्रीमती कैंनेडी हाथी पर बैठीं तो उन्होंने कैली-फोर्निया विश्वविद्यालय के छात्रों से कहा, जिन्हें उन्होंने ‘साथी छात्रों’ के संवोधन से सम्बोधित किया था :

यह सप्ताह विश्व-भर में महत्वपूर्ण घटनाओं का सप्ताह रहा है। अलजीरिया में सुदीर्घ एवं कष्टप्रद संघर्ष समाप्त हो गया है। जेनेवा में परमाणु शक्तियां तथा तटस्थ राष्ट्र मिलकर, शस्त्रास्त्र-प्रतियोगिता की समस्या तथा सोवियत संघ के साथ हमारे सम्बन्धों की समस्या का हल खोजने में लगे रहे। कांग्रेस ने एक व्यापार विधेयक की सुनवाई शुरू की जो व्यापार विधेयक से कहीं अधिक महत्व वाला है। यह अटलांटिक राष्ट्रकुल को अधिक शक्तिशाली बनाने तथा निकट लाने का एक अवसर है। और मेरी पत्नी पहली बार और शायद अन्तिम बार हाथी पर बैठीं।

इस प्रकार व्यक्त विचारों को अक्सर उद्धृत किया जाता और कुछ लोगों ने तो श्री कैंनेडी की सूक्तियों का संग्रह आरम्भ कर दिया था। इस प्रकार के प्रत्येक संग्रह

में उनके ये विचार अवश्य संकलित हैं जो उन्होंने उत्तरी कैरोलीना यूनीवर्सिटी के छात्रों के समक्ष 1961 में व्यक्त किए थे।

आ

पमें से जो लोग मेरे राजनीतिक जीवन के व्यवसाय को हीन दृष्टि से देखते हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि इसने मुझे चौदह वर्षों के अन्दर ही संयुक्त राज्य अमरीका की नौसेना के लैफ्टीनैण्ट कमांडर की स्थिति से उठाकर प्रधान सेनापति बना दिया है, जबकि मेरी टैक्नीकल योग्यता बहुत नगण्य है।

उनका दूसरा लोकप्रिय वक्तव्य वह है जो उन्होंने 1961 की शरद् ऋतु में न्यूयार्क में राष्ट्रीय निर्माता संघ के सदस्यों के समक्ष भाषण करते हुए दिया था। अपने धनी पिता के अधिक अनुदार विश्वासों तथा अपने उदार विचारों की चर्चा करते हुए आपने इन उद्योग-प्रबंधकों से कहा था :

मैं मानता हूँ कि आज के इस प्रीतिभोज में सम्मिलित लोगों में से अधिकांश ने गत चुनाव में मेरे विरोधी का समर्थन किया था, केवल चन्द लोगों ने इस धारणा के कारण मेरा साथ दिया था कि मैं अपने पिता का पुत्र हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि एक वर्ष पहले व्यक्त की गई आपकी ये आशंकापूर्ण भावनाएं कुछ कम हो गई होंगी कि अगर मैं चुन लिया गया तो समूची व्यवसाय-प्रणाली अनिवार्यतः भंग हो जाएगी।

लेकिन उद्देश्य के प्रति लगन, उत्तरदायित्व की भावना तथा जब बदनामी आवे तो उसके उत्तरदायित्व से मुंह चुराने से इन्कार करना, ये कुछ ऐसी बातें हैं जो कैंनेडी की अन्य बातें भूल जाने के बाद भी लम्बे अरसे तक याद रहेंगी। तब यह लिखा जाएगा कि उन्होंने सामान्य जनता, अपने राष्ट्र तथा समस्त विश्व का और राष्ट्रपति पद का पूरी मर्यादा के साथ ख्याल रखा।

27 अप्रैल, 1961 को आपने कांग्रेस के समक्ष भाषण करते हुए कहा :

कोई भी राष्ट्रपति अपनी सरकार के किसी व्यक्ति के उच्च-स्तर के आचरण से तनिक भी विरत होने को न क्षमा कर सकता है

और न नज़रंदाज। क्योंकि उसकी सख्ती तथा उसकी लगन से ही अंततः संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार में जनता का विश्वास बनाए रखना संभव होता है।

1959 में उन्होंने इण्टरव्यू लेनेवाले एक व्यक्ति के प्रश्न के उत्तर में कहा था :

मैं कितना आगे तक जाऊंगा ? मेरा विश्वास है कि विरोधों तथा संतुलनों से युक्त हमारी शासन-प्रणाली तथा हमारी समस्त संविधान-व्यवस्था एक सशक्त राष्ट्रपति के होने पर ही भली प्रकार चल सकती है। हमारा संविधान बहुत-बहुत बुद्धिमत्तापूर्वक बनाया गया है। उसमें राष्ट्रपति को उतने ही अधिकार लेने की अनुमति है, जितने अधिकार वह भली भाँति प्रयोग कर सकता है। यदि वह विफल होता है तो यह उसका दोष है, राजव्यवस्था का नहीं। मैं समझता हूँ कि राष्ट्रपति को अपना कार्य करने के लिए आवश्यक अधिकार प्राप्त कर ही लेने चाहिए जब तक कि उसे उन अधिकारों को लेने के लिए संविधान ने स्पष्टतः रोक न दिया हो।

तदनुरूप वे एक सशक्त राष्ट्रपति थे। यह सशक्त राष्ट्रपति का ही काम था कि सोवियत संघ को युद्ध के कगार से लौटा दिया। यह सशक्त राष्ट्रपति का ही काम था कि संयुक्त राज्य अमरीका के इस्पात-उद्योग को 1962-में कंहर दिया कि इस्पात का मूल्य बढ़ाने की उनकी योजना अनुचित है तथा सार्वजनिक हितों का उत्तरदायित्वहीन उल्लंघन है।

एक बार एक किशोर ने उनसे पूछा कि वे कैसे द्वितीय महायुद्ध के हीरो बन गए। जवाब था : “वह कुछ मेरी अपनी इच्छा से थोड़े ही हुआ। उन्होंने मेरी नाव डुबा दी थी।” उत्तर उनकी विनम्रता का ही द्योतक था—उन्हें अपने युद्धकालीन शौर्यकार्यों की चर्चा करना नापसंद था—लेकिन नौसेना के उनके अनुभव उनके व्यक्तित्व पर बहुत अच्छा प्रकाश डालते हैं।

जॉन कैंनेडी 1942 में एक जूनियर अफसर बने थे, किन्तु उससे पहले उन्हें फुटबाल में चोटिल कमर को ठीक करने के लिए पांच महीने तक कष्टप्रद व्यायाम करना पड़ा था। अगर वे यह व्यायाम न करते तो उन्हें सदैव सेना से



10. राष्ट्रपति एक मानव के रूप में

बाहर ही रहना पड़ता। जब उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका में ही तैनात किया गया था तो उन्होंने इसका घोर विरोध किया और उन्हें एक तारपीडो नौका का कमांडर बनाकर प्रशांत सागर में भेज दिया गया। 1943 में, एक रात को शत्रु के एक विध्वंसक जहाज ने इस छोटे-से पोत के दो टुकड़े कर दिए। चालक दल में से दो को प्राणों से हाथ धोना पड़ा तथा लैफ्टिनेंट कैनेडी को कौकपिट में धकेल दिया गया तथा उनकी कमर में नये सिरे से घाव लग गए। फिर भी वे तीन मील (लगभग पांच किलोमीटर) दूर एक द्वीप तक तैरकर बच निकले। लेकिन तैरते समय भी वे नौ अवशिष्ट चालकों को मार्ग दिखाते तथा बुरी तरह जले दसवें साथी को शार्क मछलियों से युक्त समुद्री जल में सहारा देते रहे। इस बुरी तरह जले हुए चालक साथी की लाइफ जैकेट की रस्सी वे दांतों से पकड़े हुए तैरे थे। इनके चालक दल के साथी उस द्वीप तक पहुंचने से पहले बारह घंटे तक नौका के अवशेषों से ही चिपके रहे।

संकटपूर्ण छः दिनों के बाद जब रक्षादल उन्हें बचाकर निकालने पहुंचा तो युवा कैनेडी को भोजन दिया गया। उन्होंने कहा : “नहीं, धन्यवाद, मैंने अभी थोड़ी देर पहले एक नारियल लिया था।” नौसेना ने उन्हें ‘साहस, सहनशीलता तथा श्रेष्ठ नेतृत्व के लिए, जिसने अनेक लोगों के जीवन की रक्षा की’ पदक से विभूषित किया। दो वर्ष बाद वे नौसेना से पदोन्नति पाकर, पीठ में दर्द तथा दिल में उस युद्ध के लिए घोर घृणा लेकर निकले, जिसने न केवल उनको घायल किया वरन् यूरोप में 1944 में उनके बड़े भाई जीसेफ, जूनियर के प्राणों की बलि ले ली थी।

एक वर्ष बाद जॉन कैनेडी ने कुछ समय तक एक समाचारपत्र के संवाददाता रहने के पश्चात् राजनीति में प्रवेश किया। संवाददाता के रूप में आपने सानफ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना तथा पोत्सडम सम्मेलन के समाचार भेजे। राजनीति में उनका प्रवेश करना अपने भाई ‘जो’ की स्मृति में था जिन्हें उन्होंने अपना आदर्श मान लिया था और जो राजनीतिक जीवन में प्रवेश की योजना बनाए बैठे थे। जॉन ने बाद में कहा : “अगर मेरे भाई की मृत्यु नहीं होती तो मैं शायद अध्यापन-कार्य में लगा होता।” लेकिन उनको कानून में भी तो रुचि थी।

प्रतिनिधि सभा के लिए चुने जाने के बाद आप 1947 से 1953 तक उसके सदस्य रहे। इसके बाद वे सेनेटर बने। एक वर्ष बाद, यद्यपि वे नवविवाहित थे, उन्हें एक

अन्य परीक्षाकाल से गुजरना पड़ा जो 1943 की परीक्षा के समान ही गुरुगंभीर थी। उनकी कमर की हालत बराबर खराब होती जा रही थी। एक डाक्टर की इस चेतावनी के बाद भी कि आपरेशन कराना बहुत खतरनाक है, उन्होंने दो जंटिल आपरेशन कराए जिनमें खतरा था कि वे पंगु हो जाते या मर भी जाते।

बाद के संदेह-भरे और स्वास्थ्य-लाभ के महीनों में उन्होंने अपनी दुरवस्था पर खेद प्रकट करते हुए समय नहीं बिताया वरन् ‘प्रोफाइल्स इन करेज’ नामक पुस्तक लिखकर बिताया। इस पुस्तक में साहस एवं राजनीति सम्बन्धी लेखों का संकलन है। इस पुस्तक पर उनको ‘पुलिट्जर’ पुरस्कार मिला जो संयुक्त राज्य अमरीका में सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है।

‘प्रोफाइल्स इन करेज’ वास्तव में प्रमुख अमरीकी सेनेटरों के जीवन के सूक्ष्म अध्ययन का परिणाम थी—यह ऐसा अध्ययन था जिसने उनके अन्दर आश्चर्यजनक विशाल ज्ञान-भंडार भर दिया और जिसके कारण उनके लिए किसी भी विषय पर भाषण करना संभव हो सका।

व्हाइट हाउस में प्रवेश करने से पूर्व के दिनों के विषय में जब उनकी पत्नी उनके संस्मरण सुनाती हैं तो कहती हैं कि वे प्रायः किसी न किसी पुस्तक में डूबे रहते जो अधिकतर इतिहास की होती या किसीकी आत्मकथा। पढ़ने की सामान्य गति से असंतुष्ट रहने के कारण उन्होंने, जब वे कांग्रेस के सदस्य थे, ‘तेज़ी से पढ़ने’ का कोर्स लिया। इसके कारण वे प्रति मिनट में बारह सौ शब्द पढ़ने तथा समझने की क्षमता अर्जित कर सके।

कैनेडी के हर भाषण में कोई भी एक विचित्र किन्तु अल्पज्ञात तथ्य देखा जा सकता था, जैसे ‘संकट’ शब्द को जब चीनी भाषा में लिखें तो यह दो अक्षराकृतियों से बनता है जिनमें से एक खतरे का और दूसरा अवसर का बोधक होता है।

लेकिन जॉन कैनेडी की ज्ञानप्राप्ति का स्रोत मात्र पुस्तकें नहीं। यद्यपि उन्हें कमर के कष्ट ने सदैव पीड़ित रखा, तथापि जब भी संभव हुआ वे यात्रा पर निकल पड़ते थे। इन यात्राओं से उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका तथा विदेशों की आंखों-देखी स्थितियों को हृदयंगम किया था।

उनकी यह आदत, जिसको उन्होंने कांग्रेस के सदस्य रहने तथा व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति बनने के बाद भी बनाए रखा, विश्वविद्यालय के दिनों से ही बन गई थी।

लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स में थोड़े दिन अध्ययन करने के दौरान आपने यूरोप का संक्षिप्त भ्रमण किया था, किन्तु 1938-39 शरद् ऋतु में आप संसार के संकटपूर्ण क्षेत्रों का भ्रमण करने निकले जिनका आप उन दिनों अध्ययन कर रहे थे। आपने फ्रांस, पोलैण्ड, सोवियत संघ, तथा निकट-पूर्व के देशों का दौरा किया और वापसी में बाल्कन, बर्लिन तथा लंदन होते हुए लौटे थे। उन्होंने सर्वत्र सरकारी अधिकारियों से बातचीत की तथा सदैव अपने पिता जोसेफ कैनेडी, सीनियर को विस्तारपूर्वक उसकी रिपोर्ट भेजते थे जो उस समय ब्रिटेन में संयुक्त राज्य अमरीका के राजदूत थे।

इस यात्रा के समय उन्होंने जो कुछ देखा-समझा, उसे अपनी पहली पुस्तक में लिखा है, जिसमें उन्होंने द्वितीय महायुद्ध छिड़ने की ओर उन्मुख करनेवाली सन् तीस के बाद की दुःखद घटनाओं पर प्रकाश डाला है। पुस्तक का शीर्षक है 'व्हाई इंग्लैण्ड स्लेप्ट' (इंग्लैण्ड क्यों सोया रहा)। आपने इसकी भूमिका में लिखा: "दो वर्ष पहले विंस्टन चर्चिल ने एक पुस्तक प्रकाशित की थी 'व्हाइल इंग्लैण्ड स्लेप्ट' (जब इंग्लैण्ड सो रहा था)। इस पुस्तक में यह बताने का प्रयास किया गया है कि इंग्लैण्ड क्यों सोया रहा।"

यह पुस्तक वास्तव में इससे कहीं अधिक थी। इसमें अन्य बातों के अलावा सोवियत संघ के सन् तीस के बाद के निरस्त्रीकरण प्रस्तावों को केवल प्रचार का साधन बताया गया है। यह पुस्तक 1940 में हार्वर्ड से प्रकाशित हुई, जिस साल वे वहां से स्नातक बने थे। यह पुस्तक शीघ्र ही संयुक्त राज्य अमरीका तथा इंग्लैण्ड में सर्वाधिक बिक्री वाली पुस्तक बन गई थी। यह कैनेडी की भावी लेखनशैली तथा राष्ट्रपति-काल में अपनाए गए दृष्टिकोण के पीछे की तर्क-प्रणाली की एक अच्छी निर्देशिका है। उदाहरण के तौर पर:

एकतंत्रीय शासन-व्यवस्था से टक्कर लेने में प्रजातंत्र की अनेक खामियां हैं। प्रजातन्त्र सरकार की श्रेष्ठ प्रणाली है, क्योंकि यह मानव के एक विवेकमय प्राणी के रूप में समादर पर आधारित है। इसलिए दीर्घकालीन दृष्टि से प्रजातन्त्र में अनेक कमजोरियां हैं। जब इसका सामना एक ऐसी शासन-व्यवस्था से होता है जो स्थायित्व की परवाह नहीं करती, जो प्रमुखतः युद्ध के लिए बनाई जाती है, तो प्रजातन्त्र, जो मुख्यतः शांतिकाल की चीज है, घाटे में रहती है। और अगर प्रजातन्त्र को अपनी अस्तित्व-रक्षा की आशा है तो

उसे अपनी विशेषताओं की रक्षा करनी ही पड़ेगी।

पन्द्रह वर्ष बाद लिखी 'प्रोफाइल्स इन करेज' पुस्तक में आपने अपने इस आरंभिक दर्शन की और आगे व्याख्या की थी:

...आगे आनेवाले दिनों में साहसी व्यक्ति ही ऐसे कठोर तथा अलोकप्रिय निर्णय कर सकेगा जो एक शक्तिशाली शत्रु के साथ हुए संघर्ष में अपनी अस्तित्व-रक्षा के लिए आवश्यक होंगे। हमारे शत्रु-पक्ष के नेता ऐसे हैं जिन्हें अपना मार्ग लोकप्रिय होने न होने की तनिक भी चिन्ता नहीं, जिन्हें अपने देश के लोकमत की जरा भी परवाह करने की जरूरत नहीं, जिन्हें चुनाव में जनता द्वारा प्रतिशोध लेने पर अथवा जिन्हें भविष्य की शान के लिए नागरिकों की वर्तमान हंसी छीन लेने की जरा भी फिक्र नहीं है। और कोई अत्यन्त साहसी व्यक्ति ही व्यक्तिवाद तथा मत-वैभिन्य की उस भावना को जीवित रख सकेगा जिसने इस राष्ट्र को जन्म दिया, बच्चे की भांति जिसका पोषण किया तथा प्रौढ़ता आने पर गम्भीरतम परीक्षाकालों से निकालकर ले जा सकी है।

उनके भाषणों तथा लेखादि में बार-बार साहस की बात दुहराई गई थी। एक समाचारपत्र समुदाय के लिए 'अमरीकन्स इन ऐक्शन' शीर्षक लेखमाला की भूमिका में आपने अप्रैल, 1962 में लिखा था:

अज्ञात मार्ग पर चलने के लिए चरित्र की अनेक विशेषताओं का होना आवश्यक है। इसके लिए साहस की आवश्यकता है। इसके लिए प्रतिकूल स्थिति तथा खतरों में धैर्य की आवश्यकता है। इसके लिए नई सम्भावनाओं को समझने के लिए कल्पनाशक्ति चाहिए। इसके लिए दृढ़ मनोबल की आवश्यकता होती है जिससे निराशाओं के धुएं से निकल सकें। इसके लिए सुविज्ञ तथा तथ्यपूर्ण जानकारी की आवश्यकता है।

जॉन कैनेडी में वे सारे गुण मौजूद थे और प्रभूत मात्रा में। उनका स्वयं का जीवन साहस की लम्बी कहानी थी। उनके बारे में यह कभी नहीं कहा जा सकता कि 'वे हिचकिचाए थे।' क्योंकि वे देश के सर्वोच्च शासक ही नहीं थे, वे संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति भी थे।





बिगुल

बज रहा है

एक चिरपरिचित स्वर, एक ऐसे विक्षिप्त तथा कटुता-भरे व्यक्ति के अशोभन कार्य से, जिसने विनाश के द्वारा अपनी इच्छापूर्ति का मार्ग अपनाया, सदा-सदा के लिए मौन हो गया, एक-दम रुक गया। आकस्मिकता से भौचक्का विश्व, पहले तो इसपर विश्वास न कर सकने के कारण जैकलीन कैनेडी की “अरे, नहीं !” की कातर चीख के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सका।

वर्षों पहले जब जॉन कैनेडी को विदित हुआ था कि उनकी वहन कैथलीन की वायुयान-दुर्घटना में मृत्यु हो गई है, तो उन्होंने कहा था : “आपको या आपके परिवार के किसी सदस्य को, जो किसी तरह दुःखग्रस्त हो, जिसका स्वास्थ्य खराब हो या जिसे असाध्य रोग हो, यदि उसे कुछ हो जाए तो वह एक बात है। लेकिन अगर कोई अपने जीवन के चरमोत्कर्ष पर हो और सहमा उसकी जीवन-डोरी कट जाए—यह एक असह्य धक्का होता है।” अब जब जॉन कैनेडी की जीवन-डोरी अकस्मात् कट गई है, जब वे अपनी गौरव-गरिमा के चरमोत्कर्ष पर थे, तो उनके कुटुम्बी जन, उनका मानव-परिवार इस आकस्मिक धक्के तथा अपूर्व क्षति से ग्रस्त हैं।

विश्व-भर में राष्ट्रध्वज झुका दिए गए। पूजागृह शोक-संतप्तों से भर गए (जो उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना कर रहे थे)।

नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में लोग एक-दूसरे से यही कहते थे : “यह सत्य नहीं हो सकता।” मेलबोर्न के एक समाचारपत्र का शीर्षक था : “हम सभी शोक-संतप्त हैं।” लन्दन में बिगवेन प्रति मिनट बजता

रहा और यह कम एक घंटे तक चला। यह सामान्यतः राजपरिवार में किसीकी मृत्यु होने पर ही होता है। पश्चिमी बर्लिन में पचीस हजार छात्रों ने सिटी हाल तक मशालों का जुलूस निकाला, जहां मेयर विली ब्राण्ड ने उद्गार प्रकट करते हुए कहा : “मैं जानता हूं कि आज रात कितने लोग किस प्रकार रो रहे हैं। हम बर्लिनवासी और भी निर्धन हो गए हैं। हम सबने एक सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति खो दिया।” बर्लिनवासियों ने सिटी हाल स्क्वेयर का नाम ‘जॉन एफ० कैनेडी प्लाट’ रख दिया।

इक्वेडोर में एक क्विटो जैनीटर ने जिसने रेडियो पर यह समाचार सुन लिया था, अपना अखबार पढ़ने से इन्कार कर दिया, क्योंकि “यह समाचार इतना दुःखद था कि इसे दुबारा पढ़ा नहीं जा सकता था।” हांगकांग में कम्युनिस्ट चीन से आए शरणार्थियों ने उस व्यक्ति की स्मृति में ‘जोसस्टिके’ जलाई जिसने उनके अनेक बन्धुओं के लिए संयुक्त राज्य अमरीका जाना संभव बनाया था। टोकियो में गिजा के सहारे स्त्रियां लोकलाज खोकर रोई थीं। पेरिस में मोटर-चालक इस दुःखान्त घटना की चर्चा करने के लिए गाड़ियां रोककर बाहर आ गए थे। सर्वत्र अमरीकी दूतावासों में शोक मनानेवालों की न दूटनेवाली धारा प्रवाहित हो रही थी। वेस्त में तो सबसे पहले श्री कैनेडी के नाम पर सड़क का नाम रखा गया।

लाइबेरिया में राष्ट्रपति विलियम टवर्मेन ने कहा था : “दुःख का घट खोल दिया गया है, जिसे विश्व-भर के मित्रों के आंशुओं से भरा जा रहा है।” कांगो में पूर्वी कटंगा के प्रधान एडूअर्ड वुलंडवे ने कहा था : “राष्ट्रपति कैनेडी के निधन पर हमारे देश के छोटे से छोटे गांव में भी एक ऐसे व्यक्ति के लिए शोक मनाया जाएगा जिसने अद्वैतों की सुधि ली थी और उनके लिए कार्य किया। लंका में प्रधानमन्त्री श्रीमती भण्डारनायके ने, जो स्वयं एक हत्यारे की गोली के कारण वैधव्यदुःख भोग रही हैं, परमाणु परीक्षण प्रतिबन्ध संधि के एक प्रमुख प्रणेता के निधन पर अपने राष्ट्र का शोक व्यक्त करते हुए इस संधि को “हाल के वर्षों में विश्व-शान्ति के लिए सर्वाधिक

राष्ट्रपति की विधवा व बच्चे—
जॉन तथा कैरोलीन



नहाइट हाउस से सेंट मॅथ्यूज कॅथेड्रल तक जॉन फिट्जरेल्ड
और शुआला प२८।



कनेडी की शवयात्रा में बानवे राष्ट्रों के नेता शामिल हुए।

रुशील म्हा

महत्त्वपूर्ण योगदान" बताया था।

कोलम्बिया में राष्ट्रपति गिलरमो लियोन वालेन्सिया ने घोषित किया था : "उनकी मृत्यु ने समस्त मानव-समाज को दुःख-सागर में डुबो दिया।" इटली में समाजवादी नेता पीट्रोनेनी ने प्रधानमंत्री एलडो मोरो के साथ अपनी भेंट अधूरी छोड़कर, अश्रुपूरित नेत्रों से कहा था : "समूचे विश्व के लिए जो दुःखद घटना हो गई है, उसके देखते हुए हमारी ये बातें बहुत छोटी चीजें हैं।"

मास्को में प्रधानमंत्री ख्रुश्चोव स्वयं अमरीकी दूतावास गए और अमरीकी राजदूत से जॉन कॅनेडी के प्रति आदरप्रकट करने तथा श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मिले। पूर्वी जर्मनी तक में कम्युनिस्ट प्रधान वाल्टर उलब्राइख ने कहा : "विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाली जनता तथा राज्यों के शान्तिपूर्वक साथ-साथ रहने के लिए उनके ईमानदारीपूर्ण प्रयासों की हम सराहना करते हैं।" केवल पीपिंग तथा तिराना से ही इन सबसे भिन्न मत व्यक्त किए गए।

इससे पहले कभी एक राष्ट्र के नेता के निधन पर विश्व-भर में इतना अधिक प्रभाव नहीं पड़ा था। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय विचित्रता थी जिसका रहस्य परराष्ट्रमन्त्री रस्क ने इन शब्दों में प्रकट किया था : "राष्ट्रपति कॅनेडी ने अपने युवकत्व और ताजगी एवं प्राणवत्ता तथा उद्देश्यपरकता के कारण अपने तथा अनेक देशों की सामान्य जनता के साथ इतने वैयक्तिक सम्बन्ध स्थापित कर लिए थे जिन्हें हम नहीं समझ पाए थे।"

डल्लास शहर से, जहां संयुक्त राज्य अमरीका के पैंतीसवें राष्ट्रपति चमचमानी सुनहरी धूप वाले दिन मारे गए थे, उनके शव को उनकी विधवा पत्नी तथा उनके उत्तराधिकारी लिंडन जॉनसन वाशिंगटन वापस लाए। वहां वह व्हाइट हाउस तथा फिर कैपीटोल में लाया गया जिसे जॉन कॅनेडी ने कांग्रेस को दिए अपने प्रथम संदेश में 'मेरा प्राचीन घर' कहा था। वे "जहां से मैं आया हूँ" वहीं चिरनिद्रा में निमग्न राजकीय शोकप्रदर्शन के लिए लिटाए गए थे। उस अंधेरी व ठण्डी रात में हजारों अमरीकियों ने अपने दिलवर को अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रतीक्षा की।

और वाशिंगटन में जैट विमानों द्वारा विश्व-भर के नेता स्वर्गीय राष्ट्रपति को हृदयद्रावक अभूतपूर्व श्रद्धासुमन अर्पित करने पहुंचे। फ्रांस के राष्ट्रपति चार्ल्स डि गाल, जिनके 'स्पष्ट शब्दों' की जॉन कॅनेडी ने प्रशंसा की थी, उन सब राजनेताओं की ओर से परम सादगी के साथ बोले कि मुझे मेरे देश के 'सामान्य लोगों ने' भेजा है।

सोमवार, 25 नवम्बर को, मृत्यु के तीन दिन बाद जॉन कॅनेडी को पर्वतीय हरीतिमा के मध्य स्थित राष्ट्र के सैनिक नायकों के चिर-विश्रामस्थल अलिगटन राष्ट्रीय कब्रस्तान में, जो वाशिंगटन के उस पार पोटोमैक नदी के पास स्थित है, चिरविश्राम के लिए घरित्री माता के अंक में लिटा दिया गया। इस स्थान पर सदा

प्रज्वलनशील ज्योति स्थापित कर दी गई जिसे उनकी विधवा ने ही प्रज्वलित किया। उनकी विधवा पत्नी ने ही समाधि का यह स्थान चुना था, क्योंकि यह उस नगर के सामने पड़ता था जिसे उनके पति प्यार किया करते थे, क्योंकि उसके कुछ महीने पहले ही श्री कॅनेडी वहां गए थे और कहा था : "काश में यहां सदा के लिए ठहर पाता!" उसके बाद श्री कॅनेडी के दो वच्चों के शवों को भी, जो जनमते ही या जन्म के कुछ देर बाद मर गए थे, उनके पिता के समीप ही समाधिस्थ कर दिया गया।

शहीद राष्ट्रपति के शव को जब कैपीटोल से व्हाइट हाउस, वहां से समीपवर्ती मैथ्यूज कैथेड्रल, जहां वे प्रायः उपासना किया करते थे, और फिर वहां से कब्रस्तान तक दो मील (करीब तीन किलोमीटर) लम्बी यात्रा के बाद ले जाया गया, तो इस शवयात्रा को वाशिंगटन के दस लाख से भी ऊपर शोक-संतप्त लोगों ने देखा। इनके अलावा लगभग दस करोड़ अमरीकियों ने इस यात्रा का दृश्य टेलीविजन पर देखा।

जैकलीन कॅनेडी ऊंचा सिर किए घोड़ों से खींची जा रही तोपखाने की गाड़ी के पीछे चल रही थीं, जिसमें उनके पति का शव व्हाइट हाउस से कैथेड्रल लाया गया था, जहां मरणोपरांत धार्मिक रस्म अदा हुई। उनके पीछे कॅनेडी के भाई राबर्ट तथा एडवर्ड चल रहे थे। उनके पीछे एक सम्राट, एक राजा, एक रानी, राजकुमार, राजकुमारियां, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री तथा जनरल और बानवे देशों के अन्य गण्यमान्य व्यक्ति चल रहे थे। वाशिंगटन में अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों के सर्वोच्च प्रतिनिधियों का ऐसा जमघट पहले कभी नहीं देखा गया था।

जब तक वे कैथेड्रल से चली नहीं गईं, तब तक इस विधवा युवती ने, जिसे समस्त विश्व ने अपने हृदय में स्थान दे रखा था, अपना दुःख किसीको न देखने दिया था। वे रो पड़ीं, लेकिन उनका अवगुंठन उन आंसुओं को ढक न सका। कैरोलीन कॅनेडी ने, जो दो दिन बाद छः वर्ष की होनेवाली थी, अपने हाथ अपनी माता के दाहिने हाथ पर उसे सांत्वना देने के लिए रखे, लेकिन उसे वे हाथ स्वयं अपने आंसू पोंछने के लिए ही हटाने पड़े।

कि

न्तु सबसे अधिक हृदय-विदारक क्षण तब आया जब जॉन फिट्जरेल्ड कॅनेडी, जूनियर ने, जो उस दिन तक यह नहीं समझ पाया था कि यह सब धमचड़ाका किसलिए है, अपनी मां से हाथ छुड़ाकर अपने पिता की शव-पेटी को प्रणाम किया। वह बालक उसी दिन पूरे तीन वर्ष का हुआ था।

जॉन कॅनेडी को समाधिस्थ करते समय इक्कीस तोपों की सलामी दी गई तथा टैपों की ध्वनि गुंजित होती रही। वे ध्वनियां तथा उनकी आवाजें "यह मत पूछो कि तुम्हारा देश तुम्हारे लिए क्या कर

सकता है, वरन् यह पूछो कि तुम अपने देश के लिए क्या कर सकते हो" कैनेडी-युग की ध्वनि के रूप में सदैव स्मरण की जाएंगी।

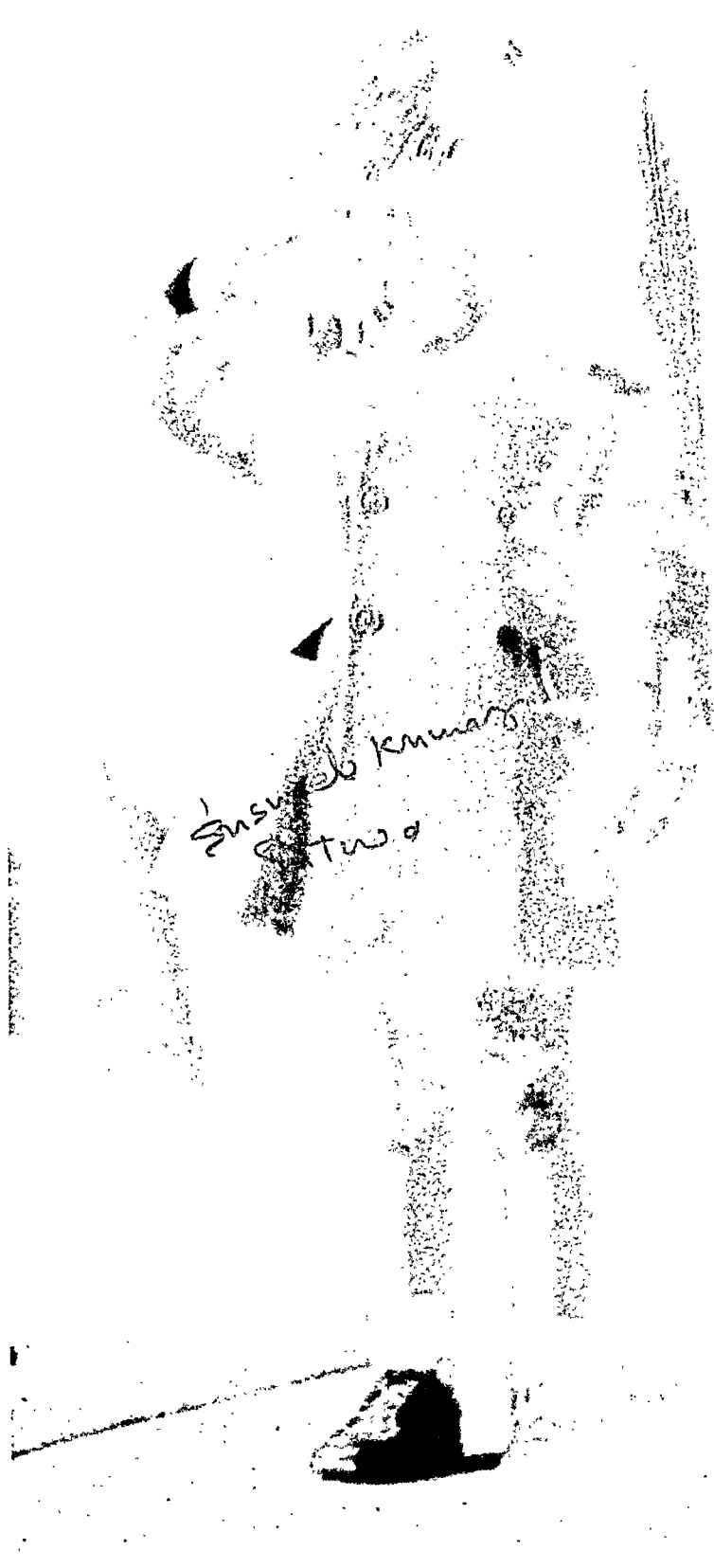
इसके साथ ही नये राष्ट्रपति के रूप में लिंडन जॉनसन की दुःखभरी आवाज़ याद की जाएगी जो आगामी दिन कांग्रेस के अधिवेशन में किए भाषण के समय सुनी गई थी : "मेरे पास जो कुछ है, वह मैंने सब कुछ संहर्ष दे दिया होता, बशर्ते आज मुझे यहां खड़े होने का दिन न देखना पड़ता। हमारे युग का महानतम नेता, हमारे युग के सर्वाधिक मूर्खतापूर्ण कार्य से उठ गया। (लेकिन) जॉन फिट्-जरेल्ड कैनेडी... समस्त मानवता के दिमागों तथा स्मृतियों में सदैव अमर रहेंगे।"

इसके साथ वह कुशलता भी स्मरणीय रहेगी जिससे श्री जॉनसन ने शासन की बागडोर संभाली, जिस प्रकार अधिकार के साथ उन्होंने अमरीकी नीतियों—वैदेशिक तथा घरेलू नीतियों को दुहराया। अब तक याद नहीं पड़ता कि कभी संविधान में जिस शांतिपूर्वक हस्तांतरण की बात कही गई है, उतनी शांतिपूर्वक कभी वास्तविक सत्ता हस्तांतरित हुई हो।

मैसाच्यूसेट्स के निवासी की इसके अलावा और क्या आकांक्षा हो सकती थी! आखिरकार उन्होंने स्वयं कहा था : "लिंडन वास्तव में अपने देश की उतनी ही चिन्ता करते हैं जितनी मैं चाहूंगा कि एक राष्ट्रपति करे।"

ईश्वर ने जॉन कैनेडी को चौतीस महीने और दो दिन ही राष्ट्रपति बनने के लिए दिए थे। फिर भी यह एक महत्त्वपूर्ण युग था और इतिहास इसे इस रूप में ही याद रखेगा। उनकी विरासत है शांति की वकालत करनेवाले, कानून तथा स्वतंत्र निर्णय वाले विश्व में प्रगति, और इनके द्वारा वे मानवता के स्मृति-पटल पर सदैव अंकित रहेंगे।

तीन वर्षों के बच्चे का
अपने पिता को अंतिम प्रणाम



लिण्डन बी० जॉनसन

राष्ट्रपति, संयुक्त राज्य अमरीका

शु

क्रवार, 22 नवम्बर, 1963 को मेरे राष्ट्र ने एक महान नेता खो दिया और विश्व-शान्ति ने एक महान योद्धा।

लेकिन जॉन फिट्जरेल्ड कॅनेडी मानवता के लिए एक नई आशा लेकर उदित हुए थे—एक ऐसी आशा, जिसे प्रत्येक महाद्वीप के नये नेताओं की समूची पीढ़ी हृदय में बसा चुकी थी और हमें इस दुःख के कारण उस आशा से दूर नहीं हो जाना है। वे अतीत से कभी नहीं लड़ें थे, वे सदैव भविष्य को देखा करते थे। और अब हमारा काम एक ऐसे भविष्य के निर्माण में लग जाना है, जिसमें इतनी दृढ़ता के साथ उनका विश्वास जमा था।

हृत्पारे की वह गोली, जिसने उनका जीवन ले लिया, उनके राष्ट्र का उद्देश्य नहीं बदल सकती। हम पहले की अपेक्षा और भी दृढ़ता के साथ घृणा और हिंसा के विरोधी हो गए हैं, चाहे वह हमारे अपने देश में हो चाहे विश्व में कहीं भी हो। हम पहले की अपेक्षा अब इस बात के और अधिक पक्के समर्थक हो गए हैं कि हमारे देश ही में नहीं, समूचे विश्व में कानून का शासन हो। अपने देश तथा संसार-भर में मानव के अधिकारों—प्रत्येक वर्ण के लोगों—में हमारी आस्था पहले से भी अधिक बढ़ गई है और हम संयुक्त राष्ट्र-संघ का ऐसे सर्वोत्तम साधन के रूप में पहले की अपेक्षा अधिक

समर्थन करते हैं जो संसार में शान्ति-स्थापना तथा मानवता की कल्याण-कामना के लिए कभी बना हो।

राष्ट्रपति कॅनेडी, मुझे विश्वास है कि, इस बात को ही अपना सर्वोत्तम स्मारक समझेंगे कि तीन वर्षों के उनके राष्ट्रपति-काल में विश्व कुछ अधिक सुरक्षित हो गया और हमारे आगे का रास्ता जरा ज्यादा चमकने लगा है। शान्ति के लिए इस नई आशा की रक्षा तथा उसके विस्तार के लिए मैं अपने देश तथा उसकी सरकार को वचन-बद्ध करता हूँ।

मानव की युग-युग की आशाएं हमारा लक्ष्य हैं—कि यह संसार ईश्वर की कृपा से ऐसा बन सकेगा, जो मत-वैभिन्य के लिए सुरक्षित हो सके, जो संघर्ष से मुक्त हो तथा हमारे वर्चस्वों तथा आने-वाली सभी पीढ़ियों के लिए रहने की अच्छी जगह बन सके। और इसीलिए सभी व्यक्ति तथा सभी राष्ट्र जो शान्ति चाहते हैं तथा युद्ध से घृणा करते हैं और भूख एवं बीमारी और अज्ञान तथा दुःखों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखने के लिए तैयार हैं, वे संयुक्त राज्य अमरीका को अपने पक्ष में पाएंगे जो उनके साथ चलने को तैयार है और उनके साथ कदम-कदम मिलाकर रास्ते-भर चलने को प्रस्तुत है।

—व्हाइट हाउस

जॉन फिट्जरेल्ड कॅनेडी और लिण्डन बेन्स जॉनसन



Acknowledgements

Grateful acknowledgement is made to the following:

Chapter V: The Council on Foreign Relations for permission to reprint excerpts from an article by John F. Kennedy entitled "A Democrat Looks at Foreign Policy," published in the October, 1957, issue of FOREIGN AFFAIRS. Copyright 1957 by The Council on Foreign Relations, Inc.

Chapter X: Harper & Row, Publishers, for permission to quote Mr. Kennedy's comments on the Presidency and the American system of constitutional checks and balances. These were made in an interview with biographer James MacGregor Burns at Hyannis Port, Massachusetts, in mid-1959 and were included by him in JOHN KENNEDY: A POLITICAL PROFILE. Copyright 1959, 1960 by James MacGregor Burns.

The Columbia Broadcasting System for permission to quote remarks by Secretary of Defense Robert McNamara made during the 1963 television program "CBS Reports—John F. Kennedy: The View From the Cabinet."

Wilfred Funk, Inc., for permission to quote from the Kennedy book WHY ENGLAND SLEPT. Copyright 1961 by Wilfred Funk.

Harper & Row for permission to reprint an extract from PROFILES IN COURAGE. Copyright 1956 by John F. Kennedy.

The Scripps-Howard Newspapers for permission to quote from the Kennedy foreword to the series of articles entitled "Americans in Action." Copyright 1962 by Scripps-Howard.

Epilogue: The Columbia Broadcasting System for permission to quote remarks by Secretary of State Dean Rusk made during the television program "CBS Reports—John F. Kennedy: The View From the Cabinet."

Editors

Text: Wesley Pedersen

Design: Bernard Quint

Photographic Credits

Foreword: 4—Ted Spiegel.

Prologue: 6—Thomas Bethell.

Chapter II: 29—United Nations.

Chapter III: 30, 31—U.S. Air Force. 38, 39—Lloyd Shearer, courtesy HORIZON.

Chapter IV: 44—Rowland Scherman, Peace Corps.

Chapter V: 52, 53—Hella Hammid, Rapho-Guillamette.
59—Werner Bischof, Magnum.

Chapter VI: 60—Fred Ward, Black Star. 69—United Press International.

Chapter VII: 70—Yoichi R. Okamoto, USIA.

Chapter VIII: 76, 77—Mount Wilson and Palomar Observatories. 81—National Aeronautics and Space Administration.

Chapter IX: 82, 83—Wide World Photos.

Chapter X: 90—George Tames, New York Times.
96, 97—United Press International.

Epilogue: 102—Fred Ward, Black Star. 104, 105—Ollie Pfeiffer, USIA. 107—United Press International.

Page 109—United Press International.

Pages 110, 111—Wide World Photos.

